;इस्लाम के स्तम्भ

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

:लेखक

डॉक्टर अब्दुल-मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

مترجم بالهندية

इसलाम के स्तम्भ; मस्जिद ए नबवी के उपदेशों से

किताब डाउनलोड करने हेतु कोड को स्कैन करें

a-alqasim.com

इसलाम के स्तम्भ; मस्जिद ए नबवी के उपदेशों से

लेखक

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद ए नबवी शरीफ

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ जो बड़ा दयावान अत्यंत कृपालु है।

प्रस्तावना

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसार का प्रभु है, हमारे नबी मुहम्मद पर दरूद और शांति हो, तथा उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर भी।

अम्मा बाद[(1)]

निश्चित रूप से इस्लाम के पांच अरकान (स्तम्भ) हैं, यही आपनियम और सिद्धांत हैं जिन पर इस्लाम की इमारत खड़ी है। इनको शब्द, कर्म और विश्वास के रूप में साकार किए बिना किसी भी बंदे का ईमान वैध नहीं हो सकता। और ये स्तंभ हैं: शहादतेन,[(2)]नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज।

इनके इसी महत्व के कारण ही मैंने मस्जिद ए नबवी में प्रत्येक रुक्न (स्तम्भ) के विषय में अनेक ख़ुतबे (उपदेश) दिये, फिर इन्हें अलग करके एक पुस्तक में व्यवस्थित कर दिया, अत: इन ख़ुतबों की संख्या 19 तक पहुंचती है, मैंने इस पुस्तक को "**इसलाम के स्तम्भ; मस्जिद ए नबवी के उपदेशों से**" का नाम दिया है।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि इससे (लोगों को) लाभ पहुंचाए और इसे अपनी प्रसन्नता हेतु शुद्ध बना दे।

([1]) इस वाक्य को अल्लाह की प्रशंसा और नबी पाक पर सलाम के बाद मुद्दे की बात पर आने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

([2]) शहादतेन: अर्थात दो गवाहियाँ, पहली गवाही इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं, दूसरी गवाही इस बात की कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके दूत हैं।

हमारे नबी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो।

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद ए नबवी शरीफ

शहादतेन

तौहीद के मंत्र के गुण[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

सृष्टि का सम्मान अल्लाह की आज्ञाकारिता में आगे रहने और उसकी वंदना अपरिहार्य समझने में ही है, यही पैदा करने और आदेश देने का उद्देश्य है, इसी में लोक परलोक की सफलता है:

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا﴾

और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है। (अल अहज़ाब: 71)

आनंद, सुख, समय और उपहार का लुत्फ अल्लाह को जानने, एक मानने और उस पर विश्वास करने में है।

---

(1) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 06/05/1438 हिजरी को दिया गया।

सबसे अच्छा और अल्लाह को सबसे प्रिय वचन वह होता है जिसमें उसकी प्रशंसा व स्तुति की जाती है, और अल्लाह के लिए सबसे अच्छी प्रशंसा तौहीद का मंत्र है:

"ला इलाहा इल्लल्लाह"

(अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है)

एक ऐसा मंत्र जिस पर पृथ्वी और आकाश स्थापित किए गए, जिसके कारण सभी प्राणियों को बनाया गया, जिसके साथ अल्लाह ने अपनी किताबें उतारीं और अपने दूत भेजे। अल्लाह फरमाता है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ﴾

हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बंदगी करो।" (अल अंबिया: 25)

इसी वचन के माध्यम से पैग़म्बरों ने अपनी कौमों को सचेत किया, अल्लाह का पवित्र कथन है:

﴿أَنۡ أَنذِرُوٓاْ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱتَّقُونِ﴾

"सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरा ही डर रखो।" (अल नह्ल: 2)

अल्लाह ने अपने लिए इसी मंत्र की गवाही दी और इसी पर श्रेष्ठ हस्तियों को भी गवाह बनाया, अल्लाह का कथन है:

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلۡعِلۡمِ قَآئِمَۢا بِٱلۡقِسۡطِۚ
لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

अल्लाह ने न्याय को स्थापित करते हुए गवाही दी कि उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं, और फ़रिश्तों और ज्ञान रखने वालों ने भी यही गवाही दी। उस प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी के सिवा कोई पूज्य नहीं। (आल इमरान: 18)

इब्नुल-क़य्यिम ने कहा: "श्रेष्ट गवाह की ओर से, श्रेष्ठ हस्ती के लिए दी जाने वाली, यह सबसे बड़ी, सबसे महान, सबसे न्यायपूर्ण और सबसे सच्ची गवाही है।"

सारे ईश्वरीय विधान इसी मंत्र पर आधारित हैं, पूरा धर्म इसी के अधिकारों का एक रूप है, सारा प्रतिफल इसी के आधार पर है, सारा दण्ड इसे छोड़ने या इसमें लापरवाही करने पर है। ये बहुत ही ऊँचे दर्जे का मंत्र है, इसके बड़े गुण हैं, यह पूरे इस्लाम का मुख है, यही इस्लाम का प्रथम स्तंभ है, बल्कि स्तंभों का भी स्तंभ है, इसी पर इस्लाम की शानदार इमारत खड़ी है, यही एक अल्लाह पर विश्वास की जड़ और उसका सबसे बड़ा पहलू है, इसके बिना विश्वास सही नहीं और इसके बग़ैर ईमान कायम नहीं।

इसी मंत्र पर धर्म की स्थापना हुई और क़िबला खड़ा हुआ। यह अल्लाह के सभी सेवकों पर उसका शुद्ध अधिकार है, यह इस्लाम का मंत्र है, यह शांति के घर (स्वर्ग) की कुंजी है, इसी के माध्यम से लोगों को विभाजित किया गया है, अत; कुछ लोग भाग्यशाली हुए और कुछ दुर्भाग्य, कुछ स्वीकार्य और कुछ धुतकारे हुए। नबी ﷺ ने कहा: अल्लाह को चार शब्द बहुत पसंद है: सुबहान अल्लाह, अल्हमदु लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर (अल्लाह की महिमा हो, अल्लाह की स्तुति हो, कोई पूजनीय नहीं है सिवाय अल्लाह के, अल्लाह सबसे महान है।) (सही मुस्लिम)

यह पवित्रता का वचन है जिसे परमेश्वर ने अपने प्यारे बंदों के लिए चुना है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ ٱلتَّقْوَىٰ ﴾

और उन्हें परहेज़गारी (धर्मपरायणता) के वचन का पाबन्द रखा। (अल फत्ह: 26)

यह सबसे विश्वसनीय कड़ा है, जो उसको थाम लेता है वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है। अल्लाह का कथन है :

﴿فَمَن يَكْفُرْ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسْتَمْسَكَ بِٱلْعُرْوَةِ ٱلْوُثْقَىٰ
لَا ٱنفِصَامَ لَهَا ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾

जो व्यक्ति ताग़ूत[1] का इंकार करके अल्लाह पर ईमान ले आयेगा, उसने एक मज़बूत कुन्डा थाम लिया, जिसके टूटने की कोई संभावना नहीं। और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (अल बक़रह: 256)

ऊंचाई इसका गुण है और अमरता इसकी खासियत, महान अल्लाह ने कहा:

﴿وَكَلِمَةُ ٱللَّهِ هِيَ ٱلْعُلْيَاۗ﴾

और अल्लाह का वचन ही सर्वोच्च है। (अल तौबा: 40)

यह पवित्र मंत्र है जिसका अल्लाह ने अपने ग्रंथ में उदाहरण दिया है:

﴿أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي ٱلسَّمَآءِ﴾

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पेश की? अच्छी उत्तम बात एक अच्छे शुभ वृक्ष के सदृश है, जिसकी जड़ गहरी जमी हुई हो और उसकी शाखाएँ आकाश में पहुँची हुई हों। (इब्राहीम: 24)

इसी से सीना खुलता है:

﴿فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِۖ﴾

जिस व्यक्ति को अल्लाह हिदायत (सत्य पथ) तक पहुँचाने की ईच्छा कर ले उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है। (अल अनआम: 125)

इब्ने जुरैज कहते हैं: अल्लाह "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" के माध्यम से सीना खोल देता है।

इसी मंत्र से ही दिलों की सुरक्षा होती है:

﴿يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۞ إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ﴾

---

(1) अल्लाह के अतिरिक्त पूजी जाने वाली हर वस्तु।

जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद, सिवाय इसके कि कोई सुरक्षित दिल लिए हुए अल्लाह के पास आया हो। (अल शुअरा: 88-89)

इब्ने अब्बास कहते हैं : सुरक्षित हृदय आपहै जो गवाही दे कि "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है।"

यह सत्य की पुकार है जिसमें असत्य नहीं है, ये ऐसा सटीक भाषण है जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं है, सत्य की आपगवाही है जिसमें कोई झूठ नहीं है, यह वह आदर्श है जिसे अल्लाह ने अपनी रचना में से अपने लिए विशेष किया है और यही वह शब्द है जो इब्राहीम के बाद उनकी संतान में अमर होने वाला है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾

और इसी बात को अल्लाह ने उनके पीछे उनकी संतान में बाक़ी रख छोड़ा, ताकि वे बाज़ आयें। (अल ज़ुखरुफ: 28)

इब्ने कसीर ने कहा: "आपबात: "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" थी; इसे अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के वंश में स्थायी किया, ताकि इब्राहीम के वंश में से अल्लाह जिसे हिदायत दे आपइसी का अनुसरण करे।

मंत्र "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" सृष्टि पर सबसे बड़ा आशीर्वाद है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً﴾

और अल्लाह ने तुमपर अपनी प्रकट और अप्रकट अनुकम्पाएँ पूर्ण कर दी हैं। (लुक़मान: 20)

सुफयान इब्ने उयेना कहते हैं: अल्लाह के इस आशीर्वाद से बढ़कर कोई आशीर्वाद नहीं कि उसने "अल्लाह (ईश्वर) के अलावा कोई पूजनीय नहीं है" का अर्थ समझाया।

एक ऐसा मंत्र जो दुनिया और उसमें जो कुछ है सब के समान है, पैग़म्बर ﷺ ने कहा: "मेरा ये कहना कि "सुबहानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु

अकबर" (अल्लाह की महिमा हो, अल्लाह की स्तुति हो, अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और अल्लाह सबसे महान है); उन समस्त चीज़ों से अधिक प्रिय है जिन पर सूरज उगता है।" (सही मुस्लिम)

ज्ञान और कर्म में यह बंदों का पहला कर्तव्य है। महान अल्लाह ने कहा:

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ﴾

तो जान लो कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है। (मुहम्मद: 19)

महान इस्लामी विद्वान इब्ने तैमियह (रहमतुल्लाहि अलैह) ने कहा: "पूर्ववर्ती विद्वान (सलफ) और सारे इमाम सहमत हैं कि बंदों को सबसे पहले दो गवाहयों[1] की आज्ञा दी जाएगी।"

और यही सबसे अंतिम कर्तव्य भी है। रसूल ﷺ ने कहा: "जिसके अंतिम शब्द: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) हों उसने जन्नत में प्रवेश किया।" (अबू दाऊद)

इसका ज्ञान रखने वाला और इसके अनुसार कर्म करने वाला ही सटीक पथ वाला है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ﴾

जो लोग कहते हैं कि हमारा प्रभु अल्लाह है, फिर डट जाते हैं, उन पर न कोई भय सवार होगा और न वे दुखी होंगे। (अल अहक़ाफ: 13)

इब्ने अब्बास (रदियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: "अर्थात: अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है की गवाही पर डट जाते हैं।"

यदि यह वचन सत्य है तो हृदय अल्लाह के सिवा हर वस्तु से शुद्ध हो जाता है, जो कोई इसके प्रति सच्चा है वह परमेश्वर से ही प्रेम रखता है, उसके सिवा किसी और से आशा

---

[1] पहली गवाही इस बात की कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं, दूसरी गवाही इस बात की कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके दूत हैं।

नहीं रखता, उसके सिवा किसी से नहीं डरता, उसे छोड़ कर किसी अन्य पर भरोसा नहीं करता, फिर उसकी अपनी कोई इच्छा बाक़ी नहीं रह जाती।

यह मंत्र धन और रक्त का रक्षक है; प्यारे रसूल ﷺ ने कहा: जो कोई कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) और उसके अलावा पूजा की जाने वाली हर चीज़ पर अविश्वास करता है; उसका धन और खून वर्जित हो जाता है, और उसका हिसाब सर्वशक्तिमान अल्लाह के पास है। (सही मुस्लिम)

सबसे पहली चीज जिसके साथ इस्लाम का प्रचार शुरू किया जाएगा वह यही मंत्र है, इसी से नबी ﷺ ने अपनी दावत का कार्य शुरू किया, इसी पर नबी ﷺ अपने साथियों से बैअत (निष्ठा का वचन) लेते थे, इसी को देकर नबी ﷺ सुसमाचार (इस्लाम के) प्रचारकों को शहरों में भेजते थे, अत: आपने मुआज़ को यमन भेजते समय कहा था: “तुम धार्मिक ग्रंथ वालों (यहूदियों और ईसाइयों) के पास जा रहे हो; उन्हें इस बात की गवाही देने के लिए बुलाओ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूँ।” (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

तौहीद का मंत्र समानता का शब्द है जिस पर सृष्टि एकजुट हो सकती है, इसके बिना भेद ही भेद है, महान अल्लाह का कथन है:

﴿قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ
وَلَا نُشْرِكَ بِهِۦ شَيْـًٔا﴾

कहो, "ऐ किताबवालो! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है; यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ (आल इमरान: 64)

जिसने सत्यता के साथ इसे कहा वह सफल हो गया। नबी ﷺ ने कहा: "हे लोगो! कहो: कोई पूजनीय नहीं सिवाय अल्लाह के; सफल हो जाओगे।" (मुस्नद अहमद)

इसको मजबूती से थामने वाला विश्वास की उच्चतम शाखाओं को प्राप्त करता है, नबी ﷺ ने कहा: "ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं, सबसे अधिक फलदायी और गुणकारी

शाखा है "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह (ईश्वर) के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) कहना।" (सही मुस्लिम)

जिस आयत में यह मंत्र शामिल है, वह कुरान की सबसे महान आयत[1] है, सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार[2] में भी यह मंत्र शामिल है।

पुण्य के कामों में सबसे अधिक सवाब इसी में है, तो जो व्यक्ति दिन में 100 बार यह कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) तो ये दस दासों को स्वतंत्रता दिलाने के समान है, उसके लिए सौ पुण्य लिखे जाते हैं, सौ पाप मिटाए जाते हैं, यह उस दिन की शाम तक उसके लिए रक्षक होता है और (कयामत के दिन) इसके क्रम से उत्तम क्रम किसी का नहीं होगा, हाँ जिसने यह काम उस से अधिक क्या होगा उसकी बात और है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

और "जो व्यक्ति दिन में 10 बार ये कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) वह इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के वंश से चार दासों को स्वतंत्र करने वाले जैसा है।" (सही मुस्लिम)

यह बिना पैसा खर्च किए उच्चतम दान है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने कहा: "तौहीद के मंत्र का प्रत्येक जाप एक दान है।" (सहीह मुस्लिम)

यह कब्र में बंदे के लिए एक मोक्ष है और प्रशन के समय इसी पर उसे जमा दिया जाएगा, नबी ﷺ ने कहा: "जब एक मुस्लिम से कब्र में पूछा जाता है तो वह गवाही देता है कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के दूत हैं; यही अर्थ अल्लाह के इस कथन का है:

([1]) आयतुलकुर्सी मुराद है (अल बक़रा: 255)।

([2]) अर्थात: क्षमा मांगने की उच्चतर दुआ जो सही बुखारी में आई है।

﴿يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ﴾

ईमान लानेवालों को अल्लाह सुदृढ़ बात के द्वारा सांसारिक जीवन में भी और परलोक में भी सुदृढ़ता प्रदान करता है। (इब्राहीम:27) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

और -अल्लाह की क्रपा से- इस मंत्र के भार के सामने पापों के खाते हल्के साबित होंगे। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति को रब के सामने प्रस्तुत किया जाएगा और उसके पापों के 99 खाते फेला दिए जाएंगे, हर खाता नजर की दूरी तक फैला होगा, फिर एक कार्ड निकाला जाएगा जिसमें लिखा होगा: "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह वा अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह" (में गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और दूत हैं।) फिर सारे खाते एक पल्ले में रखे जाएंगे, तो खातों वाला पल्ला उठ जाएगा और कार्ड वाला पल्ला भारी हो जाएगा।" (मुस्नद अहमद)

"यदि सात आकाश और सात पृथ्वी एक पल्ले में रखे जाएं और दूसरे पल्ले में لا إله إلا الله (अर्थात: अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं), तो यह मंत्र उन सब पर भारी पड़ जाएगा। यदि सात आकाश और सात प्रथ्वी एक रहस्यमयी वलय हो जाए; तो यह मंत्र उन्हें काटकर रख देगा।" (मुस्नद अहमद)

इस मंत्र वाले लोग (क़यामत के दिन) सिफ़ारिश करनेवाले होंगे, और परम दयालु अल्लाह के यहाँ उनसे वादा है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कहा:

﴿لَّا يَمْلِكُونَ ٱلشَّفَٰعَةَ إِلَّا مَنِ ٱتَّخَذَ عِندَ ٱلرَّحْمَٰنِ عَهْدًا﴾

उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा। सिवाय उसके, जिसने परम दयालु अल्लाह के यहाँ से एह्द (अनुमोदन) प्राप्त कर लिया हो। (मरयम: 87)

नबी ﷺ की सिफारिश के प्रति सबसे खुश लोग, वे हैं जो इस मंत्र में ईमानदार और सच्चे हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी सिफारिश से लाभान्वित लोग वे होंगे जो सच्चे मन से "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अर्थात: अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं) कहते होंगे।" (सही बुखारी)

जो इसे सच्चे दिल से, यक़ीन करते हुए, बिना किसी संदेह के और इसके विपरित से दूर रहते हुए बोलता है तो जन्नत ऐसे व्यक्ति का प्रतिफल है। पैग़म्बर ﷺ ने कहा: "जो बंदा भी कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं), फिर उसी पर उसकी मृत्यु हो जाती है; तो वह अवश्य जन्नत में प्रवेश करेगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इसके कहने वाले के लिए जन्नत के आठों द्वार खोल दिए जाएंगे, वह जिसमें से चाहेगा प्रवेश करेगा, बल्कि जो कोई इसमें सच्चा हो और उसके अनुसार कार्य करे, तो उसे (नर्क की) आग छुएगी ही नहीं। नबी ﷺ ने कहा: "जो भी सच्चे मन से यह गवाही देता है कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और दूत हैं, अल्लाह उसे जहन्नम (नर्क) पर हराम (वर्जित) कर देता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो पापी इसे सच्चे मन से कहे और उसके हृदय में कण बराबर भी ईमान हो तो अल्लाह उसे जहन्नम से निकाल देगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कहा: "मेरी शक्ति और महिमा की कसम, मेरे गौरव और महानता की कसम! मैं जहन्नम से हर उस व्यक्ति को निकाल दूंगा जो कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अर्थात: अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं)। (सही बुखारी)

बंदे के जीवन के प्रत्येक पल में तौहीद के मंत्र के महत्व के कारण ही शरीअत ने हर हाल और मामले में इसकी पाबंदी करने पर उभारा है, सो "जो व्यक्ति सुबह के समय कहे: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शयइन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) उसे इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के वंश से दस दासों को स्वतंत्र करने जितना सवाब (प्रतिफल) मिलेगा, सौ पुण्य लिखे जाएंगे, सौ पाप मिटाए जाएंगे, उसके दस श्रेणियों की पदोन्नति मिलेगी और उस दिन शाम तक शैतान से उसकी रक्षा की जाएगी, अगर शाम के समय कहे तो इतने ही पुरस्कार सुबह तक प्राप्त होंगे।" (अबू दाऊद)

अगर कोई इसे वुज़ू[1]के बाद कहे उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) के आठों द्वार खोल दिए जाएंगे। पैग़म्बर ﷺ ने फ़रमाया: जो व्यक्ति अच्छी तरह वुज़ू करे फिर कहे: "अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह वा अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह" (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और दूत हैं।) उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) के आठों द्वार खोल दिए जाते हैं। (सही मुस्लिम)

तौहीद के इसी मंत्र से अज़ान [2] का आरंभ होता है और इसी से अंत। पैग़म्बर ﷺ ने फ़रमाया: जब मुअज़्ज़िन (बांगी) कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

फिर तुम में से कोई जवाब में कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

मुअज़्ज़िन कहे:

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

फिर वह कहे:

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

मुअज़्ज़िन कहे:

अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह

([1]) पवित्रता के लिए निर्धारित अंगों को धोना।

([2]) नमाज़ की ओर आमंत्रित करने के लिए लगाई जाने वाली पुकार और उस पुकार लगाने वाले को मुअज़्ज़िन कहते हैं।

(मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के पैग़म्बर हैं)

फिर वह कहे:

अशहदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह

(मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के पैग़म्बर हैं)

मुअज़्ज़िन कहे:

हय्या अलस्सलाह

(आओ नमाज़ की ओर)

फिर वह कहे:

ला हउला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

(सारी शक्ति और क्षमता अल्लाह ही से है)

जब मुअज़्ज़िन कहे:

हय्या अल-अलफलाह

(आओ सफलता की ओर)

फिर वह कहे:

ला हउला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

(सारी शक्ति और क्षमता अल्लाह ही से है)

जब मुअज़्ज़िन कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

फिर वह कहे:

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

(अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे महान है)

जब मुअज़्ज़िन कहे:

ला इलाहा इल्लल्लाह

(अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

फिर वह कहे:

ला इलाहा इल्लल्लाह

(अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है)

जो व्यक्ति सच्चे मन से ऐसा करेगा आपस्वर्ग में प्रवेश करेगा।" (सही मुस्लिम)

"जो व्यक्ति मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनते समय ये कहे: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, एवं मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, मैं अल्लाह को प्रभु मान कर, मुहम्मद ﷺ को रसूल मान कर और इस्लाम को दीन (धर्म) मान कर प्रसन्न हूँ।" तो उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही मुस्लिम)

यदि कोई मुस्लिम नमाज़ में खड़ा होता है तो वह तौहीद से ही उसका आरंभ करता है, नमाज़ तशह्हुद के बिना सही नहीं होती, नमाज़ी सलाम फेरने से पहले अल्लाह से इसी मंत्र द्वारा प्रार्थना करता है: "हे अल्लाह! पूर्व पाश्चात, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष एवं प्रचुरता से किए गए समस्त पापों और जो तू मुझ से अधिक जानता है उन सब के लिए मुझे क्षमा करदे, निसंदेह तू ही आगे पीछे करने वाला है, तेरे अलावा कोई पूजनीय नहीं है।" (सही मुस्लिम)

हर नमाज़ के बाद वह यह कहता है: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इसी दुआ के साथ वह अल्लाह की स्तुति, प्रशंसा और महानता के जाप को खत्म[1] करता है तो उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं भले ही आपसमुद्री झाग के समान हो। (सही मुस्लिम)

हज के कर्मकांडों में भी पैग़म्बर ﷺ इस मंत्र को याद रखते थे; अत: "आप ﷺ जब सफा और मरवा[2] पर चढ़ते तो क़िबला की ओर मुँह करते और अल्लाह की एकता और महानता बयान करते।" (सही मुस्लिम) मुज़दलिफ़ा [3] में: "नबी ﷺ मशअर के पास आऐ, उस पर चढ़े और अल्लाह की स्तुति, एकता और महिमा बयान की।" (नसाई)

जब आप ﷺ किसी युद्ध से, या हज, या उमरे से लौटते तो धरती की हर ऊंची जगह पर तीन बार अल्लाह की महिमा बयान करते, फिर कहते: "ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शयुइन क़दीर" (अल्लाह (ईश्वर) के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अच्छे कर्मों के मौसम - जैसे ज़ुल-हिज्जा के दस दिन – में तौहीद के मंत्र का अधिक से अधिक जाप करना पसंदीदा कार्य है। इसी तरह रसूल ﷺ ख़ुतबों (उपदेशों) का आरंभ इसी तौहीद से करते थे।

लोगों से मिलने जुलने के समय या किसी बैठक में बैठने के समय जहां बहुत त्रुटियां हों अगर बंदा बैठक समाप्ति से पहले यह कहता है: "हे अल्लाह! तेरी स्तुति और महिमा हो, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अलावा कोई पूजनीय नहीं है, मैं क्षमा चाहता हूँ और तेरी ओर पलटता हूँ।" तो उसके उस बैठक में होनेवाले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (तिर्मिज़ी)

"रात्री को आंख खुलने पर अगर कोई तौहीद का मंत्र बोलता है, फिर दुआ करता है तो उसकी दुआ कबूल होती है और अगर वह वुज़ू करके नमाज़ पढ़ता है तो उसकी नमाज़ भी कबूल होती है।" (सही बुखारी)

---

[1] अर्थात: 33 बार सुबहानल्लाह, 33 बार आल्हम्दु लिल्लाह और 33 बार अलहु अकबर कहने के बाद सोवीं बार में ऊपर दी हुई दुआ पड़ना।

[2] मक्का शहर में पवित्र काबे के पास स्थित दो पहाड़ियाँ जिन के सात चक्कर लगाना हज और उमरे में अनिवार्य होता है।

[3] मक्के में स्ठित हज के स्थानों में से एक स्थान।

चिंता और पीड़ा के समय नबी ﷺ कहते थे: "अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है जो महान और सहिष्णु है, अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है जो महान सिंहासन (अर्श) का प्रभु है, अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है जो आकाशों का प्रभू है, जो धरती का प्रभु है और जो सम्मानजनक सिंहासन का प्रभु है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह से कुछ मांगने से पूर्व तौहीद के मंत्र द्वारा उसकी स्तुति बयान करना दुआ के कबूल होने का कारण होता है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبًا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادَىٰ فِي ٱلظُّلُمَٰتِ أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ﴾

और मछलीवाले (यूनुस) पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर चल दिया और समझा कि हम उसे तंगी में न डालेंगे। अन्त में उसने अँधेरों में पुकारा, "तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ।" तब हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसे ग़म से छुटकारा दिया। इसी प्रकार तो हम मोमिनों को छुटकारा दिया करते हैं। (अल अंबिया: 87-88)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: कोई भी मुस्लिम व्यक्ति यूनुस (अलैहिस्सलाम) की इस दुआ द्वारा जो चीज़ भी अल्लाह से मांगेगा अल्लाह उसकी दुआ अवश्य सुनेगा। (तिर्मिज़ी)

इसी मंत्र से अल्लाह को छोड़ किसी अन्य वस्तु की कसम खाने का पश्चाताप होता है: मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: जो कसम खाते समय कहे: लात व उज़्ज़ा [1] की कसम! उसे "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) कहना चाहिए। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो कोई मृत्यु के निकट हो, उसके लिए इसे पढ़वाना मुस्तहब[2] है, रसूल ﷺ ने

(1) दो मूर्तियों के नाम जिन्हें मक्का वाले पूजते थे।
(2) अर्थात: पुण्य का काम।

कहा: "अपने मृतकों से "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है) पढ़ने का आग्रह किया करो। (सही मुस्लिम)

जीवन के अंतिम क्षण में मोजूद ग़ैर धर्म के व्यक्ति को भी इस मंत्र की और बुलाया जाएगा, जब पैग़म्बर ﷺ के चाचा अबू तालिब की मृत्यु निकट आई तो आपने चाचा से कहा: "हे चाचा! कहो: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है), यह ऐसा वचन है जिसकी मैं ईश्वर के सामने आपके लिए गवाही दूँगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

सम्मान तौहीद में है, हज़रत उमर (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं: "हम ऐसी क़ौम हैं जिन्हें अल्लाह ने इस्लाम द्वारा सम्मानित किया है।" तौहीद की गवाही ही इस्लाम की पहचान और प्रमाण है, उस कथन का कोई लाभ नहीं कर्म जिसके विपरीत हो। जिसने यह मंत्र नहीं बोला उससे लोक परलोक का सुख छूट गया। मुसलामानों की शक्ति और दुर्बलता शब्द और कर्म द्वारा इसी वचन के पालन अनुसार है, अल्लाह और मनुष्य के यहाँ यही उनका तराज़ू है, अगर उनके यहाँ ये वचन सशक्त हुआ तो अल्लाह उनसे प्रसन्न होगा और वे सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे, लेकिन यदि यह वचन दुर्बल हुआ तो वे अल्लाह से दूर हो जजाएंगे और दुर्बल व कायर बन जाएंगे।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण चाहता हूँ

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۗ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ مُتَقَلَّبَكُمۡ وَمَثۡوَىٰكُمۡ﴾

तो जान लो कि अल्लाह (ईश्वर) के सिवा कोई पूजनीय नहीं है, अपने पापों के लिए और ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं के लिए क्षमा मांगो, निसंदेह अल्लाह तुम सब की गतिविधियों और ठिकाने को ख़ूब जानता है। (मुहम्मद: 19)

पवित्र कुरान के प्रति अल्लाह मुझे और आपको आशीर्वाद दें ...

दूसरा खुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं। आप पर, आपके परिवार पर और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

तौहीद के मंत्र के अर्थ का ज्ञान और उसके अनुसार कर्म और उसके विरुद्ध या विपरीत से दूरी बनाना ही ग्रंथों में मौजूद उसका अनुसरण पर्याप्त करने के लिए शर्त है, सो इसका अर्थ है: अल्लाह के अलावा हर किसी की पूजनीयता का इंकार करना, और पूजनीयता को केवल अल्लाह के लिए साबित करना। क़ुरैश कबीले के बहुदेववादियों ने इसी को नकारा था:

﴿إِنَّهُمْ كَانُوٓاْ إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ﴾

उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं है।" तो वे घमंड में आ जाते थे। (अल साफ्फात: 35)

अतः केवल ईश्वर की प्रभुत्व को मानने और पूजनीयता का इंकार करने से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ।

जो इस मंत्र का अर्थ जितना अधिक जानता होगा, और उसके अनुसरण का जितना अधिक पालन करता होगा क़यामत के दिन उसका तराज़ू उतना ही भारी होगा। लोग इसकी शर्तों को पूरा करने की मात्रा के आधार पर ही भिन्न श्रेणियों में बट जाते हैं। इस मंत्र की आत्मा और रहस्य इबादत में अल्लाह को एक करना है, सो जो भी अल्लाह के अधिकारों और इबादत में किसी अन्य को भी साझी करेगा आपइस मंत्र का विरोधाभासी माना जाएगा।

सुखी है वह व्यक्ति जो अपनी तौहीद को बनाए रखता है और उसी पर मर जाता है,

और उसके विपरीत कार्य करके, या उसकी गरिमा में कमी करके गंदा नहीं होता। ऐसा (जीवन व मरण) ही अल्लाह के सच्चे सेवकों की तमन्ना होती है:

﴿تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ﴾

तू मुझे इस दशा में उठा कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। (यूसुफ: 101)

फिर जान लो कि अल्लाह ने आपको नबी पर शांति व सलाम भेजने का आदेश दिया है।

अपने पैग़ंबर को जानें[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उनपर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा और दरूद के बाद:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जैसे उससे डरना चाहिए, जो अपने रब का डर रखता है वह मुक्ति पाता है, और जो उससे विमुख हो जाता है वह बर्बाद हो जाता है।

हे मुस्लिमो:

अल्लाह ने भूमि और शहरों में से सबसे अच्छे को, और प्राणियों में से सबसे सम्मानित प्राणी को चुना। उसने मानव जाति में से रसूलों (दूतों) का चयन किया, उनके शब्दों, कर्मों और नैतिकता को एक ऐसा तराज़ू बनाया जिसके द्वारा शब्द, नैतिकता और कर्मों को तोला जाता है।

हमारे नबी मुहम्मद ﷺ को जानना उन तीन आवश्यक सिद्धांतों में से एक है जिनका जानना मानव पर अनिवार्य है और जिनके विषय में कब्र में हर बंदे से पूछा जाएगा। इब्नुल कय्यिम कहते हैं: "रसूल ﷺ को और उनकी लाई हुई शरीअत को जानना, उनके संदेशों पर यक़ीन करना और उनके आदेशों का पालन करना भक्तों की आपबाध्यता है जो सभी आवश्यकताओं से ऊपर है।"

आदम की संतान के सरदार और लोक परलोक में उनके गौरव: मुहम्मद बिन

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 27/10/1425 हिजरी को दिया गया।

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं, अल्लाह ने आपको बनी हाशिम(1) से चुना और बनी हाशिम को क़ुरैश(2) से चुना, और वे अल्लाह के पैगंबर इब्राहीम के वंशज हैं।

हमारे पैग़ंबर ﷺ सृष्टि के सर्वोत्तम और पृथ्वी पर सबसे उत्तम वंश रखने वाले व्यक्ति हैं, पैग़ंबर ﷺ कहते हैं: "मैं व्यक्तित्व में सबसे अच्छा हूँ और मेरा घराना भी सबसे उत्तम है।" (सुनन-तिर्मिज़ी)

आप अपने माता-पिता से अनाथ के रूप में बड़े हुए, तथा उनके प्यार व दुलार से वंचित रहे। महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ﴾

क्या अल्लाह ने तुमको अनाथ नहीं पाया, फिर अपनी शरण में ले लिया? (अल ज़ुहा: 6)

वह अल्लाह की देखभाल और संरक्षकता से परस्पर गोदों में खेलते रहे, उनके हृदय में मूर्तियों की पूजा और अधीनता की नफरत डाल दी गई थी, अल्लाह ने बचपन और जवानी में उनकी रक्षा की, सो आपने ना तो किसी मूर्ति को प्रणाम ही किया और न किसी मूर्ति को छुआ।

नुबुव्वत (दूतत्व) से पहले आपने एक कुलीन, सम्मानित और बुद्धिमान महिला; खदीजा से विवाह किया, जो समस्त महिलाओं से अधिक सम्मानजनक और प्रचंड बुद्धि वाली थीं।

अल्लाह ने जब आपको भेजा उस समय पृथ्वी मूर्तिपूजा, ज्योतिषियों की कहानियों, रक्तपात और रिश्तेदारी तोड़ने जैसी बुराइयों से भरी हुई थी। सो आपने एक ईश्वर की पूजा करने का आह्वान किया और इनकार, अस्वीकृति और मनमुटाव के रूप में आने वाली हर कठिनाई पर सब्र किया।

अल्लाह ने उनका बोलबाला किया और उनकी शान ऊंची की। उनके चमत्कार

(1) एक परिवार का नाम।

(2) एक क़बीले का नाम।

अद्भुत हैं और उनके प्रमाण स्पष्ट हैं। आपको दबदबे द्वारा विजयी किया गया और उनके गुनाहों की क्षमा देदी गई। सबसे पहले उन की ही कब्र खुलेगी, आप ही क़यामत के दिन सबसे पहले सिफारिशी होंगे। उन्ही के अनुयायी सबसे अधिक होंगे, आप ही सबसे पहले जन्नत का द्वार खटखटाने वाले और सबसे पहले सिरात[1] पार करने वाले होंगे।

आप अल्लाह के एक कृतज्ञ भक्त थे; रात को पैर फट जाने तक इबादत में खड़े रहते, आपकी आंखों की ठंडक नमाज़ में थी, अल्लाह के सामने आप एक उदात्त और आज्ञाकारी बन कर खड़े होते, अब्दुल्लाह बिन शिख्खीर कहते हैं: "मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ को नमाज़ पढ़ते देखा और रोने के कारण आपके सीने में हांडी के उबलने जैसी आवाज़ आती थी। (मुस्नद अहमद) स्वयं अपने प्रति आपने बताया: "अल्लाह की कसम मैं तुम में सबसे अधिक अल्लाह का भय रखने वाला हूँ।" (सही मुस्लिम)

आप अपने प्रभु की महिमा करने वाले और अपने निर्माता के साथ उच्च शिष्टाचार वाले थे, अपने लिए कभी ऐसी चीज़ का दावा नहीं करते जिसका मालिक केवल अल्लाह है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُۚ وَلَوۡ كُنتُ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ لَٱسۡتَكۡثَرۡتُ مِنَ ٱلۡخَيۡرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُۚ إِنۡ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٞ وَبَشِيرٞ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ﴾

कहो, "मैं अपने लिए न तो लाभ का अधिकार रखता हूँ और न हानि का, बल्कि अल्लाह ही की इच्छा क्रियान्वित है। यदि मुझे ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान होता तो मैं बहुत-सी भलाई समेट लेता और मुझे कभी कोई हानि न पहुँचती। मैं तो बस सचेत करनेवाला और उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, खुशखबरी देने वाला हूँ।" (अल-आराफ: 188)

एक व्यक्ति आया और कहने लगा: "जो अल्लाह और आप चाहें" तो आपने उससे कहा: "क्या तुमने मुझे अल्लाह के बराबर खड़ा कर दिया! बोलो: जो अकेला अल्लाह चाहे" (सुनन नसाई)

([1]) सिरात: जहन्नम के ऊपर से गुज़रने वाला एक पुल जो बालसे अधिक बारीक और तलवार से अधिक धारदार होगा।

अल्लाह ने उनसे कहा:

﴿قُلۡ إِنِّي لَآ أَمۡلِكُ لَكُمۡ ضَرّٗا وَلَا رَشَدٗا﴾

कह दो, "मैं तुम्हारे लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का।" (अल जिन्न: 21)

इब्ने कसीर (रहमतुल्लाहि अलैह) कहते हैं: "अर्थात मैं तुम्हारी ही तरह का एक मनुष्य हूँ, मुझ पर ईश-वाणी अवतीर्ण होती है, मैं अल्लाह के भक्तों में से ऐक हूँ, मेरे पास तुम्हें मार्ग पर चलाने या हटाने की कुछ भी क्षमता नहीं है, बल्कि इसका पूरा सन्दर्भ अल्लाह के लिए है।"

आप सबसे विनम्र और सबसे सुंदर व्यक्ति थे, गरीबों के साथ उठते बैठते और कमज़ोरों के साथ खाते पीते थे, अपना जूता सी लेते और अपने परिवार की और स्वयं की सेवा करते थे, पुराने थैले से पानी पी लेते और मस्जिद के निर्माण में अपने साथियों के साथ ईंटे ढोते थे, आपकभी सेवकों का दोष न निकालते और न उन्हें डांटते थे, अनस (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "मैंने नौ वर्ष अल्लाह के पैग़ंबर ﷺ की सेवा की, मैं नहीं जानता कि आपने कभी मुझसे कहा हो: तुमने ऐसा क्यों किया? और न मुझे कभी दोष दिया।" (सही मुस्लिम)

आप बड़ों का आदर करते, छोटों के प्रति विनम्र रहते, यदि कभी बच्चों के पास से गुज़रते तो उन्हें सलाम करते। एक बार एक बच्चे अबू उमैर को देखा तो उनसे प्यार में कहा: अबू उमैर! चिड़िया का क्या हुआ! (सही बुखारी व सही मुस्लिम) अनस (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "मैंने पैग़ंबर ﷺ जैसा अपने परिवार के साथ अधिक दयालू किसी को नहीं देखा।" (सही मुस्लिम)

आप महान विनम्रता वाले, तथा अभिमान, घमंड और अहंकार की भावना से कोसों दूर रहने वाले थे, यूँ कहते: "निस्संदेह मैं अल्लाह का एक भक्त हूँ, तो तुम मुझे अल्लाह का भक्त और उसका पैग़ंबर ही कहो।" (सही बुखारी)

आप मन के उदार, हाथ के खुले और खूब लुटाने वाले थे; आप उदारता, सहृदयता और अल्लाह पर भरोसे के साथ खर्च करते थे। आपसे जब भी किसी ने आपकी मिल्कियत

में मोजूद दुनया का कोई भी सामान मांगता तो आप कभी उसको वापस नहीं करते, अनस (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "अल्लाह के रसूल ﷺ से इस्लाम के नाम पर कुछ भी मांगा जाता तो आप आवश्य दे देते थे।" (सही मुस्लिम)

आपको दुनिया क्रोधित नहीं करती थी और न कर सकती थी, आप इस घर से विमुख रहे और स्थिर घर (आखिरत) के लिए कर्म करते रहे, आप कहा करते: "मेरा दुनिया से क्या लेना देना? मैं तो दुनिया में एक यात्री की तरह हूँ जो किसी पेड़ के नीचे छाव प्राप्त करता है, फिर उसे छोड़ कर चलता बनता है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

कई कई महीने आपके घर में आग नहीं जलती थी, लगातार कई रातें भूक में गुजर जाती थीं और आपके परिवार के लिए रात्री का भोजन उपलब्ध नहीं होता था। उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ को देखा कि भूख के कारण सारा दिन करवट बदलते रहते थे, आपके पास पेट भरने के लिए रद्दी खुजूर भी नहीं होती थी। (सही मुस्लिम)

भूख की सख्ती के कारण घर से बाहर निकले और भूख के दर्द की वजह से पेट पर पत्थर बांधा, आपके साथी आवाज के बदलाव से आपकी भूख को पहचान लेते थे, अबू तलहा (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ की कमज़ोर आवाज़ सुनी, जिसमें भूक का असर था"।

नुबूव्वत के घराने में कई दिन ऐसे भी आते जब वहां केवल पानी ही होता था, एक आदमी अल्लाह के रसूल ﷺ के पास आया और कहा कि मुझे बहुत भूख लगी है, तो आपने अपनी एक पत्नी के पास संदेश भेजा, तो उन्होंने कहा: उस हस्ती की कसम जिसने आपको सत्य के साथ भेजा है, मेरे पास पानी के सिवा कुछ नहीं है, फिर दूसरी पत्नी के पास भेजा तो उन्होंने भी यही कहा, यहाँ तक कि सारी पत्नियों ने यही बात कही। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इस कदर भूख का सामना करने के बावजूद भी, आपको अपने प्रभु का डर सपूर्ण रूप से रहता था, कभी बिस्तर पर खजूर मिलती तो कहते "मैं इसे खाने के लिए उठाता हूँ, लेकिन फिर मुझे संदेह होता है कि कहीं यह सदके (दान) की खजूर न हो, तो फिर मैं उसे रख देता हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

आपने जीवन की कठिनाइयों को झेला और कठिन से कठिन संकटों का सामना किया, ममता से वंचित यतीम बनकर पले बढ़े, आपकी आँखें पिता के दर्शन से महरूम रहीं, अपने लोगों ने कथन और कर्म से पीड़ा दी, अनस (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: पैगंबर ﷺ को एक बार लोगों ने इतना मारा कि आप बेहोश हो गए। (मुस्नद अहमद)

लोगों ने आप पर पागलपन का आरोप लगाया, जादू की तोहमत लगाई और आपको झूठा कहा:

﴿وَقَالَ ٱلۡكَٰفِرُونَ هَٰذَا سَٰحِرٞ كَذَّابٌ﴾

और इनकार करनेवाले कहने लगे, "यह जादूगर है बड़ा झूठा। (साद: 4)

गुफा में पीड़ा, दुख, भय और उदासी थी

﴿إِذۡ يَقُولُ لِصَٰحِبِهِۦ لَا تَحۡزَنۡ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَنَاۖ﴾

जब वह अपने साथी से कह रहे थे: "शोकाकुल न हो। अवश्यमेव अल्लाह हमारे साथ है। (अल-तौबह: 40)

उहुद के युद्ध में चतुष्कोण दांत तोड़ा गया, चेहरा घायल किया गया और आपका खून बहा।

आपने भूख की सख्ती और शत्रु की ताकत का सामना किया; उन्होंने आपके भोजन में ज़हर मिला दिया और आप पर घरवालों के मामले में जादू-टोना कर दिया, आप पर ढेर सारी विपत्तियां और क्लेश आए, जबकि आपका प्रभु आपसे कह रहा था:

﴿فَٱصۡبِرۡ كَمَا صَبَرَ أُوْلُواْ ٱلۡعَزۡمِ﴾

अतः धैर्य से काम लो, जिस प्रकार संकल्पवान रसूलों ने धैर्य से काम लिया। (अल अहक़ाफ: 35)

आपने अपने दुख और पीड़ा को अपनी पत्नी आयशा के सामने प्रस्तुत करते हुए बताया: "मैंने तुम्हारी कौम से जितना संकट झेला वो मुझे ही पता है" (सही बुखारी)

आपके जीवन काल में ही आपकी छ संतान परलोक सिधार गईं, लेकिन यह संकट भी आपको अल्लाह की ओर बुलाने से न रोक सके, आप जीवन की कठिनाइयों और मुसीबतों पर सब्र करते रहे, अपने बारे में कहते: "मुझे अल्लाह के रास्ते में जितनी पीड़ा दी गई इतनी किसी को नहीं दी गई, मुझे अल्लाह के रास्ते में जितना डराया गया उतना किसी को नहीं डराया गया।" (मुस्नदअहमद)

नर्मदिल थे, दया से भरे थे, नमाज़ के बीच जब बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते तो नमाज़ हल्की कर देते, क्यूंकि बच्चे के रोने के कारण मां की पीड़ा को समझते थे, बक़ी कब्रिस्तान जाते तो आख़िरत (परलोक) को याद करके रोते थे, आप अपने दूध पीते बेटे इब्राहीम से मिलने दाया के पास जाते थे, इब्राहीम आप के पास आते तो उन पर धूल-मिट्टी का निशान होता, मगर आप उनको चिमटा लेते, उन्हें चूमते और उन्हें पुत्र प्रेम भाव से सूंघते थे। (सही बुखारी) फिर जब उनका निधन हो गया तो आपकी आंखों में आंसू आ गए और कहने लगे: "आंखें अश्रुधारित है, दिल उदासीन है, मगर हम वही बात कहेंगे जो प्रभु को पसंद है: हे इब्राहीम हम तुम्हारी जुदाई में दुखी हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

सम्पूर्ण बुद्धि वाले और उच्च नैतिकता वाले थे, आपने कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा, आयशा (रज़ियल्लाहु अनहा) कहती हैं: "अल्लाह के दूत ﷺ ने कभी अपने हाथ से किसी को नहीं मारा, न किसी महिला को न किसी सेवक को" (सही मुस्लिम)

लोगों में सबसे पवित्र और सम्मानित, आपके हाथ ने कभी किसी वर्जित महिला को नहीं छूआ।

आप अपने परिवार और साथियों (रज़ियल्लाहु अनहुम) के प्रति पूरी तरह से वफादार थे, आप भेड़ काटते और बोटियाँ बना कर अपनी पत्नी; खदीजा (रज़ियल्लाहु अनहा) की मृत्यु के बाद भी, उनकी सहेलियों को भेजते थे। उस्मान बिन अफ्फान (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "अल्लाह के दूत ﷺ कम और ज़्यादा से हमें सांत्वना देते।"

आपका शिष्टाचार सारे लोगों के लिए आम था, आप ऐसे सहनशील थे कि बुराई का बदला न लेते, मगर क्षमा कर देते थे, स्वयं के लिए न क्रोधित होते और न उसकी ख़ातिर जीत प्राप्ति में लगते, कोई देहाती धन लेने हेतु आपको पीछे से खींचता तो आप मुस्करा कर पलटते और उसकी मांग पूरी कर देते।

खुद पर जादू टोना करने वाले को माफ़ कर दिया, अपने भोजन में ज़हर रखने वाले से बदला न लिया, अपने से लड़ने वाले को माफ़ कर दिया, अतः मक्का विजय पर शत्रुओं से कहा: "जाओ तुम सब स्वतंत्र हो" आयशा (रज़ियल्लाहु अनहा) कहती हैं: "आपने कभी अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का बदला नहीं लिया।" (सही मुस्लिम)

आप नर्म पहलू वाले और चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट सजाने वाले थे, जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "मुझे अल्लाह के पैगंबर ﷺ ने जब भी देखा मुस्करा कर देखा।" (सही बुखारी)

आप अपने साथियों की ख़बर लेते रहते, अपने शिष्टाचार द्वारा गुण वाले लोगों को प्राथमिकता देते, सुंदर व्यवहार और सुंदर संगत वाले थे, संबंधियों से जुड़ाव रखते और किसी के साथ दुर्व्यवहार न करते।

ज़बान के पवित्र थे, अश्लील या अशिष्ट नहीं थे, बल्कि आप पर्दा करने वाली कुंवारी लड़की से भी अधिक शर्मीले थे, आपका चरित्र आपके स्वभाव में था, आप ऊंचे ऊंचे बोल बोलने और शेखी भगारने को पसंद न करते; "लोग पैगंबर के पास आए और कहा: हे अल्लाह के दूत! हे हम में श्रेष्ठतम इंसान! हे श्रेष्ठतम के सुपुत्र! हे हमारे स्वामी और हमारे स्वामी के सुपुत्र! तो आपने कहाः "ऐ लोगो! अपनी बात कहो, शैतान तुम्हें अपनी ओर आकर्षित न कर ले, मैं मुहम्मद हूँ, अल्लाह का भक्त और उसका दूत, मुझे पसंद नहीं कि जो मक़ाम मुझे अल्लाह ने दिया है तुम उससे भी ऊपर मुझे उठा दो।" (सुनन नसाई)

अपने अतिथि के भोजन में उपस्थित चीज़ों में असहजता न दिखाते और अनुपस्थित चीज़ों की मांग न करते, सहाबा[1] आप से बेपनाह प्रेम करते थे, अगर आप कुछ कहते तो वे ध्यान से सुनते थे, आप कुछ आदेश करते तो वे उसके पालन के लिए लपक पड़ते, अनस (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "सहाबा के निकट आपसे अधिक प्रिय कोई न था।" (मुस्नद अहमद)

आपने अपने अंदर सर्वोत्तम नैतिकता और शुद्धतम शिष्टाचार एकत्रित कर लिया था, इस्लाम के महान विद्वान इब्ने तैमिय्या ने कहा: "आपका एक भी झूठ साबित नहीं है, न किसी

([1]) अल्लाह के रसूल ﷺ के मोमिन साथियों को सहाबा कहा जाता है।

के साथ अन्याय और न किसी के साथ विश्वासघात; बल्कि आप सबसे सच्चे, सबसे अधिक न्यायप्रिय और अपनी वाचा के प्रति सबसे अधिक विश्वासयोग्य थे, जबकि आप पर सुरक्षा, भय, शक्ति और कमज़ोरी की भिन्न भिन्न परिस्थितियां भी आईं।"

अपने घर के सदस्यों का सम्मान करते और उनके साथ अच्छा व्यवहार करते, जब आपकी पुत्री फातिमा (रज़ियल्लाहु अनहा) आपके पास आतीं तो आप उनके लिए खड़े हो जाते और कहते "मरहबा" (स्वागत्तम) और उन्हें अपने पास बिठाते। आपका कहना था: "तुम में उत्तम वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे अच्छा हो, और मैं अपने घर वालों के लिए तुम सब से अच्छा हूँ।" (सुनन तिर्मिज़ी) ख़ुद आपके निर्माता (अल्लाह) ने आपके उच्च चरित्र की गवाही दी है:

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ﴾

निस्संदेह आप एक महान नैतिकता के शिखर पर हैं। (अल क़लम: 4)

लोगों में सबसे सुंदर और दिखने में सबसे उज्जवल और चेहरा पूर्णिमा की रात के चाँद की तरह चमकता था। बरा (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "मैंने कभी भी आपसे सुंदर कुछ नहीं देखा" (सही बुखारी)

पवित्र शरीर और अच्छी सुगंध वाले थे, अनस (रज़ियल्लाहु अनहू) कहते हैं: "मैंने कभी अल्लाह के रसूल ﷺ की सुगंध से बढ़ कर कोई अंबर, कस्तूरी और इत्र नहीं सूँघा।" (सही मुस्लिम)

आप ओजस्वी, शास्त्रीय और स्पष्ट बोली वाले थे, आपके शब्द दिलों को छू लेने वाले होते थे। आपका सारा समय अल्लाह की आज्ञाकारिता और उसकी खुशी के कामों से आबाद होता:

﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُ﴾

कहो, "मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है उसका कोई साझी नहीं है। (अल अनआम: 162)

नबी बनने से लेकर मृत्यु तक आप अपनी कौम को प्रभु की इबादत की ओर बुलाते रहे और शिर्क में पड़ने से रोकते रहे, कोई भलाई ऐसी नहीं जिसकी ओर आपने मार्गदर्शन न कर दिया हो, तथा कोई बुराई ऐसी नहीं जिस से आपने चेताया न हो।

अतः आपके मार्ग पर डटे रहो, आपके तरीके और सुन्नत को पकड़े रहो और आपके विरोध से बचो, दुनिया और आखिरत में कामयाबी मिलेगी।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾

तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालयित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है (अत तौबा: 128)

महान अल्लाह पवित्र कुरान के द्वारा मुझे और आप को बरकत दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार पर और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

हमारे नबी मुहम्मद ﷺ भी एक इंसान ही थे, आप बीमार भी होते, आपको भूख भी लगती, शोक भी होता और नींद भी आती थी, आपके पास प्रभुता या पूजनीयता का कोई गुण नहीं था, आप तो बस एक दूत थे, जो अपने प्रभु का संदेश पहुंचाते थे। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَمَن كَانَ يَرْجُوا۟ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَٰلِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدًۢا﴾

कह दो, "मैं तो केवल तुम्ही जैसा मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अतः जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए।" (अल कहफ: 110)

आपको आपके निर्धारित स्थान से ऊपर नहीं उठाना चाहिए, और न आपका रुतबा घटाना चाहिए, आपकी आज्ञाकारिता और आपके आदेश का पालन करना अनिवार्य है। फतहुल-मजीद (1) में कहा है: "रसूल ﷺ का सम्मान आपके आदेश और निषेध के सम्मान, आप के मार्गदर्शन से निर्देशित होने और आपकी सुन्नत का पालन करने से होता है।"

(1) शैख अब्दुल रहमान बिन हसन की एक पुस्तक।

आपकी आज्ञाकारिता से राहमतें उतरती है और इनाम परस्पर मिलते रहते हैं:

﴿وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾

और अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी बनो, ताकि तुमपर दया की जाए (आल इमरान: 132)

आपसे आपकी आज्ञाकारिता सहित प्यार, पुत्र और पिता के प्यार से बढ़कर है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई ईमान वाला नहीं बन सकता जब तक कि मैं उसके माता-पिता और समस्त लोगों से अधिक प्रिय न बन जाऊँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

आपकी आज्ञाकारिता से जीवन समृद्ध होता है और सभी को प्रसन्नता मिलती है। महान अल्लाह ने कहा:

﴿مَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةً طَيِّبَةً ۖ
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अन नह्ल: 97)

दोनों लोकों में भक्त की खुशी आपके मार्गदर्शन का पालन करने पर निर्भर है, इंसान उतना ही सम्मानजनक है जितना वह आपका अनुसरण करता है और सफलता आपके नक्शे-कदम पर चलने पर आधारित है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का हुक्म दिया है।

नमाज़

इस्लाम में नमाज़ की शान [1]

समस्त प्रशंसा सर्वशक्तिमान पराक्रमी अल्लाह के लिए है जो सभी विचारों और निगाहों की पहुँच से ऊपर की हस्ती है, मैं उसके उपकार के समरूप उसकी प्रशंसा करता हूँ, और ऐसा आभार व्यक्त करता हूँ जो हर वरदान को बढ़ाने वाला हो।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, जो एक है, जिसका कोई साझी नहीं, जो अद्वितीय है, बलवान है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ अल्लाह के भक्त और रसूल हैं, जो सबसे सम्मानित संदेश और सबसे स्पष्ट प्रमाण के साथ श्रेष्ठ हैं, आप अल्लाह से डरते हुए, न्यायधीश और उम्मत का सिफारिशी बनकर संदेश को लेकर आए, रहमत और शांति हो आप पर, आज्ञाकारिता में परिश्रम और तपस्या करने वाले आपके साथियों पर, तथा परिणाम दिवस तक उनके रास्ते पर चलने वालों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो, उसी की इबादत करो जिस तरह उसकी इबादत करनी चाहिए और अपनी कथनी व करनी को उसी के लिए शुद्ध करो

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने हमारे लिए सबसे सरल, तथा सबसे अधिक पुण्य वाले प्रावधान बनाए हैं और इस्लाम को कुछ नींव और स्तंभों पर स्थापित किया है, जिनमे दरार पैदा हो जाने से पूरी इमारत गिर जाती है और इस्लाम समाप्त हो जाता है।

हे अल्लाह के बंदो! इन बुनियादों और स्तंभों में से नमाज़ दूसरा स्तंभ है, यह इस्लाम का ऐसा स्तंभ है जिस पर इस्लाम कायम है, यही इस्लाम की इमारत को ऊंचा करता और उसके किनारों को स्थापित करता है।

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 12/10/1419 हिजरी को दिया गया।

पैगंबरों और रसूलों को भी नमाज़ का आदेश दिया गया था, महान अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कहा था

﴿إِنَّنِيٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدۡنِي وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكۡرِيٓ﴾

निस्संदेह मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर। (ताहा: 14)

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने प्रभु से दुआ की थी

﴿رَبِّ ٱجۡعَلۡنِي مُقِيمَ ٱلصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِيۚ﴾

मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना। (इब्राहीम: 40)

महान अल्लाह ने इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की प्रशंसा की है:

﴿وَكَانَ يَأۡمُرُ أَهۡلَهُۥ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ وَكَانَ عِندَ رَبِّهِۦ مَرۡضِيّٗا﴾

और अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था। और वह अपने रब के यहाँ प्रीतिकर व्यक्ति था। (मरयम: 55)

इसी के द्वारा ईसा (अलैहिस्सलाम) सम्मानित हुए थे, चुनांचे उन्होंने कहा था:

﴿وَأَوۡصَٰنِي بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمۡتُ حَيّٗا﴾

और (मेरे रब ने) मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की है, जब तक कि मैं जीवित रहूँ। (मरयम: 31)

इसी का आदेश महान अल्लाह ने हमारे पैगंबर मोहम्मद ﷺ को भी दिया था:

﴿أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِدُلُوكِ ٱلشَّمۡسِ إِلَىٰ غَسَقِ ٱلَّيۡلِ﴾

नमाज़ क़ायम करो सूर्य के ढलने से लेकर रात के छा जाने तक। (बनी इस्राईल: 78)

अपने बेटों के लिए अल्लाह के नेक बंदों की एक वसीयत नमाज़ होती थी:

﴿يَٰبُنَيَّ أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ وَأۡمُرۡ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَٱنۡهَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ﴾

"ऐ मेरे बेटे! नमाज़ का आयोजन कर और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक। (लुक़्मान: 17)

और समस्त ईमान वालों को भी अल्लाह ने इसी का आदेश दिया है

﴿وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱرۡكَعُواْ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ﴾

और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और (मेरे समक्ष) झुकनेवालों के साथ झुको। (अल बक़रह: 43)

यह दीन की बुनियाद और स्तंभ है, जिसने इसे खड़ा किया उसने अपने धर्म को खड़ा किया और जिसने इसे ध्वस्त किया उसने अपने धर्म को ध्वस्त कर दिया। यह ईमान का प्रमाण और सदाचार की उपाधि है, अल्लाह ने जिन दृश्यमान इबादतों को अनिवार्य किया है उनमें सबसे प्रथम यही है, क़यामत के दिन बंदों से सबसे पहले इसी का हिसाब लिया जाएगा, यही धर्म से फिरने का अंतिम पड़ाओ है, यही आदरणीय पैगंबर ﷺ की अपनी उम्मत के लिए अंतिम वसीयत है, इसको आप सबके प्रभु ने प्रत्यक्ष रूप में सात आकाशों के ऊपर से लागू किया है।

यह ऐसी इबादत है जिसमें किसी भी हाल में प्रतिनिधित्व की गुंजाइश नहीं, इसलिए कारण से हो या अकारण, कोई किसी की तरफ से इसे अदा नहीं कर सकता।

अल्लाह ने नमाज़ को अनिवार्यता देने का कार्यभार मेराज वाली रात में अपने रसूल ﷺ से संबोधन के माध्यम से स्वयं उठाया, महान अल्लाह ने अपनी पुस्तक के अंदर समस्त इबादतों के ऊपर इसे प्रधानता दी, इसे "शहादतैन" से जोड़ दिया, कभी इसे विशेष रूप में तन्हा ज़िक्र किया और कभी ज़कात के साथ जोड़ कर, नेकी के समस्त कर्मों का प्रारंभ और अंत इसी के द्वारा किया, अल्लाह ने अपनी किताब में इसे एक आम आदेश के बाद विशेष रूप से ज़िक्र किया:

﴿ٱتۡلُ مَآ أُوحِيَ إِلَيۡكَ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَۖ﴾

उस किताब को पढ़ो जो तुम्हारी ओर प्रकाशना के द्वारा भेजी गई है, और नमाज़ का आयोजन करो। (अल अंकबूत: 45)

नमाज़ में श्रेष्ठा की महानता और सृष्टि की दुर्बलता परिदृश्य होती है, नमाज़ भय के समय यंत्र है, शत्रु के सामने ढाल है, सुकून व आराम है, हृदय को शांति व संतुष्टि से भर देती है, इसी से कथन और कर्म अच्छे बनते हैं, इसका क़ियाम [1] वंदना है, रुकू [2]लाचारी का इजहार है और इसका सजदा[3] अपनी कमज़ोरी का स्पष्टीकरण है। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "नमाज़ प्रकाश है।" (सही मुस्लिम) दिल और अंतर्दृष्टि का प्रकाश, ये विचलन और बातिल (असत्य) के अंधेरे को हटा कर दिल में मार्गदर्शन और सच्चाई को डाल देती है, यह कब्र के अंधकार को रोशन करेगी और पुनरुत्थान के दिन माथे पर रोशनी बनकर चमकेगी।

नमाज़ पाप मिटाने वाली और रुतबा बुलंद करने वाली है, पैग़ंबर ﷺ फरमाते हैं: "जब किसी मुस्लिम पर फ़र्ज़ नमाज़ का समय आता है, फिर वह अच्छी तरह वज़ू, श्रद्धा और रुकू करता है तो ऐसी नमाज़ पिछले पापों का प्रायश्चित बन जाती है, जब तक वह बड़े पाप (अपराध) न करे और यह सदा के लिए है।" (सही मुस्लिम)

इसमें समर्पण, प्रार्थना, गिड़गिड़ाना, एकालाप और परम दयालू (अल्लाह) से निकटता होती है। पैग़ंबर ﷺ फरमाते हैं: "भक्त अपने प्रभु से उस समय सबसे अधिक निकट होता है जब वह सजदे में होता है।" (सही मुस्लिम)

इसे समय पर अदा करना परम न्यायधीश (अल्लाह) के निकट प्रिय कार्य है। इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अनहु) ने कहा: "मैंने अल्लाह के पैग़ंबर से पूछा: ईश्वर को कौन से कर्म सबसे प्रिय हैं? आपने कहा: नमाज़ को उसके सही समय में पढ़ना, मैंने कहा: फिर कौन सा? आपने कहा: माँ बाप के साथ अच्छा व्यवहार, मैंने कहा: फिर क्या? आपने कहा: अल्लाह के रास्ते में जिहाद।[4]" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

---

(1) क़ियाम: नमाज़ में अल्लाह के आगे अदब के साथ खड़ा होना।

(2) रुकू: नमाज़ में अल्लाह के आगे झुकना।

(3) सजदा: नमाज़ में अल्लाह के आगे दण्डवत होकर पैशानी को जमीन पर रखना।

(4) जिहाद: अल्लाह की ओर से मुहम्मद ﷺ अवतरित सत्य के रास्ते में आने वाली रुकावट को दूर करने के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई।

नमाज़ क़यामत के दिन खुशी और सुख को लाने वाली है। इब्ने मसऊद कहते हैं: ‘‘जो कोई निर्णय के दिन एक मुस्लिम के रूप में अल्लाह से मिलने का सुख प्राप्त करना चाहता है; वह इन नमाज़ों की पाबंदी करे, क्योंकि इन्हीं के द्वारा उसे बुलाया जाएगा, अल्लाह ने तुम्हारे नबी के लिए हिदायत के कुछ तरीक़े निर्धारित किए हैं और ये (नमाज़ें) हिदायत के तरीक़ों में से हैं।’’ (सही मुस्लिम)

किसी बस्ती को निवास स्थान बनाने पर वहाँ नमाज़ अदा करने के लिए मस्जिद का निर्माण ही दृढ़ संकल्प वाले लोगों का प्रमुख कार्य होता है:

﴿وَإِذۡ يَرۡفَعُ إِبۡرَٰهِـۧمُ ٱلۡقَوَاعِدَ مِنَ ٱلۡبَيۡتِ وَإِسۡمَٰعِيلُ﴾

"और याद करो जब इब्राहीम और इसमाईल (अल्लाह के) घर की बुनियादें उठा रहे थे।" (अल बक़रह: 127)

हमारे पैगंबर ﷺ भी जब हिजरत करके मदीना आए तो सबसे पहले अपनी मस्जिद के निर्माण का आरंभ किया।

हे मुसलमानो!

मनुष्य बनावट का कमज़ोर है; जल्दी घबरा जाता है और वावेला मचाने लगता है, अधिक पाप और अपराध करता है, इस जीवन में दर्द और कठिनाइयों के रास्ते पर चलता है।

﴿لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِي كَبَدٍ﴾

निस्संदेह हमने मनुष्य को पूर्ण मशक़्क़त के साथ पैदा किया। (अल बलद: 4)

जबकि नमाज़ में चीज़ें सुगम हो जाती हैं, सीने खुल जाते हैं, चिंताएं दूर और दुख ख़त्म हो जाते हैं, जीवन के मामलों और ज़रूरतों को पूरा करने में सहायता मिलती है। सो नमाज़ द्वारा कितने ही प्रकार के सुख, वरदान और आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं। पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ﴾

धैर्य और नमाज़ के माध्यम से मदद हासिल करो। (अल बक़रह: 45)

और "अल्लाह के रसूल ﷺ को जब कोई प्रमुख कार्य पेश आता (और किसी कठिनाई में पड़ जाते) तो नमाज़ का सहारा लेते।" (मुस्नद अहमद)

नमाज़ संकट में मुसलमान की शक्ति है, ये उसे धैर्य और सहनशीलता पर उभारती है, उसके संकल्प को सशक्त बनाती है, उसके दिल को मज़बूत करती है, उसकी सोच और शरीर को जीवन की व्यस्तता और काम-काज की थकान से आराम देती है। पैगंबर ﷺ कहा करते थे "हे बिलाल! नमाज़ के द्वारा हमें आराम पहुंचाओ।" (मुस्नद अहमद) ये पैगंबर ﷺ की आंखों की ठंडक थी। जब अल्लाह ने कुंवारी मरयम को पति के बिना बच्चा देने की परीक्षा में डाला तो परीक्षा की कठोरता को कम करने के लिए उन्हें नमाज़ की ओर मुख करने का आदेश दिया:

﴿يَٰمَرۡيَمُ ٱقۡنُتِي لِرَبِّكِ وَٱسۡجُدِي وَٱرۡكَعِي مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ﴾

"ऐ मरयम! पूरी निष्ठा के साथ अपने रब की आज्ञा का पालन करती रह, और सजदा कर और झुकनेवालों के साथ तू भी झूकती रह।" (आल इमरान: 43)

नमाज़ जीविका लाती और कमाई को बढ़ाती है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَأۡمُرۡ أَهۡلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصۡطَبِرۡ عَلَيۡهَاۖ لَا نَسۡـَٔلُكَ رِزۡقٗاۖ نَّحۡنُ نَرۡزُقُكَۗ﴾

और अपने घर वालों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही तुम्हें देते हैं। (ताहा: 132)

इब्ने कसीर कहते हैं: "अगर तुमने नमाज़ की पाबंदी की तो तुम्हारे पास वहाँ से जीविका आएगी जहां से तुम्हें अनुमान भी नहीं होगा।"

नमाज़ से रहमत उतरती है और दुआ कबूल होती है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَنَادَتۡهُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٞ يُصَلِّي فِي ٱلۡمِحۡرَابِ أَنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحۡيَىٰ

مُصَدِّقَۢا بِكَلِمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَسَيِّدٗا وَحَصُورٗا وَنَبِيّٗا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ﴾

तो फ़रिश्तों ने ज़करिय्या को आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था, "अल्लाह, तुझे यहया की शुभ-सूचना देता है, जो अल्लाह के एक कलिमें की पुष्टि करनेवाला, सरदार, अत्यन्त संयमी और अच्छे लोगो में से एक नबी होगा।" (आल इमरान: 39)

हे मुस्लिमो!

सफल ईमान वालों के गुण नमाज़ से शुरू होते हैं, इसकी पाबंदी से जन्नतुल फिरदौस की वरासत का अधिकार प्राप्त होता है, नमाज़ की लगातार पाबंदी करना जन्नत के सम्मानित सदस्यों का प्रथम गुण है और इसकी पाबंदी उनके गुणों का अंतिम (शिखर) भी है[1]।

नमाज़ में अल्लाह ने हर प्रकार की भलाई को अपने ओजस्वी कथन और संक्षिप्त शब्द के द्वारा एकत्रित कर दिया है:

﴿إِنَّ ٱلصَّلَوٰةَ تَنْهَىٰ عَنِ ٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ﴾

निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और बुराई से रोकती है। (अल अंकबूत: 45)

नमाज़ के साथ अश्लीलता और बुरी चीज़ बाकी नहीं रहती, ये चरित्र और स्वभाव को सुव्यवस्थित करती है, यह स्वभाव और टेढ़ेपन के बीच दीवार बन जाती है, इसी में प्रशंसनीय कार्य और उदार गुण हैं, इसे अदा करने वाले का चरित्र प्रशंसनीय होता है, इसने भिन्न-भिन्न प्रकार के फायदे लाभ और विशेषताएं एकत्रित कर दिए हैं।

हे मुस्लिमो!

नमाज़ को छोड़ना और उसके प्रति गफलत बरतना; सबसे बड़ी विपत्तियों और सबसे कुरूप दोषों में से एक है, इसे वही छोड़ता है जिसका दण्ड बढ़ चुका हो और जिस का पछतावा और शर्मिंदगी लंबा समय पार कर चुकी हो। नमाज़ का इंकार करने वाला अल्लाह से मुख फेरने वाला, इस्लाम की सीमा से निकल जाने वाला और जन्नतुल फिरदौस की वरासत और उपहारों वाली जन्नतों में सम्मानित होने से वंचित रह जाने वाला है। उसका ठिकाना नरक है, और तुम्हें क्या पता कि नरक कितनी भयानक जगह है।

---

(1) कुरान में सूरह अल-मूमिनून की प्राथमिक आयतों की ओर इशारा है।

जो एक पूज्य प्रभु को सजदा करने वालों में से नहीं होगा उसे अल्लाह आग में भस्म करेगा, पैग़ंबर ﷺ फरमाते हैं: "जहन्नम की आग आदम पुत्र के पूरे शरीर को खा जाएगी सिवाय सजदे के चिन्ह के।" पैगंबर ﷺ फरमाते हैं: "एक (मुस्लिम) व्यक्ति और बहुदेववाद व अविश्वास के बीच की चीज़ नमाज़ को छोड़ना है।" (सही मुस्लिम)

इस्लाम के महान विद्वान (इब्ने तैमियह) कहते हैं: "जब बालिग़ (वयस्क) व्यक्ति पांच नमाज़ो में से किसी एक नमाज़ से रुक जाता है, तो (इस्लामी अदालत की ओर से) उससे तौबा की मांग की जाएगी, अगर वह तौबा कर ले तो ठीक है, वरना उसे कत्ल कर दिया जाएगा।" इब्नुल-क़य्यिम कहते हैं: "मुसलमानों का इस बात पर कोई मतभेद नहीं है कि जानबूझकर फर्ज़ नमाज़ छोड़ना महापाप और बड़े अपराधों में से एक है, अल्लाह के निकट इसका पाप किसी की हत्या करने, धन लूटने, व्याभिचार करने और शराब पीने से भी बड़ा है और ऐसा व्यक्ति दुनिया और आखिरत में सज़ा, क्रोध और अपमान का सामना करने वाला है।" जिसने भी नमाज़ छोड़ी वह दुर्भाग्य हुआ और जिसने अदा की वह सफल और कामयाब हुआ।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱرۡكَعُواْ وَٱسۡجُدُواْۤ وَٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمۡ وَٱفۡعَلُواْ ٱلۡخَيۡرَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ﴾

ऐ ईमान लानेवालो! झुको और सजदा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भलाई करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो। (अल हज: 77)

अल्लाह मुझे और आप सबको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो विपरीतों और सहकर्मियों से ऊपर है, जो पत्नी और संतान से पाक है, मैं उसके प्रचुर अनुग्रहों के लिए उसकी प्रशंसा करता हूँ।

मैं गवाही देता हूँ कि कोई पूज्य नहीं है सिवाय उस अकेले अल्लाह के जिसका कोई साझी नहीं, ऐसी गवाही जो बहुदेववाद और गुमराही की अशुद्धता से पाक है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैगंबर मुहम्मद ﷺ अल्लाह के भक्त और दूत हैं, जो चुने हुए नबी और पसंद किए गए पैगंबर हैं, जो दया और मार्गदर्शन के साथ भेजे गए। ईश्वर का आशीर्वाद हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर जो मार्गदर्शन के इमाम और अंधकार में पूर्णिमा के चांद थे।

प्रशंसा व सलाम के बाद, हे मुस्लिमो!

महान अल्लाह ने ईमान वालों को जमात के साथ (सामुहिक रूप से) नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱرۡكَعُواْ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ﴾

और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और (मेरे समक्ष) झुकनेवालों के साथ झुको। (अल बक़रह: 43)

महान अल्लाह ने ईमान वालों को जिहाद की स्तिथि में भी नमाज़ का आदेश दिया है, भले ही दुश्मन उनके सामने हो। अल्लाह के पैग़ंबर ﷺ ने नमाज़ में पीछे रहने की छूट उस अंधे व्यक्ति को भी नहीं दी थी जिसके पास चलने में साथ देने वाला कोई मार्गदर्शक भी नहीं था।

जमाअत की नमाज़ से मूर्ख सीखता है, ग़फ़लत में पड़ा व्यक्ति नसीहत लेता है और इसी के माध्यम से मुसलमान अल्लाह के प्रेम, उसकी इबादत, उसके लिए समर्पण और उसके सामने लाचारी प्रस्तुत करने में एक दूसरे की सहायता करते हैं, फिर उनके दिल विनम्र हो जाते

हैं और उनकी पंक्तियां जुड़ जाती हैं। अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: "आदम पुत्र के कान में पिघला हुआ सीसा डाल दिया जाना; "हय्या अलस्सलाह, हय्या अल अलफलाह" (आओ नमाज़ की ओर, आओ कामयाबी की ओर) [1] को सुनकर उसका उत्तर न देने से बेहतर है।" इब्नुल-क़य्यिम कहते हैं: "नमाज़ से जुड़ी छ आदतें निफाक़ (दोगलापन) की निशानियाँ हैं: नमाज़ के लिए खड़े होते समय सुस्ती करना, उसमें दिखावा करना, उसको विलंब करना, चिड़िया के चोंच मारने की तरह रुकू सजदा करना, उसमें अल्लाह का जिक्र कम करना और उसकी जमाअत से पीछे रह जाना।"

हे मुस्लिमो!

यह अल्लाह की उदारता है कि जो व्यक्ति मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ की पाबंदी करता है अल्लाह उसके पुण्य में कई गुना बढ़ोतरी करता है; अत: "जो व्यक्ति इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ता है वह ऐसा है जैसे उसने आधी रात तक नमाज़ पढ़ी और जो फज्र की नमाज़ भी जमाअत के साथ पढ़ता है वह ऐसा है जैसे उसने पूरी रात नमाज़ पढ़ी।" और "जो सुबह शाम मस्जिद जाता है; तो जब जब भी वो जाता है अल्लाह उसके लिए जन्नत में अतिथि सत्कार तय्यार करता है।"

विपत्ति के बावजूद अच्छी तरह वुज़ू करना, मस्जिदों के लिए अधिकाधिक कदम चलना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना; ऐसी पहरेदारी है जिसके माध्यम से अल्लाह पापों को मिटाता है और दर्जे बढ़ाता है। जो कोई अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर निर्धारित फर्ज़ नमाज़ के लिए जाता है और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ता है; उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। जो व्यक्ति अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर मस्जिद की तरफ निकलता है और मस्जिद की तरफ निकलने का कारण सिर्फ नमाज़ पढ़ना ही होता है; तो ऐसा व्यक्ति जब जब कोई कदम उठाता है, उसका एक दर्जा बुलंद होता है और एक गुनाह माफ कर दिया जाता है, फिर जब वह नमाज़ पढ़ता है तो जब तक वह नमाज़ के स्थान पर रहता है; फरिश्ते उसके लिए बराबर अनुग्रहों और अनुकंपाओं की प्रार्थना करते हैं और नमाज़ के लिए बढ़ने वाले हर कदम के बदले सदका है।

([1]) अज़ान के दो बोल।

इन जैसे उपहारों का वादा उस व्यक्ति के लिए है जो मुस्लिमों के साथ नमाज़ कायम करता है, लिहाज़ा महान अल्लाह की स्तुति करो कि उसने तुम्हें इन उपहारों की ओर मार्गदर्शित किया और अपनी सृष्टि में से तुम्हें इन प्रशंसनीय कर्मों के लिए विशेषता दी।

हे अल्लाह के भक्तो!

वही पिता वास्तव में अपने बच्चों के प्रति दयालु और अपने परिवार के प्रति मेहरबान होता है जो नमाज़ के लिए उठने में उनकी सहायता करता है; अत: घर से नमाज़ के लिए निकलते समय ऐसा होना चाहिए कि तुम्हारे पुत्र भी तुम्हारे सामने, दाएं बाएं और आसपास अल्लाह के घर और अनुकंपा की जगहों की ओर एक-दूसरे से आगे बढ़ने में लगे हों।

सो अपने धर्म के मामले में आमतौर पर और अपनी नमाज़ के मामले में विशेष रूप से अल्लाह से डरते रहो; क्योंकि इसका स्थान महान और इसकी शान विशाल है, इसलिए इसमें रूचि लेते हुए और अपने रब की आज्ञाकारिता करते हुए इसकी ओर लपको।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

इस्लाम धर्म में नमाज़ का स्थान[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, अल्लाह कि ओर से अधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जिस तरह डरना चाहिए, क्योंकि धर्मपरायणता दृश्यमान चीज़ों में सबसे सुंदर और अदृश्य चीज़ों में सबसे सम्मानीय है।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के निकट सबसे महान कार्य इबादत में उसे एक मानना है, इसके जैसी कोई दूसरी चीज नहीं जिसके माध्यम से भक्त अल्लाह से निकटवर्ती प्राप्त करता है। तौहीद (एकेश्वरवाद) के बाद सबसे उत्तम आज्ञाकारिता इस्लाम का दूसरा स्तंभ है, जिसमें अल्लाह का ज़िक्र, उसकी महिमा, उसके सामने अपनी लाचारी और समर्पण कि प्रस्तुति है, अल्लाह ने इस का नाम ही ईमान रखा है, सो उसने कहा:

﴿وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَٰنَكُمْ﴾

और अल्लाह ऐसा नहीं कि वह तुम्हारे ईमान (नमाज़) को बेकार कर दे। (अल बक़रह: 143)

यह इस्लाम की बुनियाद है और अल्लाह की पवित्र पुस्तक में अनदेखे (गैब) पर ईमान

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 27/05/1435 हिजरी को दिया गया।

के बाद परहेज़गारों का सबसे पहला गुण इसी को बताया गया है, यह नबी की आंखों की ठंडक है, इसी के साथ पैगंबर ﷺ अपने प्रचारकों को विभिन्न नगरों में भेजते थे, पैगंबर ﷺ ने मुआज़ (रज़ियल्लाहु अनहु) से कहा था:

"सबसे पहले उन्हें अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना। अगर वे अल्लाह को पहचान लें तो उन्हें बताना कि अल्लाह ने उनपर दिन एवं रात में पाँच नमाजें फ़र्ज़ (अनिवार्य) की हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

पैगंबर ﷺ तौहीद के बाद नमाज़ की पाबंदी की शर्त लगाते; क्योंकि ये शारीरिक इबादतों का प्रमुख है, जीवन के अंतिम पड़ाव में आप ﷺ ने अपनी उम्मत को इसी की वसीयत फरमाई थी: "नमाज़ की पाबंदी करना, नमाज़ की पाबंदी करना और जो तुम्हारे मातहत दास दासी हैं उनका खयाल रखना।" (मुस्नद अहमद)

जिसने इसे पूरा किया वह अपने धर्म पर आधारित रहा और जिसने इसे खो दिया वह दूसरी इबादतों को अधिक खोने वाला हुआ, यह उस व्यक्ति के लिए जो पहले मुश्रिक (बहुदेववादी) था फिर मुस्लिम हो गया, एक सुरक्षा है:

﴿فَإِن تَابُوا۟ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ فَخَلُّوا۟ سَبِيلَهُمْ﴾

फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। (अल तौबा: 5)

इसी में खून (प्राण) और धन की रक्षा है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से युद्ध लड़ता रहूँ यहाँ तक कि वे इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें। अगर उन्होंने ऐसा कर लिया तो अपनी जान तथा माल को, इस्लाम के अधिकार के सिवा, हमसे सुरक्षित कर लिया और उनका हिसाब अल्लाह पर है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नमाज़ धार्मिक भाईचारे का माध्यम है:

﴿فَإِن تَابُوا۟ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ فَإِخْوَٰنُكُمْ فِى ٱلدِّينِ ۗ﴾

अतः यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वे धर्म के भाई हैं। (अल तौबा: 11)

नमाज़ के महान मूल्य और अन्य सभी कार्यों से अलग होने के कारण ही; अल्लाह ने इसे अपने नबियों और दूतों पर अनिवार्य बनाया। उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब (अलैहिस्सलाम) की ओर इसे स्थापित करने कि प्रकाशना की, फ़रमाया:

﴿وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ ۖ﴾

और हमने उनकी ओर नेक काम करने, नमाज़ की पाबन्दी करने और ज़कात देने की प्रकाशना की। (अल अंबिया: 73)

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने प्रभु से दुआ की कि उनकी संतान नमाज़ की पाबंदी करने वाली हो, और अल्लाह ने नमाज़ का ध्यान रखने के कारण ही इस्माइल (अलैहिस्सलाम) की प्रशंसा की, चुनांचे फ़रमाया:

﴿وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُۥ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ وَكَانَ عِندَ رَبِّهِۦ مَرْضِيًّا﴾

और वो अपने घर के सदस्यों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था। और वह अपने रब के यहाँ प्रीतिकर व्यक्ति था। (मरयम: 55)

अल्लाह ने पैग़ंबर मूसा (अलैहिस्सलाम) पर तौहीद के बाद सबसे पहले नमाज़ स्थापित करने को ही अनिवार्य किया, अत: इन दोनों के बारे में अल्लाह ने बिना किसी माध्यम के उनसे बात की:

﴿إِنَّنِىٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ﴾

निस्संदेह मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तू मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर। (ताहा: 14)

अल्लाह ने मूसा और हारून (अलैहिस्सलाम) को इसी की प्रकाशना की कि वह अपनी क़ौम को नमाज़ का हुक्म दें:

﴿وَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّءَا لِقَوۡمِكُمَا بِمِصۡرَ بُيُوتٗا وَٱجۡعَلُواْ بُيُوتَكُمۡ قِبۡلَةٗ وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَۗ﴾

हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि "तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्र में कुछ घर निश्चित कर लो और अपने घरों को क़िबला बना लो। और नमाज़ क़ायम करो।" (यूनुस: 87)

ज़करिय्या (अलैहिस्सलाम) इस की बराबर पाबंदी किया करते थे

﴿فَنَادَتۡهُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٞ يُصَلِّي فِي ٱلۡمِحۡرَابِ﴾

तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था। (आल इमरान: 39)

दाऊद (अलैहिस्सलाम) को नमाज़ से बहुत प्रेम था, वो एक तिहाई रात नमाज़ में खड़े रहते। जब शुऐब (अलैहिस्सलाम) कि क़ौम ने अपने पैगंबर को तौहीद की ओर बुलाते और नमाज़ को प्रधानता देते देखा तो उनसे कहा:

﴿أَصَلَوٰتُكَ تَأۡمُرُكَ أَن نَّتۡرُكَ مَا يَعۡبُدُ ءَابَآؤُنَآ أَوۡ أَن نَّفۡعَلَ فِيٓ أَمۡوَٰلِنَا مَا نَشَٰٓؤُاْۖ﴾

"ऐ शुऐब! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि हम उन्हें छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं या यह कि हम अपने माल का उपभोग अपनी इच्छानुसार न करें? (हूद: 87)

इसी के बारे में ईसा (अलैहिस्सलाम) ने मां की गोद में बात की थी

﴿وَأَوۡصَٰنِي بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمۡتُ حَيّٗا﴾

और अल्लाह ने मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ। (मरयम: 31)

अल्लाह ने पैगंबरों (अलैहिस्सलाम) की प्रशंसा की और कहा:

﴿إِذَا تُتۡلَىٰ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتُ ٱلرَّحۡمَٰنِ خَرُّواْۤ سُجَّدٗا وَبُكِيّٗا﴾

जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सजदा करते और रोते हुए गिर पड़ते थे। (मरयम: 58)

बनी-इस्राइल से नमाज़ अदा करने कि शपथ ली गई:

﴿وَلَقَدۡ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ وَبَعَثۡنَا مِنۡهُمُ ٱثۡنَيۡ عَشَرَ نَقِيبٗاۖ وَقَالَ ٱللَّهُ إِنِّي مَعَكُمۡۖ لَئِنۡ أَقَمۡتُمُ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

अल्लाह ने इसराईल की सन्तान से वचन लिया था और हमने उनमें से बारह सरदार नियुक्त किए थे। और अल्लाह ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुमने नमाज़ क़ायम रखी। (अल माइदह: 12)

लुकमान ने अपने बेटे को इसी की वसीयत की थी:

﴿يَٰبُنَيَّ أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

"ऐ मेरे बेटे! नमाज़ का आयोजन करो (लुक़मान: 17)

महान अल्लाह ने हमसे पहले उम्मतों को इसी का आदेश दिया था:

﴿وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी करे निष्ठा एवं विनयशीलता को उसके लिए विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़ की पाबन्दी करें। (अल बय्यिनह: 5)

महान प्रभु ने हमारे पैग़ंबर मोहम्मद ﷺ को भी इसी का आदेश दिया, फ़रमाया:

﴿وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ طَرَفَيِ ٱلنَّهَارِ وَزُلَفٗا مِّنَ ٱلَّيۡلِۚ﴾

और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्से में। (हूद: 114)

और इस उम्मत से कहा:

﴿وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

और नमाज़ क़ायम करो। (अल बक़रह: 43)

हमें भय और शांति, सफर और घर और बीमारी और स्वास्थ्य की हर हालत में नमाज़ का आदेश दिया गया है, ये मासिक धर्म वाली और प्रसवोत्तर महिलाओं के अलावा, कभी भी किसी भी दायित्वबोध बंदे से माफ नहीं होती। बच्चे को सात साल की आयु में नमाज़ अदा करने का हुक्म दिया जाएगा और जो दस वर्ष की आयु को पहुंच जाएं उसे इस पर मारा भी जाएगा। पैग़ंबर ﷺ इशा से पहले सोने को नापसंद करते थे (कहीं इशा कि नमाज़ पढ़े बिना ही नींद न आजाए) और इशा की नमाज़ के बाद बात करने को भी नापसंद करते थे (कहीं जागने से फ़जर कि नमाज़ न छूट जाए) (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह ने अपने ईमान वाले बंदों की कुछ गुणों के साथ प्रशंसा की है जिन का प्रारंभ नमाज़ से होता है

﴿قَدۡ أَفۡلَحَ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ۞ ٱلَّذِينَ هُمۡ فِي صَلَاتِهِمۡ خَٰشِعُونَ﴾

सफल हो गए ईमानवाले जो अपनी नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं। (अल मूमिनून: 2)

और उन गुणों का अंत भी नमाज़ से ही किया:

﴿وَٱلَّذِينَ هُمۡ عَلَىٰ صَلَوَٰتِهِمۡ يُحَافِظُونَ﴾

और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं। (अल मूमिनून: 9)

नमाज़ अल्लाह के निकट सबसे प्रिये कामों में से एक है, पैगंबर ﷺ से पूछा गया कि कौन सा कार्य अल्लाह के निकट सबसे प्रिये है? तो आपने फ़रमाया: नमाज़ को उसके समय में पढ़ना, फिर पूछा गया: फिर कौन सा कार्ये? तो आपने फ़रमाया: फिर माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इब्ने हजर कहते हैं: "नमाज़ों की

पाबंदी करने और उन्हें उनके समय पर अदा करने और माता-पिता के साथ अच्छे व्यवहार की पाबंदी करने पर सब्र करना अकर्मक, आवर्ती और स्थायी चीज़ है, केवल सच्चे लोग ही उसके आर में अल्लाह के आदेश का ध्यान रखने में धैर्य रख सकते हैं।

अल्लाह ने इसे आसमान में फर्ज़ करके दूसरी इबादतों के ऊपर इसे विशेषता दी है, अपने पैगंबर मोहम्मद ﷺ से इसके बारे में प्रत्यक्ष रूप से बात की, नमाज़ की संख्या तो पांच है लेकिन पुण्य के हिसाब से ये पचास हैं। शरीर वस्त्र और स्थान की पवित्रता के बिना नमाज़ स्वीकार्य नहीं, नमाज़ की हालत में हरकत करना, खाना और बात करना वर्जित है, यह चीज़ें नमाज़ के अलावा दूसरी इबादतों में नहीं पाई जातीं; क्योंकि नमाज़ में भक्त एक महान प्रभु से वार्तालाप कर रहा होता है, तो उस महान हस्ती के साथ वार्तालाप में वह किसी और को सम्मिलित नहीं कर सकता, और अल्लाह नमाज़ पढ़ने वाले के मुख की ओर होता है। भक्त सजदे कि हालत में अल्लाह के सबसे निकट होता है।

नमाज़ अदा करना जन्नत में प्रवेश करने और अल्लाह के पवित्र मुख का दर्शन करने के कारणों में से एक है, पैगंबर ﷺ फरमाते हैं: "निसंदेह तुम सब अपने प्रभु का दर्शन करोगे जैसे तुम इस चांद का दर्शन करते हो, उसके दर्शन में तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। इसलिए अगर तुम सुस्ती से पराजित न हो कर सूर्य के उगने और डूबने से पहले की नमाज़ पढ़ सकते हो; तो अवश्य पढ़ा करो। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इब्ने रजब कहते हैं: "जन्नत में सबसे उत्तम चीज़ महान अल्लाह का दर्शन है और दुनिया में सबसे सम्मानजनक कर्म (फज्र और अस्र की) दो नमाज़ें हैं, इन दोनों की पाबंदी करने से जन्नत में प्रवेश और जन्नत में अल्लाह के दर्शन की उम्मीद की जा सकती है।"

नमाज़ का पुण्य उसकी अदायगी से पहले भी बहुत बड़ा है, चुनांचे वुज़ू पापों को धो देता है, और "जो व्यक्ति सुबह शाम मस्जिद जाता है; तो जब जब भी वो जाता है अल्लाह उसके लिए जन्नत में अतिथि सत्कार तय्यार करता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नमाज़ की ओर उठने वाला आपका हर कदम एक नेकी (पुण्य) है, उससे अल्लाह के निकट आपका एक दर्जा बुलंद होता है और दूसरे कदम से पाप गिर जाता है, "जो मस्जिद में प्रवेश करता है; फरिश्ते उसके लिए वुज़ू टूटने तक दुआ करते रहते हैं और कहते हैं: हे

अल्लाह! उसको क्षमा कर, हे अल्लाह! उस पर दया कर।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) फरिश्तों की दुआ के साथ साथ, नमाज़ की प्रतीक्षा करने वाले को नमाज़ की प्रतीक्षा करने तक, नमाज़ में ही लिखा जाता है, और नमाज़ के बीच भी वो क्षमा के झोंकों में रहता है: "जिसका आमीन कहना फरिश्तों के आमीन कहने के साथ मिल जाता है; उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

नमाज़ अदा करने के बाद का ज़िक्र भी गुनाहों को मिटा देता है, तो जो व्यक्ति नमाज़ के बाद तैंतीस बार "सुबहानल्लाह" (अल्लाह की ज़ात पवित्र है) तैंतीस बार "अलहम्दुलिल्लाह" (समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है) और चौंतीस बार "अल्लाहु अकबर" (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहता है; तो उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। जो अल्लाह की मस्जिदों को तक़्वा (धर्मपरायणता) सहित नमाज़ से आबाद करता है वह ईमान वालों में से होता है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

अल्लाह की मस्जिदों का प्रबंधक और उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे। (अल-तौबह: 18)

"जो व्यक्ति जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ता वह ऐसा है जैसे उसने आधी रात तक नमाज़ पढ़ी, और जो व्यक्ति सुबह की नमाज़ भी जमाअत के साथ पढ़ता है वह ऐसा है जैसे उसने पूरी रात नमाज़ पढ़ी।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

नमाज़ कम समय में क्षमा प्रार्थी का महान द्वार है, जिसकी तुलना नबी ﷺ ने नदी के साथ की है, चुनांचे फ़रमाया: "तुम्हारा क्या विचार है कि यदि तुममें से किसी के द्वार पर एक नदी बहती हो और वह उसमें प्रत्येक दिन पाँच बार स्नान करता हो; तो क्या उसके शरीर में मैल का कोई अंश बचेगा?" सहाबा ने कहा: उसके शरीर में मैल का कोई अंश नहीं बचेगा। तो फ़रमाया: यही पाँच नमाज़ों का उदाहरण है। इनके माध्यम से अल्लाह गुनाहों को मिटा देता है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जब भी किसी मुस्लिम व्यक्ति पर फर्ज़ नमाज़ का समय आता

है, फिर वह उसके वुज़ू, विनम्रता और रुकू को अच्छी तरह अंजाम देता है, तो यह उसके पहले के पापों का प्रायश्चित हो जाता है जब तक वह बड़ा अपराध न करे, और यह उम्र भर बराबर जारी रहता है।" (सही मुस्लिम)

नमाज़ के दुनियावी लाभ भी अनगिनत हैं, यह सुख लाने वाली, जीविका को खोलने और उसे सरल बनाने वाली है, नमाज़ के कारण अच्छे परिणाम होते हैं, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَأۡمُرۡ أَهۡلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصۡطَبِرۡ عَلَيۡهَاۖ لَا نَسۡـَٔلُكَ رِزۡقٗاۖ نَّحۡنُ نَرۡزُقُكَۗ وَٱلۡعَٰقِبَةُ لِلتَّقۡوَىٰ﴾

और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश करो और स्वयं भी उसपर जमे रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते। रोज़ी हम ही तुम्हें देते हैं। (ताहा: 132)

नमाज़ बुराईयों को हटाने वाली और हर भलाई को आमंत्रित करने वाली है, पैग़ंबर ﷺ फरमाते हैं: "जो सुब्ह की नमाज़ पढ़ता है वह अल्लाह के संरक्षण में रहता है।" (सही मुस्लिम)

इब्नुल-क़य्यिम कहते हैं: "इस संसार की बुराइयों को दूर करने में नमाज़ का एक चमत्कारिक प्रभाव है, विशेष रूप से उस समय जब नमाज़ को बाहर और अंदर से सम्पूर्ण रूप से अदा करते हुए उसे उसका हक दे दिया जाए; सो नमाज़ जैसे किसी और माध्यम से बुराइयों को दूर नहीं किया जा सकता, न हितों को प्राप्त किया जा सकता है।" उन्होंने कहा है: "शरीर और हृदय के स्वास्थ्य को बनाए रखने, उन्हें मजबूत करने और उनसे ख़राब पदार्थों को दूर रखने में नमाज़ का अद्भुत प्रभाव है। जब भी दो व्यक्ति अपंगता रोग संकट या विपत्ति से पीड़ित होते हैं; उनमें नमाज़ पढ़ने वाले का हिस्सा कम होता है और उसका परिणाम अधिक सुरक्षित होता है।"

तौहीद और नमाज़ की तरह किसी और माध्यम से विपत्ति नहीं टल सकी, अल्लाह ने यूनुस (अलैहिस्सलाम) को मछली के पेट से नमाज़ के कारण ही मुक्ति दी:

﴿فَلَوۡلَآ أَنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلۡمُسَبِّحِينَ ۞ لَلَبِثَ فِي بَطۡنِهِۦٓ إِلَىٰ يَوۡمِ يُبۡعَثُونَ﴾

अब यदि वह तस्बीह करने वाला ना होता तो उसी के भीतर उस दिन तक पड़ा रह

जाता जबकि लोग उठाये जाएंगे। (अल साफ़्फ़ात: 143)

दाऊद (अलैहिस्सलाम) की परीक्षा ली गई तो तौबा करने के लिए क्षमा प्रार्थी के साथ नमाज़ के बिना दूसरा माध्यम ना पा सके:

﴿فَٱسۡتَغۡفَرَ رَبَّهُۥ وَخَرَّ رَاكِعٗا وَأَنَابَ ۩﴾

अतः उसने अपने रब से क्षमा-याचना की और झुककर (सीधे सजदे में) गिर पड़ा और रुजू हुआ। (साद: 24)

जब अल्लाह ने मरयम (अलैहिस्सलाम) को बिना पति बच्चा जन्म देने की परीक्षा में डालने की इच्छा की तो उनके मामले को आसान करने के लिए उन्हें नमाज़ का आदेश दिया:

﴿يَٰمَرۡيَمُ ٱقۡنُتِي لِرَبِّكِ وَٱسۡجُدِي وَٱرۡكَعِي مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ﴾

"ऐ मरयम! पूरी निष्ठा के साथ अपने रब की आज्ञा का पालन करती रह, और सजदा कर और झुकनेवालों के साथ तू भी झूकती रह।" (आल इमरान: 43)

पैग़ंबर ﷺ के सामने जब कोई मामला दरपेश होता तो आप फौरन नमाज़ की ओर लपकते थे।

अल्लाह ने ईमान वालों को हर स्थिति में नमाज़ द्वारा सहायता प्राप्त करने का आदेश दिया है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾

ऐ ईमान लानेवालो! धैर्य और नमाज़ से मदद प्राप्त करो। निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो धैर्य और दृढ़ता से काम लेते है। (अल बक़रह: 153)

जब संसार के किसी काम को लेकर चिंता होती है; तो हम इस्तिखारे की नमाज़ के माध्यम से अल्लाह की ओर बढ़ते हैं, जब ब्रह्मांड का क्रम बदल जाता है तो हम ग्रहण की नमाज़ के माध्यम से अल्लाह का सहारा लेते हैं और खुशी में हम सजदा करके अल्लाह के प्रति उसके प्रदान पर आभार व्यक्त करते हैं। नमाज़ पैग़ंबर ﷺ के आभार व्यक्त करने का विशाल द्वार होती थी, जब आप नमाज़ पढ़ते तो इतनी देर तक खड़े होते कि आपके पैर फट

जाते, आयशा (रज़ियल्लाहु अनहा) ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! आप ऐसा क्यों करते हैं जबकि अल्लाह ने आपके अगले-पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए हैं? तो फ़रमाया: क्या मुझे यह अच्छा नहीं लेगगा कि मैं शुक्रगुज़ार बंदा बनूँ? (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

आखिरत (परलोक) में नमाज़ समस्त कार्यों से आगे रहेगी और पुनरुत्थान के दिन भक्तों से सबसे पहले हिसाब इसी का लिया जाएगा और नमाज़ ही पैग़ंबर ﷺ की संगत के कारणों में से एक है, एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल के पास आया और कहा कि मुझे जन्नत में आपकी संगत चाहिए, तो आपने फ़रमाया : "तुम अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अधिक से अधिक सजदों द्वारा मेरी मदद करो।" (सही मुस्लिम)

सजदे के द्वारा ही ईमान वाले मुनाफिक़ों से अलग होंगे, अतः जब ईमान वाले अपने रब को देखेंगे तो उसके आगे सजदे में गिर जाएंगे और जब मुनाफ़िक़ों को सजदा करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा तो वे दण्डित होने के उपलक्ष असमर्थ होंगे। पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿يَوۡمَ يُكۡشَفُ عَن سَاقٖ وَيُدۡعَوۡنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ فَلَا يَسۡتَطِيعُونَ﴾

जिस दिन पिंडली खुल जाएगी और वे सजदे के लिए बुलाए जाएँगे, तो वे (सजदा) न कर सकेंगे। (अल क़लम: 42)

अगर कोई मुस्लिम अपने पापों के कारण जहन्नम में प्रवेश करेगा तो आग उसके सजदे के स्थानों को नहीं छुएगी।

नमाज़ एक महान दायित्व है जिसे अल्लाह ने अविश्वास (कुफ्र) और विश्वास (ईमान) के बीच चिन्ह बनाया है। पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "एक आदमी और शिर्क (बहुदेववाद) व कुफ्र (अविश्वास) के बीच की चीज़ केवल नमाज़ छोड़ना है।" (सही मुस्लिम)

इसे ज़ाया करने वालों को सर्वशक्तिमान प्रभु ने नरक की चेतावनी दी है, फ़रमाया:

﴿فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ أَضَاعُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَٱتَّبَعُواْ ٱلشَّهَوَٰتِۖ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا﴾

फिर उनके पश्चात ऐसे बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने नमाज़ को गँवाया

और मन की इच्छाओं के पीछे पड़े। अतः जल्द ही वे गुमराही (के परिणाम) से दोचार होंगे। (मरयम: 59)

अविश्वासियों से कहा गया:

﴿مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ۞ قَالُوا۟ لَمْ نَكُ مِنَ ٱلْمُصَلِّينَ﴾

तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले आई? वे कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से नहीं थे। (अल मुद्दस्सिर: 42-43)

उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अनहु) ने फ़रमाया: "जिसने नमाज़ छोड़ दी उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं।"

फिर हे मुस्लिमो!

नमाज़ की रक्षा करना और अपने परिवार को इसका आदेश देन हर दायित्वबोध व्यक्ति पर अनिवार्य है, यही पैग़ंबरों का दृष्टिकोण है, यह अल्लाह की प्रसन्न करने वाली, पापों को मिटाने वाली, दर्जे बुलंद करने वाली, सभी अच्छाइयों को एकत्रित करने वाली और सभी बुराईयों से रोकने वाली है, इसमें भली स्थिति, अच्छा परिणाम, खुशहाली, सुख, जीवन की समृद्धि, धन का आशीर्वाद, घरों की सुरक्षा और संतान की भलाई है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण मांगता हूँ

﴿أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِدُلُوكِ ٱلشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ ٱلَّيْلِ وَقُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ ۖ
إِنَّ قُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا﴾

नमाज़ क़ायम करो सूर्य के ढलने से लेकर रात के छा जाने तक और फ़ज्र (प्रभात) के क़ुरआन (फ़ज्र की नमाज़) के पाबन्द रहो। निश्चय ही फ़ज्र का क़ुरआन पढ़ना हुज़ूरी की चीज़ है (उसमें फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं)। (बनी इस्राइल: 78)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने पुरुषों पर मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने को अनिवार्य किया है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَٱرْكَعُوا۟ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ﴾

और (मेरे समक्ष) झुकनेवालों के साथ झुको। (अल बक़रह: 43)

पैग़ंबर ﷺ ने जमाअत की नमाज़ से पीछे रहने वालों के घरों को जलाने की इच्छा ज़ाहिर की थी, फ़रमाया: "मुनाफिक़ों पर सबसे भारी नमाज़ इशा और फज्र की नमाज़ है, अगर वे जान लेते कि इन दोनों नमाज़ों का कितना पुण्य है; तो वह इनके लिए घुटनों के बल चल कर भी आते, मेरी इच्छा है कि मैं नमाज़ खड़ी करने का आदेश दूं, फिर मैं एक व्यक्ति को लोगों की इमामत के लिए कहूँ और कुछ लोगों को साथ लेकर, जिनके पास लकड़ी की गठरी हो, ऐसे लोगों के पास जाऊँ जो जमाअत की नमाज़ में उपस्थित नहीं होते फिर उनके घरों में आग लगा दूं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

पैग़ंबर ﷺ ने अंधे व्यक्ति को भी जिसको कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं था, जमाअत की नमाज़ से पीछे रहने की छूट नहीं दी, बल्कि उससे कहा: क्या तुम अज़ान सुनते हो? उसने कहा कि हां, तो आपने कहा: तो फिर उसका जवाब दो। (सही मुस्लिम)

सो नमाज़ की ओर लपको नमाज़ की ओर दौड़ो, क्योंकि नमाज़ चेहरे का प्रकाश है,

ईमान का प्रमाण है, इसी से सीना खुलता है और गरिमा बुलंद होती है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

समूह के साथ नमाज़ की अनिवार्यता[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपनी सृष्टि को आदेश दिया है कि इबादत में उसको एक माना जाए, तौहीद (एकेश्वरवाद) के बिना कोई भी कार्य स्वीकार्य नहीं है, फिर एकेश्वरवाद के बाद एक इबादत को दूसरे स्थान पर रखा है, उसका चर्चा बहुत अधिक किया है और रसूलों को उसका आदेश दिया है, सो मूसा (अलैहिस्सलाम) से कहा:

﴿وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكۡرِيٓ﴾

और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर। (ताहा: 14)

ईसा (अलैहिस्सलाम) कहते हैं

﴿وَأَوۡصَٰنِي بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمۡتُ حَيّٗا﴾

और अल्लाह ने मुझे नमाज़ और ज़कात की वसीयत की है, जब तक भी मैं जीवित

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 04 /08 /1431 हिजरी को दिया गया।

रहूँ। (मरयम: 31)

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने प्रभु से दुआ की कि वह और उनकी संतान नमाज़ अदा करने वाले बनें:

﴿رَبِّ ٱجْعَلْنِى مُقِيمَ ٱلصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِى﴾

मेरे रब! मुझे और मेरी संतान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना। (इब्राहीम: 40)

प्रभु ने इस्माईल (उनपर शांति हो) की प्रशंसा की क्योंकि वो अपने परिवार को नमाज़ का आदेश देते थे:

﴿وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُۥ بِٱلصَّلَوٰةِ﴾

और इस्माईल अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म देते थे। (मरयम: 55)

यह उसी शपथ का हिस्सा है जो पहले की उम्मतों से ली गई थी:

﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَقُولُوا۟ لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

और याद करो जब इसराईल की संतान से हमने वचन लिया: "अल्लाह के अतिरिक्त किसी की पूजा न करोगे; माँ-बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे; और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो। (अल बक़रह: 83)

यह हकीम लुक़मान (अलैहिस्सलाम) की वसीय्यतों में से एक है:

﴿يَٰبُنَىَّ أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ﴾

"ऐ मेरे बेटे! नमाज़ का आयोजन कर।" (लुक़मान: 17)

और इस उम्मत को ही इसकी पाबंदी का आदेश दिया गया:

﴿حَٰفِظُواْ عَلَى ٱلصَّلَوَٰتِ وَٱلصَّلَوٰةِ ٱلۡوُسۡطَىٰ وَقُومُواْ لِلَّهِ قَٰنِتِينَ﴾

सदैव नमाज़ों की और (विशेष रूप से) बीच वाली नमाज़ की पाबंदी करो, और अल्लाह के आगे पूरे विनीत और शान्तभाव से खड़े हुआ करो। (अल बक़रह: 238)

महिलाओं को भी इसका आदेश दिया गया:

﴿وَأَقِمۡنَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتِينَ ٱلزَّكَوٰةَ﴾

नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात दो। (अल अहज़ाब: 33)

यह ईमान की बुनियादों में से एक है, पैगंबर ﷺ ने अब्दे-क़ैस के प्रतिनिधिमंडल से कहा था: "क्या तुम लोग जानते हो कि अल्लाह पर ईमान लाना किसे कहते हैं? इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य प्रभु नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ की पाबंदी करना और ज़कात अदा करना।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

धर्म में नमाज़ का स्थान शहादतेन के बाद है, और पैगंबर ﷺ अपने धर्म-प्रचार के आरंभिक काल में ही इसका आदेश दिया करते थे, रोमनों के राजा हरक्यूलिस ने जब अबू-सुफियान से पूछा: तुम्हें मुहम्मद किस चीज़ का आदेश देते हैं? तो अबू-सुफियान कहते हैं: मैंने कहा: "हमें वो नमाज़, ज़कात, संबंधियों के साथ अच्छे व्यवहार और शुद्धता का आदेश देते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नमाज़ अल्लाह के निकट सबसे प्रिये कार्यों में से एक है, पैगंबर ﷺ से पूछा गया कि कौन सा कार्य अल्लाह के निकट सबसे अधिक प्रिये है? तो आपने फ़रमाया: "नमाज़ को उसके समय पर पढ़ना।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

समस्त इबादतों के बीच नमाज़ को इस प्रकार विशेषता प्राप्त है कि उसकी अनिवार्यता आसमान में हुई है, अत: कोई फरिश्ता उसे लेकर धरती पर नहीं उतरा, बल्कि स्वयं अल्लाह ने हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ से किसी मध्यस्थता के बिना ही इसकी अनिवार्यता के बारे में बात की, पैगंबर फरमाते हैं "मुझे सिद्रतुल-मुंतहा के पास ले जाया गया और अल्लाह ने मुझे जो संदेश देना था दिया, फिर दिन व रात में मुझ पर पचास नमाज़ें अनिवार्य कीं।"

(सही बुखारी व सही मुस्लिम) इसके स्थान को महानता दी गई और पचास नमाज़ों के रूप में इसे अनिवार्यता दी गई, फिर उसको हल्का करके पांच की संख्या में कर दिया गया और पुण्य के हिसाब से ये पचास ही रहीं।

पैगंबर ﷺ के साथियों ने नमाज़ से प्रेम किया, अत: वे विषम परिस्थितियों में भी इसे अदा किया करते थे, जाबिर (रज़ियल्लाहु अनहु) फरमाते हैं: "हमने पैग़ंबर ﷺ के साथ एक कौम के विरुद्ध युद्ध लड़ा, उन्होंने हमसे बहुत ही सख्त लड़ाई लड़ी, मुश्रिक (बहूदेववादी) कहने लगे: अब नमाज़ का समय होने वाला है, जो इन मुस्लिमों के निकट उनकी संतान से भी अधिक प्रिय है।" (सही मुस्लिम) सहाबा [1] ने पैग़ंबर ﷺ के हाथ पर नमाज़ के प्रति निष्ठा की शपथ ली, जरीर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं: "मैंने पैग़ंबर ﷺ के हाथ पर नमाज़ की पाबंदी, ज़कात की अदाई और हर मुस्लिम के प्रति शुभचिंता पर निष्ठा और आज्ञाकारिता की शपथ ली।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नमाज़ दुनिया और धर्म के कार्यों पर अति उत्तम सहायक है, ये व्यक्ति को अच्छे चरित्र से सुसज्जित करती और उसे अश्लीलता व बुराइयों से रोकती है, गुनाहों को मिटाती है और पापों को नष्ट करती है, पैगंबर ﷺ ने नमाज़ की तुलना उस नदी से की है जो शरीर के मेल कुचेल को साफ कर देती है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) ये भक्तों को बुराइयों और विनाश की जगहों से बचाती है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो सुबह की नमाज़ पढ़े वह अल्लाह की सुरक्षा में रहता है।" (सही मुस्लिम)

नमाज़ भक्तों से विपत्तियों, प्रलोभनों, क्षति और दोषों को हटाती है, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱسْتَعِينُوا۟ بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِ﴾

और सब्र और नमाज़ के माध्यम से सहायता प्राप्त करो। (अल बक़रह: 45)

इब्ने कसीर फरमाते हैं: "दीन में स्थिरता के लिए नमाज़ सबसे बड़ी सहायक है।"

([1]) सहाबा: अल्लाह के अंतिम दूत मुहम्मद ﷺ के मोमिन साथी।

नमाज़ जीविका के द्वार खोलती और उसे आसान बनाती है, पवित्र अल्लाह ने ज़करिय्या (उनपर शांति हो) के बारे में फ़रमाया:

﴿فَنَادَتْهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُصَلِّى فِى ٱلْمِحْرَابِ أَنَّ ٱللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ﴾

तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था, "अल्लाह, तुझे यह्या की शुभ-सूचना देता है। (आल इमरान: 39)

अल्लाह ने मरयम (उनपर शांति हो) के बारे में कहा:

﴿كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا ٱلْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا﴾

जब कभी ज़करिय्या उसके पास मेहराब में जाता, तो उसके पास कुछ रोज़ी पाता। (आल इमरान: 37)

नमाज़ शरीर को मज़बूत बनाती और छाती को खोलती है। यदि रात में भक्त कि आँख खुल जाती है, फिर वो अल्लाह को याद करता है और वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ता है; तो "उस दिन वो ऊर्जावान और अच्छे मन के साथ सुबह करता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

पैग़ंबर ﷺ ने नमाज़ को प्रकाश कहा है, फ़रमाया: "नमाज़ प्रकाश है।" (सही मुस्लिम)

नमाज़ जन्नत में प्रवेश करने और वहां ऊंचा स्थान प्राप्त करने का साधन है, सौबान (रज़ियल्लाहु अनहु) ने नबी ﷺ से पूछा: मुझे ऐसे कार्य के बारे में सूचना दीजिए, जिसे करने के बाद अल्लाह उसके कारण मुझे जन्नत में प्रवेश देदे, या कुछ इस तरह से सवाल किया: अल्लाह के निकट सबसे प्रिये कार्य के बारे (में सूचना दीजिए), तो आपने फ़रमाया: "अल्लाह के लिए अधिक से अधिक सजदे करो; क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सजदा करोगे अल्लाह उसके कारण तुम्हें एक दर्जा बुलंदी प्रदान करेगा और तुम से एक गुनाह गिरा देगा।" (सही मुस्लिम)

नमाज़ जन्नत में पैगंबर ﷺ की संगत मिलने का कारण है, रबीआ बिन कअब

(रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: "मुझसे अल्लाह के पैगंबर ﷺ ने कहा: मांगो, तो मैंने कहा: स्वर्ग में आपका साथ मांगता हूँ, आपने पूछा: इसके अलावा और कुछ? मैंने कहा: बस यही चाहिए, तो आपने फ़रमाया: अधिक से अधिक सजदे करके स्वयं पर मेरी सहायता करो।" (सही मुस्लिम)

नमाज़ नबी ﷺ की आंखों की ठंडक थी, आपने नमाज़ को अपने जीवन काल कि अंतिम वसीयत बनाया, अनस (रज़ियल्लाहु अनहु) फरमाते हैं: "मौत के समय नबी ﷺ कि वसीयत के शब्द ज़्यादातर इस प्रकार थे: नमाज़ नमाज़ और दास दासी" (अर्थात: इन दोनों का विशेष ध्यान रखो) (मुस्नद अहमद)

नमाज़ के गुण अनेक हैं और उसके लाभ फैले हुए हैं, पैग़ंबर ﷺ ने इसके बारे में फ़रमाया: "अगर वे जान लेते कि इसमें क्या कुछ है, तो इसके लिए घुटनों और हाथों के बल भी चल कर आते।" (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

नमाज़ अदा करना हर मुस्लिम पर, हर जगह और हर हाल में अनिवार्य है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे लिए धरती को मस्जिद और पवित्रता का साधन [1] बना दिया गया है, अत: किसी भी व्यक्ति पर जहां भी नमाज़ का समय आ जाए वो वहीं नमाज़ पढ़ ले।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इस्लाम ने नमाज़ को इस्लाम और कुफ्र के बीच एक तराज़ू बनाया है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति और बहुदेववाद व अविश्वास के बीच कि चीज़ नमाज़ छोड़ना ही है।" (सही मुस्लिम)

उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अनहु) ने फ़रमाया: "नमाज़ न पढ़ने वाले का कोई इस्लाम नहीं।" इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अनहु) फरमाते हैं: "नमाज़ छोड़ने वाले का कोई धर्म नहीं।"

नमाज़ को उसके समय पर अदा करना अनिवार्य है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

([1]) अत: एक मुस्लिम जल की ग़ैर मोजूदगी में मिट्टी आदि से पाकी प्राप्त कर सकता है, जिसको तयम्मुम कहा जाता है।

﴿فَخَلَفَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ أَضَاعُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَٱتَّبَعُواْ ٱلشَّهَوَٰتِۖ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا﴾

फिर उनके पश्चात ऐसे बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने नमाज़ को गँवाया और मन की इच्छाओं के पीछे पड़े। अतः जल्द ही वे गुमराही (के परिणाम) से दोचार होंगा। (मरयम: 59)

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: उनके नमाज़ गंवाने का मतलब नमाज़ छोड़ना नहीं है, बल्कि उसके समय को गंवा देना है।" इसहाक़ बिन राहवैह [1] (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "पैग़ंबर ﷺ के ज़माने से लेकर आज तक इस्लाम के विद्वानों की राय यही है कि जिस ने किसी कारण के बिना जानबूझकर नमाज़ छोड़ दी, यहाँ तक कि उसका समय बीत गया तो वह काफिर (अधर्मी) है।"

अल्लाह ने मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने को अनिवार्य किया है, बल्कि पैगंबर ﷺ ने एक अंधे व्यक्ति को भी इसके लिए आने से माफ़ नहीं रखा: "एक अंधा व्यक्ति पैग़ंबर ﷺ के पास आया और कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अंधा आदमी हूँ, मेरे पास मस्जिद तक ले जाने के लिए कोई सहायक भी नहीं है, तो पैग़ंबर ﷺ ने कहा: क्या तुम नमाज़ के बुलावे को सुनते हो? उसने कहा: हां, तो आपने कहा: तो फिर उसका जवाब दो।" (सही मुस्लिम)

पैग़ंबर ﷺ फरमाते हैं: "मेरी इच्छा है कि मैं नमाज़ खड़ी करने का आदेश दूं, फिर मैं एक व्यक्ति को लोगों की इमामत के लिए कहूँ और कुछ लोगों को साथ लेकर, जिनके पास लकड़ी की गठरी हो, ऐसे लोगों के पास जाऊँ जो जमाअत की नमाज़ में उपस्थित नहीं होते, फिर उनके घरों में आग लगा दूं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) एक रिवायत में है: "अगर घर में औरतें और बच्चे ना होते" (तो घरों को जला देता) (मुस्नद अहमद) इब्ने हजर कहते हैं: "हदीस से स्पष्ट होता है कि जमाअत के साथ नमाज़ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, क्योंकि अगर यह कार्य सुन्नत होता तो छोड़ने वाले को जलाने की धमकी ना दी जाती और अगर यह ऐसा अनिवार्य होता जो कुछ लोगों के करने से अदा हो जाता है; तो रसूल ﷺ और आपके साथियों द्वारा अदा हो चुका होता।"

([1]) 161 हिजरी को उनका जन्म हुआ, तथा 238 हिजरी में उनका निधन हुआ।

सामूहिक नमाज़ की उपेक्षा करने से भक्त पर शैतान हावी हो जाता है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "किसी भी शहर या देहात में तीन व्यक्ति हों, और उन में नमाज़ न क़ायम की जाती हो; तो शैतान उन पर आधिपत्य प्राप्त कर लेता है।" (सुनन अबू-दाऊद) इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: "मैंने (नबी ﷺ के ज़माने में) देखा है कि हम में से वही व्यक्ति जमाअत की नमाज़ से पीछे हटता था जो परिचित मुनाफिक होता था।"

नमाज़ में उपस्थित होना ईमान का चिन्ह है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ
وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا ٱللَّهَ﴾

अल्लाह की मस्जिदों का प्रबंधक और उसे आबाद करनेवाला वही हो सकता है जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया, नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा। (अल-तौबह: 18)

नबी ﷺ के साथी कष्ट के साथ भी सामूहिक रूप से नमाज़ अदा करते थे, इब्ने मसूद (रज़ियल्लाहु अनहु) ने कहा: "मैंने (नबी ﷺ के ज़माने में) देखा है कि आदमी को दो व्यक्तियों के सहारे से लाया जाता और नमाज़ की लाइन में खड़ा किया जाता था।" अल-रबी बिन खैसम (उनपर अल्लाह कि दया हो) कहते हैं: "जमाअत में उपस्थित होने की क्षमता हो तो ज़रूर आओ, चाहे घुटनों के बल चल कर आना पड़े।"

पैग़ंबर ﷺ ने निधन से पहले अपने सहाबा को आखरी बार जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने की हालत में ही देखा था, अनस (रज़ियल्लाहु अनहु) फरमाते हैं: "पैग़ंबर ﷺ ने मृत्यु रोग की स्थिति में अपने कमरे का पर्दा हटा कर सहाबा को देखा कि वे लाइन बनाए नमाज़ अदा कर रहे थे, तो आप मुस्कुरा उठे। अनस (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: वही आखरी नज़र थी जो आपने अपने सहाबा पर डाली थी।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह नमाज़ पढ़ने वाले के मुख की ओर होता है, अल्लाह से भय और नम्रता नमाज़ की आत्मा है, पैग़ंबर ﷺ जब नमाज़ पढ़ते तो रोने के कारण आपके सीने से उबलती हांडी की सी आवाज़ आती थी। (सुनन अबू-दाऊद)

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अनहु) ने कहा: "आपकी नमाज़ उतनी ही है जितनी आपने चेतना के साथ पढ़ी है।" करमी (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "इस्लाम के महान विद्वान (इब्ने तैमिय्यह) जब नमाज़ में प्रवेश करते तो (अल्लाह से भय की शिद्दत के कारण) आपके अंग कांपने लगते।"

तो विनम्रता और शौक के साथ जमाअत की नमाज़ की ओर लपक कर आओ; आत्माएं पाक हो जाएंगी, ज़बानों की त्रुटियां और अंगों के करतूत मिट जाएंगे और दर्जे बुलंद हो जाएंगे।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण मांगता हूँ

﴿وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾

नमाज़ का आयोजन करो, ज़कात दो और रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुमपर दया की जाए। (अल-नूर: 56)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

नमाज़ जीत और समृद्धि का कारण है, जो व्यक्ति भी नमाज़ की ओर चल कर जाता है, तो अल्लाह उसके हर कदम के बदले एक दर्जा बढ़ाता है, एक पाप मिटाता है और फ़रिश्ते नमाज़ कि जगह छोड़ने तक उसके लिए प्रार्थना करते रहते हैं और कहते हैं : "हे अल्लाह इसे माफ कर दे, हे अल्लाह इस पर दया कर।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) "जिसने इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी वह ऐसा है जैसे उसने आधी रात नमाज़ पढ़ी और जिसने भोर की नमाज़ भी जमाअत के साथ पढ़ी तो वह ऐसा है जैसे उसने सारी रात नमाज़ पढ़ी।" (सही मुस्लिम) जिस व्यक्ति का दिल नमाज़ के साथ इस प्रकार बंधा रहता कि वह अगली नमाज़ की प्रतीक्षा करता रहता है; तो अल्लाह उसे अपनी छाया में छायांकित करेगा।

अतः अपने प्रसन्न मन और खुले सीने के साथ अल्लाह के घरों में जमाअत के साथ अनिवार्य नमाज़ अदा करो, और अपने प्रभु का इनाम प्राप्त कर लो।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

ज़कात

ज़कात[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जिस तरह डरना चाहिए; क्योंकि डर और धर्मपरायणता से अंतर्दृष्टि व हृदय रोशन होते हैं, तथा पाप और गुनाह मिट जाते हैं।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने दो मनुष्य और जिन्न को अपनी इबादत के लिए बनाया है, अल्लाह की पवित्र हस्ती उन सब से निस्पृह है, लेकिन सृष्टि उससे निस्पृह नहीं हो सकती, वही इनके कष्ट को दूर करता है और वही इन्हें लाभ पहुंचाता है, और क्योंकि सृष्टि अल्लाह की मोहताज है इसीलिए अल्लाह ने अपनी इबादत को उनपर अनिवार्य किया है, अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ﴾

ऐ लोगो! पूजा करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (नरक की यातना से) बच सको। (अल-बक़रह: 21)

इस्लाम का निर्माण कुछ स्तंभों पर किया गया है, जिन पर वह खड़ा है, उन स्तंभों के बीच "शहादतेन" प्रथम स्तंभ है, दूसरा स्तंभ फर्ज़ (अनिवार्य) नमाजें हैं और तीसरा महान स्तंभ ज़कात है। क़ुरआन की बहुत सी आयतों में ज़कात का ज़िक्र नमाज़ के साथ-साथ हुआ

([1]) इसे मस्जिदे नबवी में दिए गए खुतबों से अलग किया गया है।

है, पैगंबर ईसा (अलैहिस्सलाम) ने जब मां की गोद में बात की थी तो ज़कात के बारे में भी बात की थी:

﴿وَأَوْصَٰنِى بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ مَا دُمْتُ حَيًّا﴾

और अल्लाह ने मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं जीवित रहूँ। (मरयम: 31)

महान अल्लाह ने पैगंबर इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की प्रशंसा की; क्योंकि वो अपने परिवार को ज़कात का आदेश देते थे:

﴿وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُۥ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ وَكَانَ عِندَ رَبِّهِۦ مَرْضِيًّا﴾

और इस्माईल अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, वो अपने रब के निकट प्रीतिकर व्यक्ति थे। (मरयम: 55)

ज़कात के महानतम स्थान के कारण ही अल्लाह ने अपने नबियों और रसूलों पर उसे अनिवार्य किया था, चुनांचे पैग़ंबर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के पास ज़कात का आयोजन करने की प्रकाशन की:

﴿وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ ٱلْخَيْرَٰتِ وَإِقَامَ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءَ ٱلزَّكَوٰةِ﴾

और हमने उनकी ओर नेक काम करने, नमाज़ की पाबन्दी करने और ज़कात देने की प्रकाशना की (अल-अंबिया: 55)

यह वही शपथ है जो पहले के समुदायों से लीगई थी, अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا ٱللَّهَ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِى ٱلْقُرْبَىٰ
وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَقُولُوا۟ لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ﴾

और याद करो जब इसराईल की सन्तान से हमने वचन लिया: "अल्लाह के अतिरिक्त किसी की वंदना न करोगे; माँ-बाप के साथ और नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे; और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और

ज़कात अदा करो। (अल बक़रह: 83)

इसी का आदेश विशेष रूप से महिलाओं को भी दिया गया:

﴿وَأَقِمْنَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتِينَ ٱلزَّكَوٰةَ﴾

(हे मुस्लिम महिलाओ) नमाज़ का आयोजन करो और ज़कात अदा करो। (अल अहज़ाब: 33)

अंतिम दूत ﷺ अपने मिशन के आरंभ में ज़कात का भी आदेश दिया करते थे, रोमन एंपायर हरक्यूलस ने अबू-सुफियान से पूछा था: मुहम्मद ﷺ तुम्हें किस चीज़ का हुकुम देते हैं? अबू सुफियान ने कहा: मैंने जवाब दिया था: वो हमें नमाज़, ज़कात, संबंधियों के साथ अच्छे व्यवहार और शुद्धता का आदेश देते हैं। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) और अंतिम दूत मुहम्मद ﷺ ने भी अपनी उम्मत को इसी की वसीयत की है, एक देहाती पैग़ंबर ﷺ के पास आया और कहा: "मुझे ऐसे कार्य की ओर मार्गदर्शित कीजिए जिसे करने के बाद मैं स्वर्ग में प्रवेश कर सकूं, तो आपने फ़रमाया: अल्लाह की वंदना करो, उसके साथ किसी चीज़ को साझी ना बनाओ, अनिवार्य नमाज़ क़ायम करो, अनिवार्य ज़कात अदा करो और रमज़ान महीने के रोज़े रखो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

सहाबा को ज़कात से प्रेम था, अत: वे इसे अदा भी करते थे और उन्होंने इसके विषय में पैग़ंबर ﷺ के हाथ पर निष्ठा की शपथ ली थी, जरीर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं: "मैंने पैग़ंबर ﷺ के हाथ पर नमाज़ की पाबंदी, ज़कात की अदाई और हर मुस्लिम के प्रति शुभचिंता पर निष्ठा और आज्ञाकारिता की शपथ ली।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

यह ईमान की बुनियादों में से एक है, पैगंबर ﷺ ने अब्दे-क़ैस के प्रतिनिधिमंडल से कहा था: "क्या तुम लोग जानते हो कि अल्लाह पर ईमान लाना किसे कहते हैं? इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य प्रभु नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ की पाबंदी करना और ज़कात अदा करना।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

यह उस व्यक्ति के लिए जो पहले मुश्रिक (बहुदेववादी) था फिर मुस्लिम हो गया, एक सुरक्षा है:

﴿فَإِن تَابُوا۟ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ فَخَلُّوا۟ سَبِيلَهُمْ﴾

फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। (अल तौबा: 5)

इसमें खून (प्राण) और धन की रक्षा है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से युद्ध लड़ता रहूँ यहाँ तक कि वे इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें। अगर उन्होंने ऐसा कर लिया तो अपनी जान तथा माल को, इस्लाम के अधिकार के सिवा, हमसे सुरक्षित कर लिया और उनका हिसाब अल्लाह पर है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

ज़कात धार्मिक भाईचारे का माध्यम है:

﴿فَإِن تَابُوا۟ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَوُا۟ ٱلزَّكَوٰةَ فَإِخْوَٰنُكُمْ فِى ٱلدِّينِ﴾

अतः यदि वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वे धर्म के भाई हैं। (अल तोबा: 11)

ज़कात द्वारा मुस्लिमों के बीच स्नेह के बंधन मजबूत होते हैं और ये अल्लाह कि ओर से आशीर्वाद, वृद्धि और उत्तराधिकारी को साथ लाती है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن شَىْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُۥ﴾

और जो कुछ तुमने खर्च किया उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

इसी से प्राण की सफाई और शुद्धि होती है

﴿خُذْ مِنْ أَمْوَٰلِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا﴾

(हे पैग़ंबर) तुम उनके माल में से दान लेकर उन्हें शुद्ध करो और उसके द्वारा उन (की आत्मा) को विकसित करो। (अल तौबह: 103)

अपने धन को दान करके स्वयं को पवित्र करने वाले का प्रतिफल नरक से मुक्ति है; सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कहा:

﴿وَسَيُجَنَّبُهَا ٱلْأَتْقَى ۞ ٱلَّذِى يُؤْتِى مَالَهُۥ يَتَزَكَّىٰ﴾

और उस (जहन्नम) से अत्यंत परहेज़गार व्यक्ति बच जाएगा जो अपना माल देकर स्वयं को शुद्ध करता है। (अल-लैल: 17-18)

यह व्यक्ति को पापों के दंड से बचाती है और उससे बड़ी-बड़ी विपत्तियों और संकटों को फेर देती है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَٱتَّقَىٰ ۞ وَصَدَّقَ بِٱلْحُسْنَىٰ ۞ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلْيُسْرَىٰ ۞ وَأَمَّا مَنۢ بَخِلَ وَٱسْتَغْنَىٰ ۞ وَكَذَّبَ بِٱلْحُسْنَىٰ ۞ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلْعُسْرَىٰ﴾

तो जिस किसी ने दान दिया, डरता रहा और अच्छी चीज की पुष्टि की हम उसे सहज ढंग से उस चीज का पात्र बना देंगे जो सहज और मृदुल (सुख-साध्य) है। रहा वह व्यक्ति जिसने कंजूसी की, लापरवाही बरती, और अच्छी चीज़ को झुठला दिया, हम उसे सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे, जो कठिन चीज़ (कष्ट-साध्य) है। (अल लैल: 5-10)

ज़कात में उदारता और दरयादिली के साथ आत्मा और नैतिकता की बुलंदी है, इसी से न्याय पूरा होता है, समृद्धि आम होती है और गरीबों को सुख मिलता है। यह अमीरों का आभूषण, नेक लोगों का श्रंगार और नबियों की वसीयत है। ज़कात अदा करना ईमान की सच्चाई का प्रमाण, भलाई के गुण का सबूत, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का कारण, सफलता का चिन्ह और विश्वास की निशानी है। यह ग़रीबों का ऐसा अधिकार है, जो अमीर आदमी उन्हें एहसान जताए या अपमान किए बिना ही दे देता है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपना धर्म पूरा करता और अपने धन का संरक्षण करता है।

इसके द्वारा भक्त स्वर्ग के निकट और नर्क से दूर हो जाता है, एक देहाती अंतिम पैग़ंबर ﷺ के पास आया और कहा: "मुझे ऐसी चीज़ बताएं जो मुझे स्वर्ग के क़रीब और नरक की आग से दूर कर दे, कहते हैं कि आप चुप हो गए, फिर अपने सहाबा की ओर देखा, उसके बाद फ़रमाया: इसे सटीक प्रेरणा मिली है, या इसे सही मार्ग मिला है, और फ़रमाया: क्या कहा? कहते हैं कि उस व्यक्ति ने अपनी बात दोहराई, तो पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह की

इबादत करो, उसके साथ किसी को भी साझी न बनाओ, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और रिश्तेदारी को जोड़ते रहो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो पवित्र मन से ज़कात निकालेगा महान अल्लाह उसे ईमान का मजा और मिठास प्रदान करेगा, इब्नूल क़य्यिम कहते हैं: "दान करने वाला जब भी दान करता है; उसका दिल खुल जाता है, उसका सीना उदार हो जाता है, उसकी खुशी सशक्त होती है और उसका सुख बढ़ जाता है। अगर दान करने में इसके अलावा दूसरा कोई फायदा ना भी होता तो भी भक्त वास्तविक रुप से अधिक से अधिक दान करता और उसकी ओर लपकता।"

ज़कात के महत्व के कारण ही अल्लाह ने इसके आवंटन करने की जगहें बताने का ज़िम्मा स्वयं लिया है, चुनांचे अल्लाह फ़रमाता है:

﴿إِنَّمَا ٱلصَّدَقَٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَٱلْعَٰمِلِينَ عَلَيْهَا وَٱلْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِى ٱلرِّقَابِ وَٱلْغَٰرِمِينَ وَفِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً مِّنَ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ﴾

सदक़े तो बस ग़रीबों, मुहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो ज़कात के काम पर नियुक्त हों और उनके लिए जिनके दिलों को आकृष्ट करना औऱ परचाना अभीष्ट हो और गर्दन को छुड़ाने में, क़र्ज़दारों और तावान भरनेवालों की सहायता में, अल्लाह के मार्ग में और मुसाफ़िरों की सहायता में लगाने के लिए हैं। यह अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ हुक्म है। अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (अल-तौबह: 60)

अतः ज़कात के माल को अल्लाह कि ओर से उल्लिखित स्थानों के अलावा कहीं और खर्च करना अवैध है।

जो ज़कात के मामले में कंजूसी करता है उसके बारे में चेतावनी आई है, अल्लाह फ़रमाता है:

﴿وَٱلَّذِينَ يَكْنِزُونَ ٱلذَّهَبَ وَٱلْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾

और जो लोग सोना और चाँदी एकत्र करके रखते है और उन्हें अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो (अल-तौबह: 34)

पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जिस को अल्लाह ने धन दिया, फिर उसने उसकी ज़कात अदा नहीं की; तो उसके धन को गंजे सांप की शक्ल देदी जाएगी, जिसकी दो किशमिश जैसी आंखें होंगी, पुनरुत्थान के दिन इसे उसकी गर्दन में डाल दिया जाएगा, फिर सांप उसके दो जबड़ों को पकड़कर कहेगा: मैं तुम्हारा धन हूँ, मैं तुम्हारा खज़ाना हूँ, फिर पैगंबर ﷺ ने अल्लाह के कलाम की तिलावत फरमाई:

﴿وَلَا يَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ هُوَ خَيْرًا لَّهُم ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا۟ بِهِۦ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ ۗ﴾

जो लोग उस चीज़ में कृपणता से काम लेते हैं, जो अल्लाह ने अपनी उदार कृपा से उन्हें प्रदान की है, वे यह न समझें कि यह उनके हित में अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कृपणता से काम लिया होगा, वही क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ बन जाएगा। (आल इमरान: 180)" (सही बुखारी)

फिर हे मुस्लिमो!

ज़कात की इबादत ऐसा आशीर्वाद है जिसके साथ अल्लाह ने धन वालों को विशिष्ट किया है, इसलिए धन वालों को इससे खुश होना चाहिए और पवित्र मन के साथ ज़कात निकालनी चाहिए; क्योंकि यह रहमान (परम दयालू प्रभु) को प्रसन्न करेगी, धन को बढ़ाएगी और उसे विपत्तियों और घाटे से सुरक्षित रखेगी।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण मांगता हूँ

﴿ٱلشَّيْطَـٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ﴾

शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। अल्लाह बड़ी समाईवाला, सर्वज्ञ है। (अल बक़रह: 268)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

ज़कात से दरिद्रों और निर्धनों का कर्ज़ चुकाया जाता है, उनकी आवश्यकताऐं पूरी की जाती हैं, भटके यात्री की सहायता की जाती है और दिलों को जोड़ा जाता है, ये धनवान व्यक्ति के लिए अल्लाह के यहाँ कई गुना बढ़ने वाले कर्ज़ के रूप में संग्रहीत होती है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُۥ ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ﴾

और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है। (सबा: 39)

तो दरिद्र के लिए विनम्र हो जाओ, उसके लिए धन खर्च करो, उसके निकट आओ, उससे प्रेम करो और किसी ग़रीब को हीनता से ना देखो; क्यूंकि जन्नत जाने वालों में क्यूंकि जन्नत जाने वालों में अधिकांश ग़रीब होंगे। हाथ की उदारता और मन की दयालुता के साथ खर्च करो; तुम्हारे धन और संतान में बरकत होगी। दान करना बीमारियों और मुसीबतों का इलाज है; अत: दुर्बल और जरूरतमंदों को तलाश करो, उन पर दया करो; तुम पर दया कि जाएगी, क्योंकि कोई भी ग़रीब अगर शिकायत करता है तो वह धनवान की कोताही से ऐसा करने पर मजबूर होता है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैगंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

दान के गुण[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, अल्लाह की ओर से अधिक से अधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो, अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

बंदों के हाथों में धन घटता-बढ़ता रहता है और एक स्थिति पर स्थिर नहीं रहता, जिससे धन विनिमय नहीं होता वह दुनिया से रुखसत हो कर स्वयं धन से दूर हो जाता है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿كَمْ تَرَكُوا۟ مِن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ * وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ﴾

वे कितने ही बाग़, स्रोत, खेत और उत्तम आवास छोड़ गए। (अल-दुख़ान: 25-26)

धन इस उम्मत का फितना (प्रलोभन/परीक्षा) है, आदरणीय पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "हर उम्मत के लिए एक फितना होता है, और मेरी उम्मत का फितना धन है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

(1) इसे मस्जिदे नबवी में दिए गए खुतबों से अलग किया गया है।

धन मित्र तो है, लेकिन वो कब शत्रु में परिवर्तित हो जाए और अपने मालिक को पुण्य से वंचित करदे? कुछ कहा नहीं जा सकता, अगर धनवान भलाई और दरिद्रों से निकट है तो सराहनीय है, आदरणीय पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "धन उस मुस्लिम का बहुत अच्छा मित्र है जो उसमें से ग़रीबों, अनाथों और यात्रियों को देता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

धन एक पत्थर जैसा है, उससे तभी लाभ उठाया जा सकता है जब वो हथेली से अलग होगा, और उसे पकड़े रहने वाले व्यक्ति को मृत्यु के समय बहुत अधिक खेद होगा, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَأَنفِقُوا۟ مِن مَّا رَزَقْنَٰكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَآ أَخَّرْتَنِىٓ إِلَىٰٓ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ۞ وَلَن يُؤَخِّرَ ٱللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَآءَ أَجَلُهَا ۚ وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ﴾

हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु आ जाए और उस समय वह कहने लगे: "ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ थोड़े समय तक और मुहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा (दान) करता (मुझे मुहलत दे कि मैं सदक़ा करूँ) और अच्छे लोगों में सम्मिलित हो जाऊँ।" किन्तु अल्लाह, किसी व्यक्ति को जब उसका नियत समय आ जाता है, कदापि मुहलत नहीं देता। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है। (अल-मुनाफिक़ून: 10-11)

अल्लाह ने अपने भक्तों के लिए सदक़े (दान पुण्य) का दरवाजा खोल दिया है ताकि वह तुमसे प्रसन्न हो। सदक़ा रहमान (परम दयालू प्रभु) के क्रोध को ठंडा करता है, यह ईमान का प्रमाण और उत्तम कार्यों में से है, पैगंबर ﷺ से पूछा गया कि "कौन सा इस्लाम सबसे अच्छा है? तो आपने फ़रमाया: खाना खिलाओ परिचित और अपरिचित सब को सलाम करो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

सदक़े से पुण्य कई गुना बढ़ जाते हैं और पाप और गुनाह मिट जाते हैं, पैगंबर ﷺ ने मुआज़ (रज़ियल्लाहु अनहु) से फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें भलाई के द्वार की ओर मार्गदर्शित ना

करूं? रोज़ा ढाल है, सदक़ा पाप को बुझा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है और आधी रात को व्यक्ति की नमाज़ भी" (गुनाहों को इसी तरह मिटा देती है जिस तरह पानी आग को)। (सुनन तिर्मिज़ी)

दान धन को बढ़ा कर उसे कई गुना कर देता है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿مَّن ذَا ٱلَّذِى يُقْرِضُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَـٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضْعَافًا كَثِيرَةً﴾

कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे कि अल्लाह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे? (अल-बक़रह: 245)

पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह फरमाता है: हे आदम पुत्र! खर्च करो; में भी तुम पर खर्च करूंगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

दान पुण्य का प्रभाव प्राण, धन और संतान पर सदृश्य होता है, इसके द्वारा मुसीबत टल जाती है और खुशहाली आ जाती है, इब्नुल क़य्यिम कहते हैं: "दान पुण्य का विपत्ति को हटाने में बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रभाव होता है, यह बात सभी लोगों के यहाँ जानी पहचानी है, धरती के समस्त लोग इसको मानते हैं; क्योंकि उन्होंने इसका अनुभव किया है। अल्लाह के अनुग्रहों को लाने और उसके प्रतिकार को दूर करने में उसकी आज्ञाकारिता, उसकी निकटता प्राप्त करने और उसकी सृष्टि के साथ भला करने से बढ़कर कुछ नहीं है।"

सबसे अधिक पुण्य वाला दान "वह सदक़ा, जो तुम उस समय करते हो, जब तुम स्वस्थ एवं लोभी होते हो और तुम्हें निर्धन हो जाने का डर सताता है और मालदारी की आशा होती है। देखो, इतनी देर न करो कि जब प्राण गले तक पहुँच जाएँ तो कहने लगो कि उमुक के लिए इतना है और अमुक के लिए इतना है। हालाँकि वह अमुक का हो ही चुका है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) और "सर्वोत्तम सदका वह है जो अपनी आवश्यकता पूरी करने के बाद किया जाए। ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से उत्तम है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

निर्धनों पर आसानी करना भी सदक़ा है, और जो व्यक्ति लोगों का धन उधार लेता है और उसकी नीयत उसे चुकाने की होती है; तो अल्लाह उसकी ओर से उसे चुका देता है।

"निसंदेह तुम में उत्तम वह है जो उधार चुकाने में सबसे अच्छा हो।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

पानी पिलाना और खाना खिलाना भी सदक़े की एक शक्ल है, और "जो व्यक्ति रोजेदार को इफ्तार कराता है उसके लिए रोजेदार जैसा ही पुण्य होगा, और रोजेदार के पुण्य में भी कोई कमी नहीं होगी।" (सुनन तिर्मिज़ी), अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अनहुमा) रोज़ा रखते और ग़रीबों के साथ ही रोज़ा खोलते थे।

सदक़ा करने वाला लोक परलोक में सुरक्षित रहता है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَٰلَهُم بِٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾

जो लोग अपने माल रात-दिन छिपे और खुले ख़र्च करें, उनका बदला तो उनके रब के पास है, और न उन्हें कोई भय है और न वे शोकाकुल होंगे। (अल-बक़रह: 274)

अल्लाह के निकट व्यक्ति का सदक़ा बड़ा होता रहता है, सो खजूर के दान को पवित्र प्रभु कबूल करता है और उसे इतना बड़ा कर देता है कि वह पहाड़ बन जाता है।

छुपा कर दान देना सदृश्य देने से अधिक उत्तम है, क्यूँकि इस तरह दिखावे से दूरी होती है, हां जब दिखाने में कोई बड़ा हित हो, तो दिखा कर भी दिया जा सकता है, जैसे: दान करने में एक दूजे का अनुसरण करना, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿إِن تُبْدُوا۟ ٱلصَّدَقَٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا ٱلْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّـَٔاتِكُمْ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ﴾

यदि तुम खुले रूप मे सदक़े दो तो यह भी अच्छा है, और यदि उनको छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। और यह तुम्हारे कितने ही गुनाहों को मिटा देगा। और अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है, जो कुछ तुम करते हो। (अल-बक़रह: 271)

छिपा कर सदक़ा करने वाला उन सात प्रकार के लोगों में शामिल होगा जो अल्लाह की छाँव प्राप्त करेंगे "ऐसा व्यक्ति भी छाँव प्राप्त करेगा जिसने दान इस तरह किया कि दायें हाथ ने खर्च किया तो बायें हाथ को पता भी नहीं चला।" (सही बुखारी) ज़ैनुल आबिदीन (उनपर अल्लाह कि दया हो) की मृत्यु हुई तो मदीने वालों ने गुप्त दान को गुम पाया, जब लोग उन्हें नहला रहे थे तो उनकी पीठ पर काले निशान पाए गए, ये आटा ढोने के दाग थे, क्योंकि वो रात को मदीने के ग़रीबों तक आटा पहुंचाते थे।

अल्लाह उदार है और उदारता से प्रेम करता है, हमारे पैग़ंबर ﷺ भी "सब लोगों से अधिक दानी थे, खासकर रमज़ान में, जब जिबरील (अलैहिस्सलाम) से आपकी मुलाक़ात होती तो और अधिक दानी हो जाते। जिबरील (अलैहिस्सलाम) रमज़ानुल मुबारक में हर रात आपसे मुलाक़ात करते और क़ुरआन मजीद का दौर फ़रमाते। ऐसे में, अल्लाह के रसूल ﷺ सदक़ा करने में आंधी से भी ज़्यादा द्रुतगामी हो जाते थे।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) आपसे जो भी मांगा जाता था आप दे देते थे, "नबी ﷺ भलाई के मामले में सब लोगों से अधिक दानी थे।" आप जो कुछ देते उसे ज़्यादा नहीं समझते थे, और न किसी मांगने वाले को वापस लौटाते, सदक़ा और दान देना आपको सबसे प्रिय था, जितनी खुशी एक लेने वाले को लेकर होती है उससे कहीं ज़्यादा खुशी आपको देकर होती थी।

अत: दरिद्र को ढूंढो चाहे थोड़ा ही दान हो; क्योंकि अल्लाह के निकट थोड़ा भी बहुत होता है, और थोड़ा सा खर्च करना भी आग से बचा सकता है, पैगंबर ने फ़रमाया: "हे आयशा! खजूर के टुकड़े से ही सही, खुद को आग से बचाओ, क्यूंकि यह भूखे की भी उतनी आवश्यकता पूरी करता है जितने भरे हुए पेट वाले की आवश्यकता पूरी करता है।" (मुस्नद अहमद) यहया बिन मुआज़ कहते हैं: "मैं किसी दाने को नहीं जानता जो दुनिया के पहाड़ों के समान हो, सिवाय सदक़े वाले दाने के।" दान देना बुलंदी है, उदारता सम्मान है, आत्मा जितनी ऊंची होगी उतना ही अधिक खर्च होगा और व्यक्ति क़यामत के दिन अपने दान की छाया में होगा।

अल्लाह ने रिश्तेदारों के कुछ अधिकार गर्दन में डाले हैं, जो खर्च करने से ही पूरे होते हैं:

﴿وَءَاتِ ذَا ٱلۡقُرۡبَىٰ حَقَّهُۥ﴾

और रिश्तेदार को उसका हक़ दो (बनी इस्राइल: 26)

अत: दान करना कोई मेहरबानी नहीं, अधिकार है जिसे अल्लाह ने अनिवार्य किया है, "निर्धन को दान करना तो केवल सदक़ा है, मगर रिश्तेदार को दान करना सदका भी है और रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार भी है।" (सुनन नसाई)

लोगों के सदक़ा देने का सवाब निश्चित और उसका पुण्य बढ़ा हुआ है। मती ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अनहा) द्वारा अपने पति अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अनहु) और उनके अनाथ बच्चों पर खर्च के बारे में जब पैगंबर ﷺ से पूछा गया तो आपने फ़रमाया: "हाँ, इसमें दोहरा पुण्य है एक रिश्तेदारी का पुण्य और एक सदके का पुण्य।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

माल खत्म हो जाने के डर से सदका रोकना धन की क्षति है। पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "प्रतिदिन जब बंदे सुबह करते हैं तो दो फरिश्ते उतरते हैं; एक कहता है: हे अल्लाह! खर्च करने वाले को उसकी जगह अच्छा बदला दे, और दूसरा कहता है: हे अल्लाह! धन रोकने वाले के धन को बर्बाद करदे।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) खर्च करने वाले से सम्मान और क्षमा का वादा है।

भक्त सब्र और अल्लाह से संबंध के द्वारा ही संकट से मुक्ति पाता है जिसके हाथ में धन कम हो उस पर अनिवार्य है कि तक़वा (धर्म परायणता/ईश-भय) धारण करे, इसी के द्वारा दरिद्र के सामने जीविका के द्वार खुलते हैं महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجۡعَل لَّهُۥ مَخۡرَجٗا ۝ وَيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُۚ﴾

जो अल्लाह का भय रखेगा अल्लाह उसके लिए (संकट से) निकलने का मार्ग पैदा कर देगा और ऐसी जगह से उसे रोज़ी देगा जहां से उसे अनुमान तक न होगा। (अत-तलाक़:-2-3)

लगातार इस्तिग़फार (क्षमा-याचना) से धन प्रचुर मात्रा में मिलता है, पवित्र अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا * يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا *
وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَٰرًا﴾

"और मैंने कहा, अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील है, वह तुमपर ख़ूब बरसनेवाला बादल भेजेगा, और वह माल और बेटों से तुम्हें बढ़ोतरी प्रदान करेगा, तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और तुम्हारे लिए नहरें प्रवाहित करेगा। (नूह: 10-12)

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُهُۥ﴾

और तुमने जो कुछ भी ख़र्च किया और जो कुछ भी नज़र (मन्नत) की हो, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। (अल-बक़रह: 270)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अपनी अच्छी कमाई में से ख़र्च करो और अल्लाह से अपना पुण्य मांगो; क्योंकि सदक़े में माल की बरकत और मन की पवित्रता है और क़ियामत के दिन हर व्यक्ति अपनी खैरात की छाया में होगा। उन लोगों में से जिन्हें अल्लाह अपने सिंहासन की छाया प्रदान करेगा "ऐसा व्यक्ति भी होगा जिसने दान किया और इस प्रकार से उसे छुपाया कि दाएं हाथ ने जो खर्च किया बाएं हाथ को उसका पता भी नहीं चल सका।" (सही बुखारी)

ईमान वाला किसी भी चीज को कम नहीं आंकता, बहुत बार एक रुपया हजार रुपयों से आगे बढ़ जाता है, जो अल्लाह के बंदों पर लुटाएगा अल्लाह भी उसपर अपनी मेहरबानी और उपहार की वर्षा करेगा और कर्म के समान ही कर्म का फल भी मिलता है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैगंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

दान का महत्व[1]

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए जो अपने आज्ञाकार और भय रखने वाले को सम्मान देता है और अवज्ञा करने वाले और पापी को अपमानित करता है, मैं उसकी अधिकाधिक पवित्र और धन्य प्रशंसा करता हूँ जैसे हमारा प्रभु चाहता और जिससे प्रसन्न होता है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वो अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसके सिवा हमारा कोई प्रभु नहीं और हम केवल उसकी वंदना करते हैं।

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ अल्लाह के भक्त और उसके दूत हैं, वो अल्लाह के मार्ग पर सबसे सत्यवादी प्रचारक और अल्लाह के सृष्टि जगत में उसके बंदों के प्रति सबसे बड़े शुभचिंतक हैं। हे अल्लाह! आप पर रहमत और सलाम अवतीर्ण कर तथा आपके साथियों, आपके रास्ते पर चलने वालों और आपके पदचिन्हों पर अग्रसर रहने वालों पर भी।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

तो है अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जिस तरह डरना चाहिए, अपनी गोपनीयता और स्दृश्यता को उसके लिए शुद्ध करो, अपने प्रभु की प्रसन्नता की ओर बढ़ो और अपने महीने के गुणी क्षणों का लाभ उठाओ।

हे मुस्लिमो!

इस्लाम का एक उद्देश्य: दयालु और सहानुभूतिपूर्ण समाज का निर्माण है, जिसमें प्यार और भाईचारे का प्रभाव हो, जिसमें अच्छाई और दान से प्रेम का राज हो। उदारता का चक्र भले कार्य में खर्च करने और उपकार में विस्तार करने के लिए फैल जाता है, और यही वो चीज़ है जिसके लिए ईमान वाले दिल तरसते हैं और इसी के प्रति सहिष्णु इस्लाम ने इस प्रकार प्रेरित किया है कि उदार व्यक्ति के सीना खुल जाता है और कंजूस की कंजूसी का

(1) इसे मस्जिदे नबवी में दिए गए खुतबों से अलग किया गया है।

इलाज हो जाता है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿مَّن ذَا ٱلَّذِى يُقْرِضُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضْعَافًا﴾

कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे कि अल्लाह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे? (अल-बक़रह: 245)

अल्लाह के अंतिम दूत ﷺ "लोगों में सबसे अधिक उदार थे, और आप रमज़ान में और अधिक उदार हो जाते थे।" आप जब दान करते तो ज़्यादा करते, देते तो भर भर कर देते, जब उपहार भेंट करते तो उस व्यक्ति की तरह जिसे कंगाल होने का भय नहीं होता, जब भी आपसे कुछ मांगा गया आपने दे दिया, कभी आपने किसी मांगने वाले को वापस नहीं लौटाया, हां अगर आप भी उस समय खाली हाथ हों तो अलग बात है, आपने अपने साथियों को सदक़ा निकलने का आव्हान किया तो उन्हों ने भी अपने कीमती धन लुटा दिए, चुनांचे उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अनहु) ने अपना आधा धन खर्च किया और अबू बक्र सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अनहु) ने तो अपना सारा धन खर्च कर डाला। जब पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो कठिनाइ से पीड़ित (तबूक युद्ध की) सेना को सज्य करेगा उसके लिए स्वर्ग है" तो उस्मान ﷺ ने इसे तैयार किया।" (सही बुखारी)

जब अल्लाह का कथन:

﴿لَن تَنَالُوا۟ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا۟ مِمَّا تُحِبُّونَ﴾

तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तक कि उन चीज़ो को (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो, जो तुम्हें प्रिय है। (आल-इमरान: 92)

उतरा; तो अबू तल्हा (रज़ियल्लाहु अनहु) पैगंबर ﷺ के पास आगए और कहा: हे अल्लाह के रसूल! मेरा सबसे प्रिय धन बैरुहा बाग़ है, मैं उसे अल्लाह के रास्ते में सदका करता हूँ (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इखलास (मन की शुद्धता) के साथ थोड़ा सा खर्च भी आग से मुक्ति का कारण है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "खजूर के टुकड़े से ही सही, जहन्नम की आग से बचो।"

(सही बुखारी व सही मुस्लिम)

लूटाने और सदक़ा करने से धन खत्म नहीं होता, बल्कि वह उत्तम कर्ज़ है जो परम उदार हस्ती के पास सुरक्षित है और अल्लाह उसका बदला जरूर देता है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "प्रतिदिन जब बंदे सुबह करते हैं, तो दो फरिश्ते उतरते हैं; एक कहता है: हे अल्लाह! खर्च करने वाले को उसकी जगह और दे, और दूसरा कहता है: हे अल्लाह! धन रोकने वाले के धन को बर्बाद कर दे।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) परम उदार हस्ती कि ओर से निस्पृहता का विश्वास रखो, पैगंबर ﷺ फरमाते हैं: "महान अल्लाह ने फ़रमाया: हे आदम पुत्र! खर्च करो; मैं तुम पर खर्च करूंगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) पैगंबर ﷺ ने ये भी फ़रमाया: "सदक़े से माल घटता नहीं है।" (सही मुस्लिम)

धन तो तुम्हारे हाथ में एक अमानत है, उस में से कुछ भी तुम्हारा नहीं, हाँ, तुम ने जो खाकर खत्म कर दिया, पहन कर पुराना कर दिया या दान देकर आगे भेज दिया वो तुम्हारा है, इसलिए गरीबों के प्रति विनम्र रहो, उन पर धन खर्च करो, उनके करीब रहो, उन पर दया करो और गरीबों का तिरस्कार न करो; क्यूंकि ग़रीब ही जन्नत के बहुसंख्यक लोग हैं।

जो अल्लाह के बंदों पर उदारता दिखाता है अल्लाह उस पर उदार हो जाता है और जिसके लिए भलाई के दरवाज़े खोल दिए जाएं तो उसे चाहिए कि उठ खड़े हों क्योंकि उसे नहीं पता कि कब उसके सामने दरवाज़े बंद हो जाएंगे अगर तुम्हारे बस में हो कि उससे कोई आगे न बढ़ सके तो उसे ऐसा अवश्य करना चाहिए

जब ज़ैनुल आबिदीन (उनपर अल्लाह कि दया हो) की मृत्यु हुई तो मदीने वालों ने गुप्त दान को गुम पाया, जब लोग उन्हें नहला रहे थे तो उनकी पीठ पर काले निशान पाए गए, ये आटा ढोने के दाग थे, क्योंकि वो रात को मदीने के ग़रीबों तक आटा पहुंचाते थे।

खर्च करने वाले के लिए जीवन के मामलात आसान हो जाते हैं, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۞ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۞ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۞ وَأَمَّا مَن بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۞
وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۞ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ﴾

तो जिस किसी ने दान दिया, डरता रहा और अच्छी चीज की पुष्टि की हम उसे सहज ढंग से उस चीज का पात्र बना देंगे जो सहज और मृदुल (सुख-साध्य) है। रहा वह व्यक्ति जिसने कंजूसी की, लापरवाही बरती और अच्छी चीज़ को झुठला दिया, हम उसे सहज ढंग से उस चीज़ का पात्र बना देंगे, जो कठिन चीज़ (कष्ट-साध्य) है। (अल-लैल: 5-10)

दानी से क्षमा और निस्पृहता का वादा है:

﴿ٱلشَّيۡطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلۡفَقۡرَ وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغۡفِرَةٗ مِّنۡهُ وَفَضۡلٗاۗ﴾

शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। (अल-बक़रह: 268)

बल्कि दान किया हुआ धन वापस भी दे दिया जाता है, पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَآ أَنفَقۡتُم مِّن شَيۡءٖ فَهُوَ يُخۡلِفُهُۥۖ وَهُوَ خَيۡرُ ٱلرَّٰزِقِينَ﴾

और जो कुछ तुमने खर्च किया उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

दान विपत्तियों को दूर करता है, जब पैग़ंबर ﷺ पर सबसे प्रथम ईश्वरीय संदेश अवतीर्ण हुआ; तो आपने अपनी पत्नी ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अनहा) से कहा: "मुझे अपने प्राण के प्रति डर लग रहा है, तो ख़दीजा कहने लगीं: ऐसा कभी नहीं हो सकता, अल्लाह की कसम अल्लाह आपको कभी अपमानित नहीं करेगा; निस्संदेह आप संबंध जोड़ते हैं, बोझ उठाते हैं, निर्धन की सहायता करते हैं, अतिथि का सत्कार करते हैं और सत्य के मामलात में मदद करते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इसका लाभ क़यामत के संकट को दूर करने तक विस्तारित होता है, इसलिए दान देने वाला पुनरुत्थान के दिन अपने दान की छाया में होगा और जो कोई भी अपने दान को छुपाता है भले ही वह छोटा हो, अल्लाह उसे दान की छाया के अलावा एक अतिरिक्त छाया से सम्मानित करेगा और वह सिंहासन के नीचे की छाया है।

खर्च करने वाला धनवान पुण्य में दूसरों से आगे बढ़ जाता है, कुछ सहाबा (रज़ियल्लाहु अनहुम) ने पैगंबर ﷺ से कहा था: "धनवान लोग पुण्य लेकर आगे बढ़ गए।" (सही मुस्लिम)

धनवानों में सफल व्यक्ति वो है जो तक़वे (धर्म परायणता/ईश-भय) के साथ दरियादिली और दान से अपनी आख़िरत बना लेता है, पैग़ंबर ﷺ से पूछा गया: "कौन सा दान उत्तम है? आपने फ़रमाया: ऐसे समय दान करना जब तुम स्वस्थ हो और तुम्हें धन का लोभ भी हो, धनी बनने की कामना हो और ग़रीबी का खौफ़ भी हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

सदक़े को गुप्त रखना उसे सदृश करने से अच्छा है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَإِن تُخۡفُوهَا وَتُؤۡتُوهَا ٱلۡفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۚ﴾

यदि दान छिपाकर मुहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। (अल-बक़रह: 271)

उन सात लोगों में जिन्हें अल्लाह अपनी छाया प्रदान करेगा: "वह व्यक्ति भी होगा जो दान करता है और उसको इस प्रकार गुप्त रखता है कि दाएं हाथ ने जो खर्च किया बाएं हाथ को उसका पता भी नहीं चल पाता।" (सही बुखारी)

जो अपने प्रभु के प्रति अच्छा विचार रखता है; उसका मन उदार हो जाता है और वो अल्लाह के कथन:

﴿وَمَآ أَنفَقۡتُم مِّن شَيۡءٖ فَهُوَ يُخۡلِفُهُۥۖ﴾

और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

पर विश्वास करते हुए अपने धन को खूब खर्च करता है।

सुलैमान दारानी कहते हैं: "जो व्यक्ति अपनी जीविका के प्रति अल्लाह पर भरोसा रखता है, अल्लाह उसको उच्च नैतिकता में बढ़ौती देता है और उसे सहनशीलता प्रदान करता है, उसका मन दान करने में उदार हो जाता है और नमाज़ में शैतानी विचार कम हो जाते हैं।"

अल्लाह के पास जो कुछ है उसकी उम्मीद, उसके वचन पर भरोसा रखने और उसके अनुग्रह की आशा के साथ भलाई करने से दान अग्रसर होता है। जैसे अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَمَا يَفۡعَلُواْ مِنۡ خَيۡرٖ فَلَن يُكۡفَرُوهُۗ﴾

जो नेकी भी वे करेंगे, उसकी अवमानना न होगी। (आल इमरान: 115)

सबसे उत्तम खर्च परिजनों पर खर्च करना है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया

﴿يَسۡـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَۖ قُلۡ مَآ أَنفَقۡتُم مِّنۡ خَيۡرٖ فَلِلۡوَٰلِدَيۡنِ وَٱلۡأَقۡرَبِينَ﴾

वे तुमसे पूछते हैं: "क्या ख़र्च करें?" कहो: "जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, वह तो माँ-बाप और नातेदारों के लिए है। (अल-बक़रह: 215)

परिजन आपके शरीर का ही एक अंग होते हैं, अगर आप उनका भला करते हैं तो आप अपना ही भला कर रहे हैं, अगर आप उन पर कंजूसी करते हैं तो आप स्वयं पर ही कंजूसी कर रहे हैं, अल्लाह ने रिश्तेदारों का अधिकार भी गर्दन पर डाला है जिसे खर्च करने से ही अदा किया जा सकता है, तो तुम इस पर कंजूसी न करो, न अनाथों को झिड़को, न भिकारी को डांटो और अपने मन की उदारता के साथ खर्च करो; तुम्हारे माल और संतान में बरकत होगी।

शैतान खर्च करने वाले के मन में बुरे विचार डालता है, उसे रुकने के लिए कहता है और धोखे और षड्यंत्र के माध्यम से कंजूसी को उसके लिए सुसज्जित करके पेश करता है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿ٱلشَّيۡطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلۡفَقۡرَ وَيَأۡمُرُكُم بِٱلۡفَحۡشَآءِۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم مَّغۡفِرَةٗ مِّنۡهُ وَفَضۡلٗاۗ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٞ﴾

शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और निर्लज्जता के कामों पर उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी क्षमा और उदार कृपा का तुम्हें वचन देता है। (अल-बक़रह: 268)

अल्लाह ने भलाई के कामों में कंजूसी करने के कारण मुनाफिक़ों[1] की निंदा की है, इब्ने क़य्यिम कहते हैं: "आदम पुत्रों में सबसे जघन्य, गंदे और नीच लोग यही हैं।" इन्होंने पैगंबर ﷺ और आपके साथियों को कठोरतम कष्ट से प्रताड़ित किया, पैगंबर ﷺ के आवंटन पद्धति की आलोचना की, आपके सहाबा का मज़ाक़ उड़ाया और उनमें से जो दान करने वाले थे उनके साथ ठठ्ठा किया। इब्ने कसीर फरमाते हैं: "सहाबा में से कोई भी किसी भी परिस्थिति में मुनाफिकों के लांछन और निराधार कटाक्ष से सुरक्षित नहीं रहा।" यदि वे अपना धन खर्च भी करते हैं तो वे इसे घृणा और संकोच के साथ, एहसान जता कर खर्च करते हैं, तथा अपने बुरे विश्वास और दुर्भावनापूर्ण इरादे के कारण उनका खर्च परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं होता, चाहे वे कितना भी खर्च करें। महान अल्लाह का कथन है:

﴿قُلْ أَنفِقُوا۟ طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ﴾

कह दो कि तुम स्वेच्छापूर्वक खर्च करो या अनिच्छापूर्वक, तुम से स्वीकार नहीं किया जाएगा। (अल-तौबह: 53)

उनके धन और संतान उनके लिए अज़ाब हैं:

﴿فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَٰلُهُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ﴾

अतः उनके माल तुम्हें मोहित न करें और न उनकी सन्तान, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके द्वारा उन्हें सांसारिक जीवन में यातना दे और उनके प्राण इस दशा में निकलें कि वे इनकार करनेवाले ही रहें। (अल-तौबह: 55)

कंजूस धनवान अलंकृत ग़रीब है, वह एक नौकर है जो दूसरे के लिए धन एकत्रित करता है, न स्वयं ही अपने धन से लाभान्वित हुआ और न निर्धनों के लिए कि उसे करके ऊंचा स्थान प्राप्त किया। कभी-कभी धनी व्यक्ति को खर्च करने में कंजूसी का सामना करना पड़ता है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

([1]) मुनाफ़िक़: वो व्यक्ति जो अंदर से काफिर होत है, किन्तु बाहर से ईमान का इज़हार करता है।

﴿وَمَن يَبۡخَلۡ فَإِنَّمَا يَبۡخَلُ عَن نَّفۡسِهِۦۚ﴾

जो कंजूसी करता है वास्तव में अपने आप पर ही कंजूसी करता है। (मुहम्मद: 38)

धन लालच और कंजूसी से सुरक्षित नहीं हो जाता और ना ही खर्च करने से घटता है। हसन बसरी कहते हैं: "दिरहम और दीनार कितने बुरे साथी हैं, जब तक वह तुमसे जुदा न हो जाते तुम्हें लाभ नहीं पहुंचा सकते।"

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَأَنفِقُواْ مِن مَّا رَزَقۡنَٰكُم مِّن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَ أَحَدَكُمُ ٱلۡمَوۡتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوۡلَآ أَخَّرۡتَنِيٓ إِلَىٰٓ أَجَلٖ قَرِيبٖ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ﴾

हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु आ जाए और उस समय वह कहने लगे: "ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ थोड़े समय तक और मुहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा (दान) करता (मुझे मुहलत दे कि मैं सदक़ा करूँ) और अच्छे लोगों में सम्मिलित हो जाऊँ।" (अल-मुनाफिक़ून: 10)

अल्लाह मुझे और आप को महान कुरान के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के अंतिम दूत ﷺ लोगों में सबसे अधिक उदार और दरियादिल थे, जब दान करते तो ज़्यादा करते, देते तो भर भर कर देते, जब उपहार भेंट करते तो उस व्यक्ति की तरह जिसे कंगाल होने का भय नहीं होता; अत: अपने नबी ﷺ के उदाहरण का पालन करो और गरीबों, निर्धनों, विधवाओं और अनाथों के घरों की खबर रखो; इसी में संकट से मुक्ति, भूखों की संतुष्टि, छोटों के लिए खुशी और परिवार को किसी के आगे हाथ फैलाने से बचाना है।

अल्लाह के गरीब बंदों को दान देना और उसकी कमजोर प्राणियों को खुश करना भी अल्लाह को धन्यवाद करने की एक शक्ल है। याद रखो कि धन लालच और कंजूसी से बच नहीं जाता और दान देने और खर्च करने से समाप्त नहीं हो जाता है।

अभागा कंजूस की तरह मत बनो, वह इस दुनिया में स्वयं को धन इकट्ठा करने में खपा देता है; फिर आखिरत में धन रोकने के कारण उसे हिसाब भी देना होगा, न इस दुनिया में वह चिंता से मुक्त रहा; न आखिरत के पाप से निजात पा सका, इस दुनिया में उसका जीवन निर्धनों सा जीवन रहा और आख़िरत में उसका हिसाब अमीरों जैसा होगा।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

रमज़ान के रोज़े

रमज़ान की तैयारी[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, अल्लाह की ओर से अधिक से अधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जैसे उससे डरना चाहिए और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

दिन और रात तीव्र गति से गुज़रते जा रहे हैं और वर्ष अपने महीनों को एक के बाद एक करके लपेट रहा है, ब्रह्मांड में अल्लाह का नियम है कि आना जाना लगा रहता है। अल्लाह ने अपने भक्तों को सम्मानित किया है; अत: उनके लिए साल में ऐसे मौसम अनुमेय किए जिनमें पापों और कुकर्मों को नष्ट किया जा सके और अच्छे कर्मों के उपकरण से सुसज्जित हुआ जा सके।

साल में एक ऐसा महीना होता है जो सबसे उत्तम महीना है, जिसमें अल्लाह ने अपना अंतिम दूत भेजा और अपनी किताब उतारी, प्रतिवर्ष हर मुस्लिम जिसकी प्रतीक्षा करता है, जिसके लिए मन में एक खुशी होती है, जिसमें इखलास (शुद्धता) के साथ इस्लाम के स्तंभों में से एक स्तंभ का पालन किया जाता है, जिसमें मुस्लिम भूखा रह कर भी आनंदित होता है, जिसमें एक भक्त इखलास का अर्थ प्राप्त करता है ताकि दिखावे से दूर इबादत के अन्य कार्यों

(1) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 21/08/1432 हिजरी को दिया गया।

में भी इसी प्रकार अग्रसर हो सके। रोज़े के प्रतिफल की कोई सीमा नहीं है; बल्कि यह परम उदार हस्ती (अल्लाह) से संबंधित हो चुका है। महामानव पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "महामहिम अल्लाह ने कहा: "आदम पुत्र का हर कार्य उसके लिए है, लेकिन रोज़ा विशेष करके मुझ से संबंधित है और मैं ही उसका प्रतिफल दूँगा।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

रोज़ा मन को सुधारता है, प्रशंसाएं अर्जित करने और बिगाड़ से दूर रहने की ओर आकर्षित करता है, इसके द्वारा पापों और कुकर्मों को क्षमा कराया जाता है, महामानव पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो ईमान की हालत में पुण्य की इच्छा रखते हुए रमज़ान महीने के रोज़े रखता है; उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

रमज़ान आज्ञाकारी, भलाई और प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने का महीना है, महामानव पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जब रमज़ान का आगमन होता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शैतानों को जकड़ दिया जाता है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इसमें प्यास की गर्मी और भूख की सख्ती पर धैर्य, तथा सनक और इच्छाओं के खिलाफ आत्म-संघर्ष करना होता है, रोज़ेदारों का इनाम स्वर्ग का एक विशेष द्वार होगा, जिससे उनके अलावा कोई और प्रवेश नहीं करेगा। रोज़े में ग़रीब और दरिद्र भूखे लोगों की स्थिति को महसूस कराया जाता है, रोज़े में निर्धन और धनी बराबर हो जाते हैं, सब अपने प्रभु की ख़ातिर रोज़े से होते हैं, अपने पापों की क्षमा चाहते हैं, एक ही समय में खाने से रुक जाते हैं, एक ही समय में रोज़ा खोलते हैं और दिन भर भूख और प्यास में सभी समान होते हैं ताकि सब के प्रति अल्लाह का कथन:

﴿إِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَٱعْبُدُونِ﴾

"निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अतः तुम मेरी बन्दगी करो।" (अल-अंबिया: 92)

सार्थक हो।

महान क़ुरआन धर्म की बुनियाद और महामानव मुहम्मद ﷺ के नबी होने की निशानी

है, सबसे उत्तम महीने में इसका अवतरण हुआ है:

﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ﴾

रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरआन उतारा गया। (अल-बक़रह: 185)

रमज़ान में अवतरण एक संकेत है कि उम्मत इस माह में अधिक से अधिक तिलावत और चिंतन मनन करे, जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आसमान से उतरते और महामानव पैग़ंबर ﷺ के साथ इस पवित्र महीने में कुरान का अध्ययन करते और जिस वर्ष आपकी मृत्यु हुई, जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप पर दो बार कुरआन पेश किया। इमाम मालिक (उनपर अल्लाह कि दया हो) जब रमज़ान आता तो क़ुरआन का पाठ करने में लग जाते और हदीस एंव हदीस वालों को छोड़ देते।"

लोक परलोक में दान से बड़ा लाभ होता है, यह कष्टों को दूर करता है, मामलों को आसान बनाता है, जीविका लाता है और पापों (की आग) को उसी प्रकार बुझा देता है, जैसे पानी आग को बुझाता है। दान क़यामत के दिन अपने मालिक के लिए एक छाया है, दान से पैसा कम नहीं होता बल्कि यह परम उदार एंव निस्पृह हस्ती (अल्लाह) के पास गारंटीकृत ऋण है।

﴿وَمَآ أَنفَقۡتُم مِّن شَيۡءٖ فَهُوَ يُخۡلِفُهُۥۖ﴾

और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

प्रभु इस दान को इस दुनिया में आशीर्वाद और पवित्रता में कई गुना बढ़ा देता है और आखिरत में अनंत आनंद के साथ दानी को पुरस्कृत करता है। महापुरुष पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "प्रतिदिन जब बंदे सुबह करते हैं तो दो फरिश्ते उतरते हैं; एक कहता है: हे अल्लाह खर्च करने वाले को उसकी जगह और दे और दूसरा कहता है: हे अल्लाह धन रोकने वाले को बर्बाद करदे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अतः ग़रीबों, निर्धनों, विधवाओं और अनाथों के घरों की खबर लेते रहो, इसी में संकट से मुक्ति, दुख से दूरी, भूखों की संतुष्टि, छोटों के लिए खुशी, परिवार के लिए पवित्रता और भीख मांगने से बचाओ है। अल्लाह के रसूल ﷺ लोगों में सबसे अधिक उदार और

दरियादिल थे, जब दान करते तो ज़्यादा करते, देते तो भर भर के देते, जब उपहार भेंट करते तो उस व्यक्ति की तरह जिसे कंगाल होने का बिल्कुल भय न हो, जब रमज़ान आता तो उदारता की लहर के साथ उसका स्वागत करते और भलाई के कामों में वर्षा की हवा की तरह दरियादिल हो जाते। धन, लालच और कंजूसी से बच नहीं सकता और खर्च करने से समाप्त नहीं होता।

रमज़ान की रातें साल भर की रातों की ताज हैं, "जो व्यक्ति रमज़ान में ईमान और सवाब की निय्यत से रात की नमाज़ पढ़े उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इन रातों का अंधेरा भी इबादत के द्वारा बहुत मूल्यवान हो जाता है, महामानव पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "फर्ज़ नमाज़ के बाद सबसे उत्तम नमाज़ रात की नमाज़ है।" और "जो इमाम के साथ उसके वापस जाने तक नमाज़ पढ़ता रहे; उसके लिए पूरी रात नमाज़ पढ़ने का सवाब लिखा जाता है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

इन्ही रातों में एक रात है जिसमें कई गुना बढ़ा कर सवाब दिया जाता है, यह तमाम रातों की सरदार है, इसको "भाग्य की रात" कहा जाता है, ये एक हज़ार महीनों से बेहतर है। इसके अलावा हर रात को आसमान से स्वीकृति का द्वार खोला जाता है, जबकि अपार दानी हस्ती (अल्लाह) के खज़ाने भरे हुए हैं; सो उस उदार हस्ती से उसकी उदारता का सवाल करो और रहीम (कृपालु) से उसकी रहमत (कृपा) भीख मांगो; रमज़ान पुरस्कारों, इनामों और उपहारों का महीना है और सबसे अक्षम वह है जो दुआ (प्रार्थना) से अक्षम हो।

दिन तो आयु के दस्तावेज हैं, भाग्यशाली वह है जिसने इन्हें अपने अच्छे कर्मों से अमर कर दिया। जिसे अल्लाह ने पापों के अपमान से निकाल कर आज्ञाकारिता के सम्मान तक पहुंचा दिया; उसे बिना धन के ही धनी बना दिया और बिना सुपरिचित के ही उसको परिचय दे दिया। पाप की कमी में ही मन की शांति है और जो अपने प्रभु को पहचान लेता है वह अपने मन की अभिलाषाओं को छोड़ कर उसी के साथ व्यस्त हो जाता है।

कुछ लोग इन क़ीमती रातों को खेलकूद और ग़ैर लाभकारी कार्यों द्वारा सस्ता बना लेते हैं, अत: जब रोज़े का महीना समाप्त होता है; तो सारे लोग लाभ प्राप्त कर रहे होते हैं, और वो उस समय घाटा उठा रहा होता है। कुछ लोग रोज़ा तो रखते हैं लेकिन नमाज़ नहीं पढ़ते,

मालूम होना चाहिए कि तौहीद और नमाज़ के बिना रोज़ा स्वीकृत नहीं होता।

महिला को क़ुरआन का अधिक से अधिक पाठ, जिक्र व दुआ, क्षमा याचना और नफली इबादत करने का आदेश दिया गया है, तरावीह की नमाज़ अपने घर में अदा करना मस्जिद में अदा करने से अधिक उत्तम है, महामानव पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "महिलाओं का घर उनके लिए अधिक उत्तम है।" (सुनन अबू-दाऊद)

महिला पर शालीनता, पर्दा एवं वली (संरक्षक) की उपस्थिति व अनुपस्थिति में अपने रब को निगरां बनाए रखना; अनिवार्य है। उनमें से अच्छी महिला से ब्रह्माण्ड के प्रभु की प्रसन्नता का वादा है। महिला का अपने धर्म को थामे रखना, अपने हिजाब द्वारा सम्मानित होना और पर्दा करना उसकी शान को बुलंद और स्थान को सम्मानजनक बना देता है, ऐसी महिला समाज के लिए गर्व, पवित्रता का ताज और जीवन का हीरा होती है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ﴾

ऐ ईमान लानेवालो! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ। (अल-बक़रह: 183)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा उपदेश

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक बना रहे।

प्रशंसा व सलाम के बाद, हे मुस्लिमो!

रमज़ान के स्वागत का सबसे अच्छा तरीका; अल्लाह से लगातार क्षमा मांगना और रमज़ान का शुभ अवसर प्राप्त होने पर उसकी अधिकाधिक प्रशंसा करना है। अच्छे कर्मों में आगे रहने वाले ही स्वर्ग में सर्वोच्च पद के लिए भी आगे होंगे, इसलिए अल्लाह के पवित्र महीने में उसकी दया के कारणों से अवगत हो जाओ, पुण्य और अच्छे कर्म करने में प्रतिस्पर्धा करो, इसमें परोपकार के प्रकारों को बढ़ाओ और पीठ पीछे बुराई, चुग़ली और अन्य पापों से ऊपर उठ जाओ। कहीं ऐसा न हो कि रातभर अवज्ञा में जाग कर भलाई का दामन तुम्हारे हाथ से छूट जाए और नींद तुम्हें इबादत करने से रोक दे। यदि तुम इस बात पर सक्षम हो कि अल्लाह की ओर तुम से पहले कोई न बढ़ पाए; तो ऐसा ज़रूर करो।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

रमज़ान का चाँद नज़र आ गया[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, अल्लाह की ओर से अधिक से अधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जैसे उससे डरना चाहिए और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

दिन और रात तीव्र गति से गुज़रते जा रहे हैं, वर्ष अपने महीनों को एक एक करके लपेटता जा रहा है और इस सब के बीच भक्त अल्लाह की ओर अग्रसर हैं और बहुत जल्द अपने कर्मों से भेंट करने वाले हैं। अल्लाह की अनुकंपा और कृपा है कि उसने युगों में कुछ अवसर आज्ञाकारिता के लिए चुन लिए और कुछ दिन, रात और घड़ियां चयनित करदीं ताकि उन घड़ियों में उत्सुकता बढ़ जाए, परिश्रम में वृद्धि हो और प्रतियोगी आपस में प्रतिस्पर्धा करते रहें।

जब भी रमज़ान का चांद दिखाई देता है हमारे लिए धन्य उपहार लेकर आता है, इसलिए मुस्लिम इसका स्वागत करते हैं, जबकि इसके प्रति उनके मन में एक जोश होता है और उनके दिल खुशी से भर जाते हैं। इस महीने में कितनी ही क़बूलियत (स्वीकृति) की घड़ियां हैं जो किसी भक्त को प्राप्त हो जाती हैं और इनके द्वारा वह संतोष और खुशी के दर्जों

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 02/09/1439 हिजरी को दिया गया।

तक पहुंच जाता है।

सबसे आदरणीय और शुद्धतम महीना हम पर आ गया है, एक महान अवसर जिसे अल्लाह ने सम्मान और उपकार के लिए चुना है, इसी में उसने अपने दूत को भेजा, अपनी किताब उतारी और इसके रोज़े को अनिवार्य किया। इसके क्षण अच्छाई से भरे होते हैं, इसमें लगातार अच्छाइयां आती रहती हैं और आशीर्वाद आम रहता है।

यह भलाई और सदक़े का मौसम और क्षमा और बुरे कर्मों के प्रायश्चित का समय है; इसके दिन में रोज़ा होता है और इसकी रात में नमाज़ और क़ुरआन से भरा क़ियाम होता है। इसमें स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं और शैतानों को जंजीरों में जकड़ दिया जाता है। इसमें एक रात होती है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, जो उसकी भलाई से वंचित हो गया वह वंचित ही रह गया।

रमज़ान इबादत के कार्यों में दौड़ के लिए एक विशाल मैदान है, यह गंदगी और विपत्तियों से मन को शुद्ध करने का विशेष अनुदान है, यह एक उदार महीना है जिसमें कर्म कई गुना बढ़ जाते हैं और पापों तथा ग़लतियों का प्रायश्चित होता है। महामानव पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "पाँच नमाज़ें, एक शुक्रवार दूसरे शुक्रवार तक और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक; अपने बीच के पापों का प्रायश्चित कर देते हैं, यदि बड़े पापों से बचा जाए।" (सही मुस्लिम)

रमज़ान के महीने में मुस्लिम इस्लाम के स्तंभों में से एक स्तंभ का पालन करते हैं, यह इस धर्म की महानता और मुस्लिमों की एकता का एक व्यावहारिक प्रकटीकरण है, इसी में महान अल्लाह का कथन:

﴿إِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمۡ أُمَّةٗ وَٰحِدَةٗ وَأَنَا۠ رَبُّكُمۡ فَٱعۡبُدُونِ﴾

"निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूँ। अतः तुम मेरी बन्दगी करो।" (अल-अंबिया: 92)

प्रकाशमान होता है।

अच्छे कर्मों के मौसमों का लाभ उठाना अल्लाह की ओर से अपने प्रिय भक्तों के लिए एक विजय है। रमज़ान में मुस्लिमों के लिए इबादत के सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक कार्य

इकट्ठा हो जाते हैं। नमाज़ भक्त और उसके प्रभु के बीच एक संबंध है, यह संबंध जीवन भर मुस्लिम से अलग नहीं होता, व्यक्ति पर जमाअत की नमाज़ अनिवार्य है, यह उसके घर और बाज़ार में नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस गुना बढ़कर है।

एक मुस्लिम को नमाज़ के लिए रोज़े से सहयोग लेना चाहिए और उसकी रात का बड़ा हिस्सा नमाज़ के नाम होना चाहिए; क्योंकि "जो व्यक्ति रमज़ान में ईमान और पुण्य की आशा के साथ नमाज़ अदा करता है उसके पिछले पाप क्षमा कर दिये जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) और "जो व्यक्ति इमाम के वापस जाने तक उसके साथ खड़ा नमाज़ पढ़ता है उसके लिए पूरी रात के क़ियाम (नमाज़) का सवाब होता है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

ज़कात (अनिवार्य दान) और सदका (स्वैच्छिक दान) धन के लिए पवित्रता और बढ़ोतरी का कारण है, इसमें मन के लिए निस्पृहता और पवित्रता है, मन, धन और संतान पर उसका प्रभाव पड़ता है, यह विपत्तियों को टालने वाला और खुशहाली को लाने वाला है, जो अल्लाह के बंदों पर लुटाता है अल्लाह भी उसपर लुटाता है, महामानव पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "महामहिम अल्लाह ने कहा: हे आदम पुत्र! खर्च कर; मैं भी तुझ पर खर्च करूंगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

"क़यामत के दिन "हर व्यक्ति अपने सदक़े की छाव में होगा" सो दान करो अगरचे थोड़ा ही हो, इस में अपने मन को साफ रखो और इसके द्वारा किसी वंचित को सांत्वना दो, "जो व्यक्ति किसी रोजेदार को इफ्तार कराएगा उसके लिए रोजेदार के बराबर पुण्य होगा।"

खूब ख़र्च करना और दरियादिली से काम लेना महामानव पैग़ंबर ﷺ का तरीका था, आप जब देते तो उस व्यक्ति की तरह देते जिसे निर्धन होने का कोई भय नहीं होता, जब खर्च करते तो खूब खर्च करते और किसी को देते तो भर भर कर देते, किसी मांगने वाले को वापस नहीं लौटाते, आपसे जो भी मांगा गया आपने दे दिया, आप ﷺ रमज़ान के महीने में सबसे ज्यादा उदार हो जाते, उस समय तो तैज़ हवा से भी अधिक उदार बन जाते।

इस पवित्र महीने में रोज़ा सबसे बड़ा अनुष्ठान है, जिसके दौरान मुस्लिम धर्म-परायणता से सुसज्जित होते हैं:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ﴾

ऐ ईमान वालो! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर अनिवार्य किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ। (अल-बक़रह: 183)

इसका पुण्य अनगिनत और बेहिसाब है, अल्लाह ने क़ुदसी हदीस में कहा है: "आदम पुत्र का हर कर्म उसी के लिए है, सिवाय रोज़े के, रोज़ा मेरे लिए विशेष है और मैं ही उसका बदला दूंगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) "जो व्यक्ति ईमान और पुण्य की आशा के साथ रोज़ा रखता है उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

रोज़ा रोज़ेदार और बुराइयों तथा पापों के बीच रुकावट बन जाता है, महामानव पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "रोजा ढाल है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

उमरा भी उन नेक कामों में से एक है जिन से पवित्र महीने में लाभ उठाया जा सकता है, महामानव पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "रमज़ान के महीने में उमरा हज के बराबर है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

क़ुरआन सर्वशक्तिमान अल्लाह का शब्द और सृष्टि के लिए उसका तर्क है, यह ज्ञान का स्रोत और ईश-दूतत्व का संकेत है, इसके सिवा अल्लाह की ओर जाने का कोई मार्ग नहीं, इसके बिना हमारे लिए कोई मोक्ष नहीं है, यह अंतर्दृष्टि और दृष्टि का प्रकाश है, जो इसके क़रीब हुआ वह सम्मानित हुआ, जिसने इसे प्राप्त किया उसे इज़्ज़त मिली, इसका पाठ उपहार और मार्गदर्शन है, इसका अध्ययन ज्ञान और दृढ़ता है, इस का पालन बचाव और सुरक्षा है और इसकी शिक्षा देना और इसकी ओर बुलाना नेक लोगों के सर का ताज है।

रमज़ान में क़ुरआन का अवतरण हुआ, इसलिए इस महीने में क़ुरआन पढ़ने, चिंतन करने, सीखने, शिक्षण, क्रिया और आज्ञाकारिता में अधिकाधिक भाग लेने का महत्व बढ़ जाता है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ هُدٗى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٖ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ﴾

रमज़ान का महीना वो है जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथा। (अल-बक़रह: 183)

जिब्रील (उनपर शांति हो) प्रति वर्ष एक बार हमारे पैग़ंबर ﷺ के साथ क़ुरआन का अध्ययन करते थे और आपकी मृत्यु वाले वर्ष में दो बार अध्ययन किया।

प्रार्थना एक इबादत और प्रभु से निकटता है, बिना थकावट का फायदा और बिना दुख का लाभ है, यह समृद्धि लाने वाला और हर विपत्ति का दुश्मन है, "कोई भी प्रार्थना के साथ कभी बर्बाद नहीं होगा।" इसके द्वारा बंदा अपनी इच्छाओं तक पहुँचता है और अपनी चाहत को प्राप्त कर लेता है। तो प्रार्थना ने कितनी ही दूर की चीजों को क़रीब किया है, कितनी ही कठिनाइयों को आसान किया है और कितनी ही पीड़ाओं से राहत दी है! सबसे स्वीकृति योग्य प्रार्थना वह है जो रात के अंतिम क्षणों में होती है, जब बंदा अपने प्रभु के आगे टूट जाता है तो प्रभु उसकी मांग को स्वीकृति देता है, अगर मन भूखा है तो दिल नर्म और साफ़ हो जाता है और रोज़ेदार की दुआ रद्द नहीं होती। इबने रजब कहते हैं: "रोज़ेदार अपने दिन और रात के दौरान इबादत में होता है, रोज़े की स्थिति में और रोज़ा खोलते समय उसकी दुआ कबूल की जाती है, सो वह अपने दिन में रोज़ेदार तथा धैर्यवान रहता है और रात में खाने वाला तथा धन्यवाद करने वाला होता है।" सो जो व्यक्ति अधिकाधिक आकाश के द्वार को खटखटाता है और स्वयं के लिए इन दिनों और रातों के कुछ क्षणों को ज़खीरा बना लेता है वही सफ़ल है।

अल्लाह को याद करना एक महान और सरल इबादत है, जो व्यक्ति अल्लाह को याद करता है अल्लाह उसे याद करता है, अगर बंदे की ज़बान ज़िक्र में व्यस्त नहीं रहेगी तो वह व्यर्थ बातों और गुनाहों में उसे व्यस्त रखेगा।

अच्छा व्यवहार धर्म का हिस्सा है, सृष्टि में परोपकार के सबसे बड़े हक़दार वो हैं जिनके अधिकार को अल्लाह ने अपने अधिकार के साथ जोड़ा है; अर्थात: माता-पिता, वही तुम्हारे स्वर्ग और नरक हैं और वही तुम्हारी अच्छी संगति के सबसे अधिक योग्य हैं। महामानव पैगंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो, उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो, उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो, प्रश्न हुआ: किस व्यक्ति की हे अल्लाह के

पैगंबर? आपने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अपने माता पिता में से किसी एक को या दोनों को बुढ़ापे में पाए और जन्नत में प्रवेश ना पा सके।" (सही मुस्लिम) और "रिश्ते का बंधन अल्लाह के सिंहासन के साथ लटका हुआ है; कहता है: जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसे जोड़ देगा और जो मुझे तोड़ेगा अल्लाह उसे तोड़ देगा।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

और "जिसे अपनी जीविका और जीवन में बढ़ोतरी की बात से प्रसन्नता होती है उसे रिश्तेदारी को निभाना चाहिए।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

पूर्ण नेकी ये है कि हर नुक़सान वाली और विरोधाभासी चीज़ से उसकी रक्षा की जाए, एक रोज़ेदार अपनी इबादत और अपने रोज़े को उसकी विकृतियों और बिगाड़ने वाली चीजों से बचाने के लिए सबसे ज़्यादा उत्सुक रहता है। महापुरुष पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "यदि तुम में से किसी के रोज़े का दिन हो तो उसे अश्लील बातें नहीं करनी चाहिए और न ही शोर करना चाहिए, यदि कोई उसे गाली दे या लड़ाई करे तो उसका उत्तर केवल इतना होना चाहिए कि मैं रोज़ेदार हूँ।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

नेक सलफ (पूर्ववर्ती महापुरुषों) का तरीक़ा था कि जब वे रोज़ा रखते तो मस्जिदों में बैठ जाते और कहते: "हम अपने रोज़े की रक्षा करते हैं और किसी की पीठ पीछे बुराई नहीं करते।" इस्लामी विद्वान इमाम अहमद ने कहा: "रोज़ेदार को अपनी जीभ को रोज़े से वचनबद्ध करना चाहिए और लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए।"

फिर हे मुस्लिमो!

पुण्य; प्रेमी को शुद्धता की ओर ले जाने वाले प्रेम और अच्छे अनुवर्ती पर उभारने वाली सत्यता के बिना, पूर्ण और अपने पथ तथा स्थान पर आधारित नहीं होता। जब तक कर्म के पीछे का कारण आदत या ख्वाहिश के बजाए ईमान न हो, और उसका उद्देश्य प्रतिष्ठा व दिखावे की तलाश के बजाए प्रभु के सवाब और उसकी प्रसन्नता की तलाश न हो, तब तक कोई भी कर्म इबादत और अल्लाह से निकटता का साधन नहीं बन सकता। जब ईमान और अल्लाह से पुण्य पाने की निय्यत किसी कर्म में एकत्रित हो जाते हैं; तो स्वीकृति और क्षमा प्राप्ति का लक्ष्य पूरा हो जाता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَسَارِعُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلۡأَرۡضُ أُعِدَّتۡ لِلۡمُتَّقِينَ﴾

और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार है जो अल्लाह का डर रखते हैं। (आल इमरान: 133)

अल्लाह मुझे और आप सबको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

दुनिया अपने सुख-दुख के साथ खत्म हो जाएगी, उम्र अपनी लंबी और छोटी अवधि के साथ अंतित हो जाएंगी और हर कोई अपने प्रभु से भेंट करेगा और उस समय

﴿لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۝ إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ﴾

न माल काम आएगा और न औलाद, सिवाय इसके कि कोई भला-चंगा दिल लिए हुए अल्लाह के पास आया हो।" (अश-शुअरा: 88-89)

इसलिए सच्ची तौबा (पश्चाताप) के साथ अपने महीने का स्वागत करें, इससे लाभान्वित होने और आज्ञाकारिता के साथ अपने समय का निर्माण करने का संकल्प लें; क्योंकि जीवन केवल गिनती की सांसों और सीमित समय सीमा का नाम है, और सम्माननीय समय का सदुपयोग करें।

घाटे में तो वह है जो रमज़ान तक पहुँचा और उसे क्षमा प्राप्त न हो सकी; महापुरुष पैग़ंबर साहब ने फ़रमाया: "उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो जिस पर रमज़ान आया फिर उसकी क्षमा प्राप्ति से पहले ही गुज़र गया।" (सुनन तिर्मिज़ी) और "जो असत्यता और उसके पालन को न छोड़े तो अल्लाह को उसके खाना पीना छोड़ने में कोई रुचि नहीं है।" (सही बुखारी)

अल्लाह का ज़िक्र, महान क़ुरआन के साथ लगे रहना, रात की नमाज़ और अच्छे लोगों की संगति; दिल के सबसे बड़े सुधारक हैं।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

क़ीमती दिन [1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो, अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

यह उम्मत एक ऐसे महीने से सम्मानित हुई है, जिसमें मन अवज्ञा, पापों और ग़लत आदतों से पवित्र होता है। इस महीने में मुस्लिम आज्ञाकारिता और क़ुरआन के पाठ के साथ अपना समय व्यतीत करते हैं, रोज़ा उनके मन को शुद्ध करता है, रात की नमाज़ उनकी नैतिकता को अनुशासित करती है और क़ुरआन उनके दिलों को नर्म करता है। वे इसकी रातों में गुणों पर और इसके दिनों में उदारता पर आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं।

रमज़ान के अंतिम दस दिनों में कर्म शुद्ध होते हैं और आशाएं प्राप्त होती हैं, उसकी रातें भक्ति और तहज्जुद से जिवित रहती हैं, मोमिनों की माता आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं: "जब रमज़ान के अंतिम दस दिन शुरू होते तो पैग़ंबर ﷺ रात को जागते और अपने परिवार को भी जगहते, तपस्या करते और कमर कस लेते।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 18/09/1426 हिजरी को दिया गया।

महामानव पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ रमज़ान के महीने में अपने अच्छे कर्मों को कई गुना बढ़ा देते, विशेष रुप से अंतिम दस दिनों में उनका कर्म कई गुना हो जाता था, मोमिनों की माता आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं "अल्लाह के दूत ﷺ रमज़ान के अंतिम दस दिनों में जितना परिश्रम करते उतना और दिनों में नहीं करते थे।" (सही मुस्लिम)

यह दस दिन का एक बाज़ार है जिसमें कमर कसने वाले आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं और एक परीक्षा है जिसमें हिम्मतों को आज़माया जाता है। रमज़ान के अंतिम दस दिनों में एक ऐसी बरकत वाली रात है जो सारे वर्ष की रातों की ताज है, उस में बरकतें बहुत अधिक हैं, उसकी घड़ियां बड़ी सम्माननीय हैं, इसका थोड़ा कर्म भी अधिक है और इसका अधिक भी कई गुना हो जाता है:

﴿لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡرٞ مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡرٖ﴾

क़द्र (सम्मान) की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। (अल-क़द्र: 3)

उस रात में उपस्थिति के लिए आसमान से महान सृष्टि उतरती है:

﴿تَنَزَّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذۡنِ رَبِّهِم﴾

उस रात में अपने प्रभु के आदेश पर फरिश्ते और महान आत्मा (जिब्रील) उतरते हैं। (अल-क़द्र: 4)

इसकी रात में इबादत के साथ खड़े होने वाले के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं; महापुरुष पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति ईमान और अल्लाह से पुण्य की निय्यत के साथ भाग्य की रात को नमाज़ अदा करता है; उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इस रात में द्वार खोल दिए जाते हैं और पुकार सुनी जाती है। इस रात में रब जोड़ता व तोड़ता है, देता व रोकता है और गिराता व उठाता है, मोमिनों की माता आइशा बयान करती हैं: मैंने कहा: हे अल्लाह के पैगंबर! मुझे बताइए अगर मुझे पता चल जाए कि कौनसी रात सम्मान की रात है तो मैं क्या कहूँ? आपने फ़रमाया: कहो:

"हे अल्लाह तू क्षमाशील है, क्षमा से प्रेम करता है, तो मुझे भी क्षमा कर दे।" (सुनन तिर्मिज़ी)

हे मुस्लिमो!

"फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ के बाद सबसे उत्तम नमाज़ रात की नमाज़ है।" (सही मुस्लिम) पैग़ंबर ﷺ यात्रा में होते या घर में, रात की नमाज़ नहीं छोड़ते थे, आप खड़े और बैठे इसे पढ़ते थे यहाँ तक कि आपके पांव फट जाते, आपके सहाबा का धन्य दल भी इसी पद्धति पर अग्रसर हुआ, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ رَبَّكَ يَعۡلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدۡنَىٰ مِن ثُلُثَيِ ٱلَّيۡلِ وَنِصۡفَهُۥ وَثُلُثَهُۥ وَطَآئِفَةٞ مِّنَ ٱلَّذِينَ مَعَكَۚ﴾

निश्चय ही आपका प्रभु जानता है कि आप लगभग दो तिहाई रात, आधी रात और एक तिहाई रात खड़े होकर नमाज़ अदा करते हैं और एक दल भी है जो आपके साथ होता है (ऐसा करता है)। (अल-मुज़्ज़म्मिल: 20)

पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿سِيمَاهُمۡ فِي وُجُوهِهِم مِّنۡ أَثَرِ ٱلسُّجُودِۚ﴾

उनकी पहचान यह है कि उनके चेहरों पर सजदों के निशान हैं। (अल-फत्ह: 29)

अल्लाह के लिए अंधेरों में खड़े नमाज़ पढ़ना ईमान वालों के कर्मों में से एक है:

﴿كَانُواْ قَلِيلٗا مِّنَ ٱلَّيۡلِ مَا يَهۡجَعُونَ﴾

वे रातों को थोड़ा ही सोते थे (अज़-ज़ारियात: 17)

रात की नमाज़ आशा का सबसे बड़ा केंद्र और प्रस्तुत की जाने वाली सबसे पवित्र चीज़ है, यह जन्नत में प्रवेश के कारणों में से एक है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! सलाम फैलाओ, खाना खिलाओ, रिश्तों को जोड़ो, जब लोग सो रहे हों उस समय रातों को नमाज़ पढ़ो; इस तरह तुम जन्नत में शांति के साथ प्रवेश कर जाओगे।" (सुनन तिर्मिज़ी)

जो व्यक्ति रमज़ान की रातों को उठ कर नमाज़ अदा करता है उसे क्षमा की शुभसूचना दी गई है, महापुरुष पैग़ंबर साहब ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति ईमान और अल्लाह से पुण्य पाने की नियत से रमज़ान की रातों में नमाज़ अदा करता है उसके पिछले पाप माफ कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

प्रार्थना आकाश और पृथ्वी के बीच फैली रस्सी है, यह बिना थकावट का लाभ और रोग के लिए सबसे अधिक लाभकारी औषधियों में से एक है:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلۡمُضۡطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكۡشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है। (अन-नम्ल: 62)

हर रात स्वीकृति की एक घड़ी होती है, जिसमें द्वार खुल जाते हैं और परम उदार प्रभु प्रदान करता है; इसलिए आप जो कुछ भी चाहते हैं मांग लें, परमेश्वर के भण्डार भरे हुए हैं, देनेवाला परम उदार प्रभु है; स्वीकृति का निश्चय रखें, प्रभु शक्तिशाली है, अपनी शिकायत उसी के पास रखें; क्योंकि वह परम दयालु है। अल्लाह के पैग़ंबर ﷺ फ़रमाते हैं: "रात में एक घड़ी ऐसी होती है कि अगर किसी भी मुस्लिम व्यक्ति का उससे संयोग प्राप्त हो जाए और वो अल्लाह से दुनिया और आखिरत की कोई भी भलाई मांग ले तो अल्लाह उसे ज़रूर प्रदान करता है, और यह हर रात की बात है।" (सही मुस्लिम) रात के अंतिम पहर की हवाएं दुआ की स्वीकृति का समय रखती हैं, अल्लाह के पैग़ंबर ﷺ से पूछा गया: कौन सी दुआ सबसे अधिक सुनी जाती है? तो आपने फ़रमाया: "रात के आखिरी पहर के दौरान और हर फ़र्ज़ नमाज़ के अंत की दुआ।" (सुनन तिर्मिज़ी)

बंदे को अपने गुनाहों के दाग मिटाने, अल्लाह के सामने विनम्रता और उस के समक्ष बेबस बनने की आवश्यकता है, दीनता की सबसे उम्मीद भरी स्थिति: अल्लाह के घरों में एतिकाफ़(1) करना और अल्लाह से माफ़ी माँगना है। हमारे पैग़ंबर ﷺ रमज़ान के अंतिम दस दिनों में एतिकाफ़ करते थे।

जब बंदा अपने रब के क़रीब आता है तो प्रभु उस पर मेहरबान हो जाता है, उसकी

---

(1) एतिकाफ़: अल्लाह की ओर ध्यान केंद्रित करने रात दिन मस्जिद में गुज़ारना, विशेष रूप से ये इबादत रमजान के अंतिम दस दिनों में अंजाम दी जाती है।

ओर ऐसी जगह से भलाई खींच लाता है जहां का उसे आभास भी नहीं होता और बुराई से उसकी इस प्रकार हिफ़ाज़त करता है कि उसे अनुमान भी नहीं होता।

हे मुस्लिमो!

ज़कात इस्लाम के स्तंभों और उसकी महान इमारतों में से एक है, यह मुसलमानों के बीच स्नेह के बंधन को मजबूत करता है, यह मन को कंजूसी से पवित्र और शुद्ध करता है। महान अल्लाह ने फ़रमाया

﴿خُذۡ مِنۡ أَمۡوَٰلِهِمۡ صَدَقَةٗ تُطَهِّرُهُمۡ وَتُزَكِّيهِم بِهَا﴾

तुम उनके माल में से दान लेकर उन्हें शुद्ध करो और उसके द्वारा उन (की आत्मा) को विकसित करो (अल-तौबह: 103)

यह एक अनिवार्य अधिकार, लाज़मी दायित्व और एक न्यायपूर्ण कानून है, जिसमें अल्लाह से आशीष, वृद्धि और अच्छे बदले की प्राप्ति होती है।\

﴿وَمَآ أَنفَقۡتُم مِّن شَيۡءٖ فَهُوَ يُخۡلِفُهُۥۖ﴾

और जो कुछ तुमने खर्च किया उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

ज़कात में उदारता और दरयादिली के साथ आत्मा और नैतिकता की बुलंदी है, इसी से न्याय पूरा होता है, समृद्धि आम होती है और गरीबों को सुख मिलता है। यह अमीरों का आभूषण, नेक लोगों का श्रृंगार और नबियों की वसीयत है:

﴿وَٱذۡكُرۡ فِي ٱلۡكِتَٰبِ إِسۡمَٰعِيلَۚ إِنَّهُۥ كَانَ صَادِقَ ٱلۡوَعۡدِ وَكَانَ رَسُولٗا نَّبِيّٗا ۞
وَكَانَ يَأۡمُرُ أَهۡلَهُۥ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ وَكَانَ عِندَ رَبِّهِۦ مَرۡضِيّٗا﴾

और इस किताब में इसमाईल की चर्चा करो। निस्संदेह वह वादे का सच्चा और एक रसूल, नबी था। और अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था। और वह अपने रब के यहाँ प्रीतिकर व्यक्ति था। (मरयम: 54-55)

जो लोग ज़कात देने में कंजूसी करते हैं उनके लिए चेतावनी आई है, अल्लाह फ़रमाता है:

﴿وَٱلَّذِينَ يَكۡنِزُونَ ٱلذَّهَبَ وَٱلۡفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ فَبَشِّرۡهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٖ﴾

और जो लोग सोना और चाँदी एकत्र करके रखते है और उन्हें अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो (अल-तौबह: 34)

सही हदीस में है कि पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जिस को अल्लाह ने धन दिया, फिर उसने उसकी ज़कात अदा नहीं की; तो उसके धन को अत्यंत विषाक्त गंजे सांप का रूप धारण कर लेगा, जिसकी आँखों के पास दो काले बिंदु होंगे, पुनरुत्थान के दिन इसे उसकी गर्दन में डाल दिया जाएगा, फिर सांप उसके दो जबड़ों को पकड़कर कहेगा: मैं तुम्हारा धन हूँ, मैं तुम्हारा खज़ाना हूँ, फिर पैगंबर ﷺ ने अल्लाह के कलाम की तिलावत फ़रमाई:

﴿وَلَا يَحۡسَبَنَّ ٱلَّذِينَ يَبۡخَلُونَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضۡلِهِۦ هُوَ خَيۡرٗا لَّهُمۖ بَلۡ هُوَ شَرّٞ لَّهُمۡۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُواْ بِهِۦ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۗ﴾

जो लोग उस चीज़ में कृपणता से काम लेते हैं, जो अल्लाह ने अपनी उदार कृपा से उन्हें प्रदान की है, वे यह न समझें कि यह उनके हित में अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है। जिस चीज़ में उन्होंने कृपणता से काम लिया होगा, वही क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ बन जाएगा। (आल इमरान: 180)" (सही बुखारी)

तो अपने मन से दरिद्र के लिए विनम्र हो जाओ, उसके लिए धन खर्च करो, उसके निकट आओ, उससे प्रेम करो और किसी ग़रीब को हीनता से ना देखो; क्यूंकि जन्नत जाने वालों में अधिकांश ग़रीब होंगे। हाथ की उदारता और मन की दयालुता के साथ खर्च करो; तुम्हारे धन और संतान में बरकत होगी। दान करना बीमारियों और मुसीबतों का इलाज है; अत: दुर्बल और जरूरतमंदों को तलाश करो, उन पर दया करो; तुम पर दया कि जाएगी, क्योंकि कोई भी ग़रीब अगर शिकायत करता है तो वह धनवान की कोताही से ऐसा करने पर मजबूर होता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱرۡكَعُواْ وَٱسۡجُدُواْۤ وَٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمۡ وَٱفۡعَلُواْ ٱلۡخَيۡرَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ﴾

ऐ ईमान लानेवालो! झुको और सजदा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भलाई करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो। (अल हज: 77)

अल्लाह मुझे और आप सबको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

प्रशंसा और सलाम के बाद:

महान महीने की अपनी पवित्रता होती है, एक मुस्लिम के लिए रोज़े को तोड़ने वाली चीज़ों से दूर रहना अनिवार्य है, इसी तरह उसके लिए अपनी निगाह को निषिद्ध देखने से, अपने कान को बुरी बातों से और अपने समय को फ़ालतू चीज़ों से बचा कर रखना भी ज़रूरी है। इस महीने में शेष समय का अपना मूल्य और संक्षिप्त समय का अपना महत्व है, इसमें बुरे कर्मों पर अश्रु बहाए जाते हैं। महिमा के मालिक (अल्लाह) ने कितने ही लोगों को जहन्नम से आज़ाद किया होता है और कितने ही पाप के बंधक होते हैं जिनको अल्लाह बिखरने के बाद दोबारा जोड़ देता है और दुर्भाग्य की एक लंबी अवधि के बाद उनके लिए सुख लिख देता है!

स्त्री को रास्ते की बाधाओं से बच कर रहना चाहिए और बिना आवश्यकता बाजारों में नहीं जाना चाहिए, साथ ही शुद्धता, पर्दे और विनय की पाबंदी करनी चाहिए।

मुस्लिम के लिए धन्य रमज़ान के दिनों में कोई अच्छा शाश्वत कर्म करके सच्चा पश्चाताप करना अनिवार्य है; क्योंकि जीवन तो केवल कुछ सांसों और सीमित समय सीमा का नाम है और आपके दिन इस समय सीमा की ओर एक सवारी हैं; इसलिए काम करें, आशा करें और खुश रहें। ठगा हुआ वह है जो अल्लाह की आज्ञाकारिता के अलावा किसी अन्य चीज़ में व्यस्त हो गया और वंचित वह है जो भाग्य की रात से वंचित हो गया या जिस पर रमज़ान का पवित्र महीना तो आया, लेकिन उसे क्षमा प्राप्त नहीं हो सकी। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो जिस पर रमज़ान का महीना आया फिर उसकी क्षमा प्राप्ति से पहले गुजर गया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

रमज़ान के अंतिम दस दिनों के गुण[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो, अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपने बंदों पर आशीषों की वर्षा की और लगातार उन्हें उपहार और उपकार देता रहा, बहुतायत और प्रचुरता में उसके उपहारों की कोई सीमा नहीं है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "प्रभु का हाथ भरा हुआ है, खर्च करने से उसमें कमी नहीं आती, वो दिन रात लुटाने वाला है, अर्थात: लगातार देने वाला है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

वह अच्छी और सम्मानजनक चीजों को लुटाता रहता है; उसकी उदारता ने सृष्टि को घेर रखा है और उसके उपहार उनके लिए चिरस्थायी हैं, उसके आशीर्वाद और जीविकाएं लगातार बनी हुए हैं, वो मांगने से पहले ही बंदों को देना शुरू कर देता है, वह उन्हें कल्पना से अधिक नवाज़ता है और आसमान और पृथ्वी में कोई भी इन उपहारों से अलग नहीं है।

सबसे बढ़कर अल्लाह ही इस बात का योग्य है कि प्रेम और आराधना को उसके लिए

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 21/09/1438 हिजरी को दिया गया।

शुद्ध करते हुए, उसकी कृपा को उसी की ओर संबंधित करते हुए और उसके उपकार को उसी की आज्ञाकारिता में लगाते हुए, उसके उपहारों पर उसकी प्रशंसा की जाए और उसे याद किया जाए। उसका एक आशीष ये है कि वह अपने भक्तों में से जिसे चाहता है क्षमा करता है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ﴾

वास्तव में अल्लाह क्षमा करने वाला, माफ़ करने वाला है। (अल-हज: 60)

वो सदा से अपने भक्तों को बहुत से पापों पर दंडित न करके उन्हें क्षमा करता आया है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَيَعْفُواْ عَن كَثِيرٍ﴾

और बहुत कुछ तो वह क्षमा कर देता है। (अश-शूरा: 30)

वो क्षमाशील है, क्षमा से प्रेम करता है और अपनी सृष्टि से भी यही चाहता है कि वो इस्तिग़फ़ार, तौबा, पश्चाताप और अच्छे कर्मों द्वारा क्षमा के कारणों को प्राप्त करने का प्रयास करें।

रमज़ान में अल्लाह के उपहार और क्षमा प्रकट होते हैं, इसमें कर्म कई गुना बढ़ जाते हैं, पाप और गुनाह मिटाए जाते हैं। यह रोज़े, क़ुरआन, पुण्य और भलाई का महीना है, जिसमें अल्लाह के साथ व्यापार कई गुना बढ़ जाता है। इब्ने-जौज़ी ने कहा: "समय के सम्मान की वृद्धि के साथ काम के इनाम में भी वृद्धि होती है, ठीक ऐसे हो जैसे उसमें मन की उपस्थिति और इरादे की शुद्धता से वृद्धि होती है।"

रमज़ान में रात की नमाज़ (तरावीह) की एक अलग ही शान होती है। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति रमज़ान के महीने में ईमान और अल्लाह से पुण्य-प्राप्ति की नियत के साथ रात की नमाज़ अदा करता है; उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) और जो रात की नमाज़ पर स्थिर रहता है वह शांति के साथ जन्नत में प्रवेश करेगा, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "ए लोगो! शांति फैलाओ, भोजन कराओ, रिश्तेदारी जोड़ो और रात को उस समय नमाज़ अदा करो जब लोग सो रहे हों, तुम जन्नत में शांति के साथ प्रवेश कर जाओगे।" (मुस्नद अहमद)

सदका, सदका करने वाले के ईमान का प्रमाण है, हर व्यक्ति क़यामत के दिन अपने

सदक़े की छांव में होगा, खर्च करने वाले को सम्मान और क्षमा का वादा है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَمَآ أَنفَقۡتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوۡ نَذَرۡتُم مِّن نَّذۡرٖ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُهُۥۗ﴾

और तुमने जो कुछ भी ख़र्च किया और जो कुछ भी नज़र (मन्नत) की हो, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। (अल-बक़रह: 270)

धन्य दिनों में खर्च करने का पुण्य और बढ़ जाता है, पैग़ंबर साहब लोगों में सबसे अधिक उदार थे और उससे भी बढ़ कर उदार आप रमज़ान के महीने में होते थे। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

रमज़ान में उमरे का पुण्य भी महान होता है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "रमज़ान में उमरा हज के समान है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

दुआ; इबादत और उसका मस्तिष्क है, उसके द्वारा ख़ुशहाली लाई जाती है और मुसीबत से बचाव होता है। और रोज़ेदार के पास एक दुआ होती है जो कभी रद्द नहीं होती; पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन की दुआ रद्द नहीं होती; रोजेदार जब तक इफ्तार ना कर ले, न्याय करने वाला अधिकारी और पीड़ित व्यक्ति की दुआ को अल्लाह बादलों के ऊपर उठा लेता है, उसके लिए आसमान के द्वार खोल देता है और प्रभु कहता है: मेरे सम्मान की क़सम! कुछ समय बाद ही सही, मैं इसकी सहायता अवश्य करूँगा।" (सुनन तिर्मिज़ी)

क़ुरआन एक प्रमाण, सिफ़ारिशी, मार्गदर्शन और उपचार है, अल्लाह ने इसके पाठक से अच्छे उपहार और अपनी अधिक अनुकंपा का वादा किया है। पवित्र प्रभु ने फ़रमाया

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَتۡلُونَ كِتَٰبَ ٱللَّهِ وَأَقَامُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُواْ مِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ سِرّٗا وَعَلَانِيَةٗ يَرۡجُونَ تِجَٰرَةٗ لَّن تَبُورَ ۞ لِيُوَفِّيَهُمۡ أُجُورَهُمۡ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضۡلِهِۦٓۚ﴾

निश्चय ही जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, और जिन्होंने नमाज़ क़ायम की, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से छिपे और खुले ख़र्च किया, वे एक ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जो कभी तबाह न होगा, ताकि परिणामस्वरूप वह उन्हें उनके प्रतिदान पूरे-पूरे दे और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक भी प्रदान करे। (फ़ातिर: 29-30)

अल्लाह ने इसे चिंतन के लिए अवतीर्ण किया, इसमें उपदेश और सीख शामिल हैं,

अबू बकर सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक इमाम के रूप में जब नमाज़ में लोगों का नेतृत्व करते; तो अल्लाह के डर के कारण अपने पीछे वालों को मुश्किल से ही सुना पाते थे।

रमज़ान अपने प्रतियोगियों के लिए एक विशाल मैदान है, यह पुण्य और अच्छे कर्मों की बहुतायत और रिश्तेदारी के संबंध जोड़ने का समय है, जिसमें मन शुद्ध होते हैं, नैतिकता पवित्र होती है, सृष्टि एक दूसरे के निकट आती है और वे एक दूसरे के प्रति सहानुभूति करते हैं।

ये एक धन्य मौसम है, जिसके दिनों ने अपने अंत का संकेत दे दिया है, बुद्धिमान है वह जिसने अपने दस दिनों का लाभ उठाया और उन्हें प्रभु से निकटता और आज्ञाकारिता के साथ आबाद किया, अपने दिन को सुरक्षित रखा और अपनी रात को जगाया; "पैग़ंबर ﷺ रमज़ान के अंतिम दस दिनों में ऐसा परिश्रम करते जो दूसरे दिनों में नहीं करते थे।" (सही मुस्लिम) और "रमज़ान के अंतिम दस दिन जब शुरू होते तो पैग़ंबर ﷺ रात को जागते, अपने परिवार को जगाते, परिश्रम करते और कमरकस लेते।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इन बची हुई बरकत वाली रातों में अधिकाधिक अल्लाह का ज़िक्र और क़ुरआन की तिलावत करना पसंदीदा कार्य है। इब्ने रजब कहते हैं: "गुण वाले समय -जैसे रमज़ान का महीना और उसमें विशेष रूप से वो रातें जिनमें भाग्य की रात तलाश की जाती है- ऐसे समय का अधिक से अधिक क़ुरआन के पाठ कर सदुपयोग करना वांछनीय है।

एक मुस्लिम के लिए उचित है की इन रातों में सबसे लाभदायक और समावेशी दुआओं के प्रति उत्सुक रहे, ईमान वालों की माता आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) कहती हैं: "हे अल्लाह के पैग़ंबर! अगर मैंने संयोगवश भाग्य की रात को पा लिया तो आपके खयाल में मुझे क्या कहना चाहिए? तो आपने फ़रमाया कहो: हे अल्लाह तू क्षमाशील है, क्षमा से प्रेम करता है अत: मुझे भी क्षमा कर दे।" (मुस्नद अहमद)

एतिकाफ़ बुरे कर्मों का प्रायश्चित करने और दर्जे बढ़ाने के लिए सबसे अच्छे कार्यों में से एक है, पैग़ंबर ﷺ अपनी मृत्यु तक रमज़ान के अंतिम दस दिनों में एतिकाफ़ करते रहे, आपकी मृत्यु के बाद आपकी पत्नियां भी एतिकाफ़ करती रहीं। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) ज़ोहरी कहते हैं: "मुस्लिमों पर आश्चर्य है कि उन्होंने एतिकाफ़ छोड़ दिया जबकि पैग़ंबर ﷺ ने मदीने में प्रवेश करने के बाद से उसे कभी नहीं छोड़ा था, जब तक कि प्रभु ने आपको बुला नहीं लिया!"

एतिकाफ़ करने वाले को इबादत हेतु बेकार के मेलजोल, बातचीत और सोने से दूर

सबसे अलग अपने बड़े उद्देश्य के साथ खुद को व्यस्त रखना चाहिए और आवश्यकता के अलावा मस्जिद से बाहर नहीं निकलना चाहिए, इब्ने क़य्यिम ने कहा: "एतिकाफ़ का उद्देश्य और उसकी आत्मा है: सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति हृदय की भक्ति, उसके साथ मन का जुड़ाव, उसके साथ एकांत और वैराग्य, सृष्टि के साथ व्यस्तता से कट कर अकेले प्रभु के साथ व्यस्तता, जहां उसका ज़िक्र प्यार और उसकी ओर ध्यान; दिल की चिंताओं और मन के खयालों का स्थान लेले।"

मुस्लिम रमज़ान की अंतिम दस रातों में भाग्य की रात को तलाश करते हैं, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "भाग्य की रात को रमज़ान के अंतिम दस दिनों में तलाश किया करो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) ये प्रतिष्ठा और सम्मान वाली एक महान रात है, जिस के बारे में अल्लाह ने उसकी योग्यता को महिमामंडित करने, उसके स्थान को सम्मानित करने और उसकी हैसियत बढ़ाने के लिए पूरी एक सूरत अवतीर्ण कर दी।

﴿وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ﴾

और तुम्हें क्या पता कि भाग्य की रात क्या है! (अल-क़द्र: 2)

उसने उस रात को बहुत आशीष युक्त बनाया:

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةٖ مُّبَٰرَكَةٍۚ﴾

हमने क़ुरआन को एक बरकत वाली रात में अवतीर्ण किया है। (अल-दुखान: 2)

इस रात का एक आशीष क़ुरआन का अवतरण है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ﴾

हमने क़ुरआन को भाग्य की रात में अवतीर्ण किया है। (अल-क़द्र: 1)

इस रात में फरिश्ते पृथ्वी की ओर उतरते हैं, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿تَنَزَّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذۡنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمۡرٖ﴾

उसमें फ़रिश्ते और रूह (जिबरील) हर महत्वपूर्ण मामलें में अपने रब की अनुमति से उतरते है। (अल-क़द्र:-4)

इब्ने कसीर कहते हैं: "इस रात फरिश्ते आशीषों की प्रचुरता के कारण बहुत बार उतरते

हैं; फ़रिश्ते तब उतरते हैं जब आशीष और रहमत उतरती है, ठीक ऐसे ही जैसे वे क़ुरआन की तिलावत के समय उतरते हैं, ज़िक्र की मंडलियों को घेरते हैं और सच्चे विद्यार्थि की महिमा करते हुए उसके लिए अपने पंख बिछा देते हैं।"

यह शांति, चैन और आश्वासन की रात होती है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿سَلَٰمٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ﴾

फ़ज्र के उदय होने तक वह रात पूर्णता शांति होती है। (अल-क़द्र: 5)

अर्थात हर बुराई से सुरक्षित होती है, उसमें इबादत के द्वारा जागना बड़ा लाभदायक है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ﴾

भाग्य की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। (अल-क़द्र: 3)

इसी में सृष्टि की तक़दीर (नियति) वर्ष भर के लिए निर्धारित की जाती है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۞ أَمْرًا مِّنْ عِندِنَآ﴾

उस रात को समस्त तत्वदर्शिता युक्त मामलों का फैसला किया जाता है, फैसला हमारे यहां से होता है आदेश के रूप में। (अल-दुखान: 4-5)

फिर हे मुस्लिमो!

कार्य अंत पर निर्भर करता है, अंत की पूर्णता मायने रखती है, शुरुआत की कमी नहीं। जिसने अतीत में गलत किया है वो बचे हुए दिनों में पश्चाताप कर ले; पश्चाताप का द्वार खुला है और अल्लाह का इनाम उपलब्ध है:

﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجْعَل لَّهُۥ مَخْرَجًا﴾

और जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए रास्ता निकाल देता है। (अल-तलाक़: 2)

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِن تَتَّقُواْ ٱللَّهَ يَجۡعَل لَّكُمۡ فُرۡقَانٗا وَيُكَفِّرۡ عَنكُمۡ
سَيِّـَٔاتِكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡۗ وَٱللَّهُ ذُو ٱلۡفَضۡلِ ٱلۡعَظِيمِ﴾

ऐ ईमान लानेवालो! यदि तुम अल्लाह का डर रखोगे तो वह तुम्हें एक विशिष्टता प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर करेगा और तुम्हे क्षमा करेगा। अल्लाह बड़ा अनुग्राहक है। (अल-अंफाल: 29)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा खुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

संसार कुछ घंटों और दिनों का नाम है, यह युगों के पन्नों का ही एक भाग है, इन सबके बीच एक मनुष्य का कर्म ही उसकी आयु है। भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसने अपने अच्छे कर्मों द्वारा अपनी आयु को अमर कर दिया और सफल है वह इंसान जिसने अपने समय के अच्छे पलों का अच्छे कर्मों द्वारा सदुपयोग किया और अपना थोड़ा समय भी बर्बाद नहीं किया, अत्याचारी है वह जो अपने मामलों की उपेक्षा करता है, जिसका दिल लापरवाह है और जो अपनी इच्छाओं का पालन करता है और वंचित है जो रमज़ान में भलाई से वंचित रह गया।

पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो जिस पर रमज़ान आया और उसकी क्षमा प्राप्ति से पहले ही गुज़र गया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

भाग्य की रात [1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, अल्लाह की ओर से अधिक से अधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जैसे उससे डरना चाहिए और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपनी पूजा के लिए दो सृष्टियां बनाईं, अल्लाह उनसे निस्पृह है मगर वे अल्लाह से निस्पृह नहीं हैं, केवल उसकी पूजा करना ही आनंद के स्वर्ग में प्रवेश करने का कारण है। "एक आदमी पैग़ंबर ﷺ के पास आया और कहा: मुझे ऐसा कर्म बताएं जिसको करने के बाद मैं स्वर्ग में प्रवेश कर सकूं, आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह की पूजा करो और उसके साथ किसी को भी साझी न बनाओ, नमाज़ अदा करो, अनिवार्य ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

वैसे तो उस महान प्रभु की इबादत हर जगह और हर समय करनी है, लेकिन पवित्र प्रभु ने रमज़ान को अपनी इबादत का मौसम बनाया है, पैगंबर ﷺ रमज़ान में विशेषता के साथ ऐसी इबादत करते थे जो दूसरे महीनों में नहीं करते थे और आपके साथी भी रमज़ान के क्षणों का सदुपयोग करने में उत्सुक रहते, अत: अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उनके साथी

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 20/09/1435 हिजरी को दिया गया।

"जब रोज़ा रखते तो मस्जिद में बैठ जाते और कहते: हम अपने रोज़े को शुद्ध कर रहे हैं।" (हिल्या: अबू नुऐम)

उस महान प्रभु की कृपा है कि उसने रमज़ान के मौसम में भी कई अवसर रखे हैं, चुनांचे उसने महीने की सभी रातों की तुलना में अंतिम दस रातों को प्राथमिकता दी और भाग्य की रात को महीने की सबसे अच्छी रात बनाया। पैगंबर ﷺ रमज़ान के अंतिम दस दिनों में ऐसे विशेष कर्म करते जो दूसरे महीनों में नहीं करते थे: "जब अंतिम दस दिन आते, तो आप अपनी रात को पुनर्जीवित करते, अपने परिवार को जगाते और अपनी कमर कस लेते।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) वो परिश्रम करते, अल्लाह की आज्ञाकारिता में तपस्या करते, उसमें एक धन्य रात की तलाश करते जो रातों का ताज है, उसकी बरकतें बहुत हैं, उसके घंटे गिने चुने हैं, पवित्र प्रभु ने उसके उच्च स्थान का उल्लेख किया है और उस रात की महानता स्पष्ट की है; पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ﴾

और तुम्हें क्या पता है कि भाग्य की रात क्या है! (अल-क़द्र: 2)

इसमें थोड़ा सा कार्य भी बहुत अधिक होता है और अधिक कार्य कई गुना बढ़ा दिया जाता है, इसकी पूजा हजार महीनों की पूजा से बेहतर है, और आसमानी किताबों में से बेहतरीन किताब इसी रात में उतरी है:

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ﴾

निस्संदेह हमने क़ुरआन को भाग्य की रात में उतारा है। (अल-क़द्र: 1)

महान क़ुरआन को सम्मानित करने का एक तरीका यह है कि जिस महीने में यह अवतीर्ण हुआ है उसमें अधिक से अधिक इसका पाठ किया जाए:

﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ﴾

रमज़ान का महीना ही है जिसमें क़ुरआन का अवतीर्ण हुआ। (अल-बक़रह: 185)

जिब्रील पैग़ंबर ﷺ के साथ रमज़ान की हर रात में क़ुरआन का अध्ययन करते थे और आपकी मृत्यु वाले वर्ष रमज़ान में दो बार आपके साथ क़ुरआन का अध्ययन किया; अतः रमज़ान में क़ुरआन का पुण्य प्राप्त करने हेतु एक मुस्लिम के लिए नेकियों के महीने में अल्लाह की किताब को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना ही उचित है।

भाग्य की रात एक महान रात है, अल्लाह ने हमें बताया है कि इसमें निम्नलिखट घटनाएं घटती हैं: इस रात में हर मामले को अलग किया जाता है - अर्थात: लौह-ए-महफूज़[1] (सुरक्षित तख्ती) से वर्ष भर के सारे मामले को अलग करके नियति लिखने वाले फरिश्तों को दे दिया जाता है, जिसमें उस वर्ष की समय-सीमाएं, आजीविकाएं, अच्छाई और बुराई आदि होते हैं। नववी ने कहा: "इस रात का नाम क़द्र की रात है, अर्थात: शासन और फैसले की रात।" इसमें प्रभु जोड़ता और तोड़ता है, गिराता और उठाता है, देता और रोकता है; जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ﴾

इसमें हर तत्वदर्शिता युक्त मामले को प्रतिष्ठित किया जाता है। (अल-दुख़ान: 4)

अर्थात: ईश्वर इसमें जो निर्धारित करता है वह निर्णायक है, इसमें परिवर्तन या बदलाव नहीं होता।

इसके आशीर्वाद की बहुतायत के कारण इसमें फ़रिश्ते उतरते हैं -और फ़रिश्ते आशीर्वाद और दया के साथ उतरते हैं- ये एक ऐसी रात है जो अल्लाह की ओर से शांति है, सो यह संपूर्ण रूप से अच्छी है और फ़ज्र के उदय तक इसमें कोई बुराई नहीं। अंतिम दस रातों के ये कौनसी रात है इसका ज्ञान इसलिए किसी को नहीं दिया गया है, ताकि इसके चाहने वाले इसे प्राप्त करने का अधिक प्रयास करें और मुस्लिम सभी दस रातों में इबादत में वृद्धि करें।

रमज़ान की अंतिम दस रातों में अधिक दुआएं करना और अच्छे कर्म करना वांछनीय है, इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "हर चीज़ का फल होता है और नमाज़ का फल दुआ है।" ईमान वालों की माता आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैंने पूछा: हे अल्लाह के रसूल! अगर मुझे संयोगवश पता चल गया कि भाग्य की रात कौनसी रात है तो आपके ख्याल में मुझे उस समय क्या कहना चाहिए? आपने कहा: कहो: हे अल्लाह, तू क्षमाशील है और क्षमा से प्रेम करता है; इसलिए मुझे भी छमा कर दे।" (सुनन तिर्मिज़ी) इस रात के दौरान इबादत करने वाले व्यक्ति के पापों को क्षमा कर दिया जाता है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया:"जो व्यक्ति भाग्य की रात को ईमान की स्थिति में और पुण्य की निय्यत से रात की नमाज़ अदा करता है उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

([1]) लौह ए महफूज़: नियति की शाश्वत संरक्षित तख्ती।

पैग़ंबर ﷺ आखिरी दस रातों के दौरान भाग्य की रात को तलाश करने के लिए एतिकाफ़ किया करते थे, मोमिनो की माता आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: "पैगंबर ﷺ रमज़ान के आखिरी दस दिनों के दौरान एतिकाफ़ की पाबंदी करते यहां तक कि अल्लाह ने आपको मृत्यु दे दी।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)। इब्ने बत्ताल (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "यह इंगित करता है कि एतिकाफ़ निश्चित सुन्नत है; क्योंकि यह पैग़ंबर ﷺ के उन कर्मों में से है जो आप लगातार किया करते थे, इसलिए मोमिनों को अपने पैग़ंबर ﷺ के उदाहरण का पालन करना चाहिए।"

एतिकाफ़ में सृष्टि से संबंध काटकर स्वयं को सृष्टिकर्ता की पूजा के लिए समर्पित किया जाता है, यदि प्रभु के साथ संबंध मजबूत हो तो प्रभु भक्त से प्रसन्न होता है। इब्ने शिहाब (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "मुस्लिमों पर आश्चर्य है! उन्होंने एतिकाफ़ छोड़ दिया, जबकि पैगंबर ﷺ में मदीने प्रवेश करने लेकर मृत्यु तक; कभी भी एतिकाफ़ नहीं छोड़ा।"

एतिकाफ़ करने वाला अल्लाह की आज्ञाकारिता के लिए समर्पित होता है और अल्लाह की सबसे प्यारी जगहों (अर्थात: मस्जिदों) में एतिकाफ़ के दौरान आज्ञाकारिता, इबादत, विनम्रता, श्रद्धा और प्रार्थना पर स्थिर रहता है, अत: अल्लाह ही उसकी एक मात्र चिंता, लक्ष्य और चाहत बन जाता है और वह इस रूप में एतिकाफ़ से निकलता है कि उसका ध्यान अल्लाह की आज्ञाकारिता पर केंद्रित हो चुका होता है और वह पवित्र अल्लाह के लिए कोमल हृदय वाला और पश्चाताप करने वाला बन जाता है।

रमज़ान दानवीरों का मौसम है; धनवान इसमें अच्छे कर्मों और नेक कार्यों में खर्च करने, भूखों और जरूरतमंदों की ओर मदद, सहायता और दान का हाथ बढ़ाने और ग़रीबों को नवाज़ने में प्रतिस्पर्धा करते हैं, तो "सदक़े के साथ अपने रोगियों का इलाज करो।" क्योंकि यह रोगों और लक्षणों को दूर करता है। निर्बलों और दरिद्रों की खबर लेते रहो, उनका पालन पोषण करो तुम्हें भी रोजी मिलेगी, उन पर दया करो तुम पर भी दया होगी; क्योंकि कोई ग़रीब व्यक्ति अमीर आदमी की कोताही के कारण ही शिकायत करता है।

पुण्यकर्मियों का एक गुण ये है कि उनका दान केवल अल्लाह के लिए होता है, वे ग़रीबों से प्रशंसा और प्रार्थना नहीं मांगते; इसलिए अपने दान के पीछे ग़रीबों से दुआ की आशा मत रखो, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَيُطۡعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسۡكِينٗا وَيَتِيمٗا وَأَسِيرًا ۞
إِنَّمَا نُطۡعِمُكُمۡ لِوَجۡهِ ٱللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمۡ جَزَآءٗ وَلَا شُكُورًا﴾

और वे धन से प्यार के बावजूद गरीबों, अनाथों और दास दासियों को भोजन कराते हैं, (कहते हैं) हम तुम्हें केवल अल्लाह के लिए खिलाते हैं, हम तुमसे कोई इनाम या धन्यवाद नहीं चाहते। (अल-इंसान: 8-9)

इस्लाम के महान विद्वान इब्ने तैमिया (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "और जो कोई भी गरीबों से दुआ या प्रशंसा मांगता है वह इस आयत से बाहर हो जाता है।"

फिर हे मुस्लिमो!

रमज़ान में पुण्य कई गुना हो जाते हैं, इस दौरान जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं, इसका आगमन सड़क पार करने जैसा है जिसमें सुस्ती की गुंजाईश नहीं, इसका महीना छोटा सा है जो उपेक्षा सहन नहीं कर सकता। अतः भले कामों की ओर दौड़ लगाओ, यदि तुम ऐसा कर सकते हो कि अल्लाह की ओर यात्रा में कोई तुमसे आगे न निकल पाए तो अवश्य ऐसा करो।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةً طَيِّبَةً
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएंगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नह्ल: 97)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

रमज़ान तौबा और पश्चाताप का शुभ अवसर है, जिसमें अल्लाह पापों को हटा देता है और गुनाहों और बुराइयों को मिटा देता है; इसलिए लापरवाही पर पछतावे और पापों से बचने के दृढ़ संकल्प के साथ अल्लाह की ओर रुख करो, पवित्र प्रभु अपनी ओर पलटने वाले से प्रेम करता है और पश्चाताप करने वाले के पश्चाताप से प्रसन्न होता है। अतः अपने रब के उपहारों के सामने प्रस्तुत हो जाओ, इसतिग़फ़ार (क्षमा की विनती) द्वारा जीविका उतरवाओ। बुद्धिमान है वह जो अपने महीने के शेष क्षणों से लाभ उठाते हुए, उन्हें उपासना और इबादत के महान कार्यों में लगाता है और बुरे कर्मों को अच्छे कर्मों में स्थानांतरित कर देता है।

यदि तुम्हें भलाई करने में आलस्य हो तो सर्वशक्तिमान प्रभु के वचन:

﴿أَيَّامًا مَّعۡدُودَٰتٖ﴾

ये गिने चुने दिन ही हैं। (अल-बक़रह: 184)

को याद रखो।

जो व्यक्ति अपने महीने में पश्चाताप और सही कार्य कर रहा है; उसे चाहिए कि निर्माण को और मजबूत करे, उपहारों के लिए अल्लाह का धन्यवाद करे और:

﴿كَٱلَّتِي نَقَضَتۡ غَزۡلَهَا مِنۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ أَنكَٰثٗا﴾

उस स्त्री की भाँति जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के पश्चात टुकड़े-टुकड़े करके रख दिया। (अल-नह्ल: 92)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

रमज़ान का प्रस्थान [1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, अल्लाह की ओर से अधिक से अधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरो जैसे उससे डरना चाहिए और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह अपने बंदों पर भलाईयों के मौसम उतारता है ताकि वे अपने आप को आज्ञाकारिता से सुसज्जित कर सकें। उस महान प्रभु की बुद्धि के अनुसार ये धन्य दिन सदा नहीं रहते; ताकि प्रतियोगी इसके क्षणों में दौड़ लगाएं और कोताही करने वाले उपहार से वंचित रहें।

मुस्लिमों के लिए एक पुण्य का समय आया है, जिसके दिन में रोज़ा, दान और उपहार है, और जिसकी रात में तहज्जुद की नमाज़, क़ुरआन और दुआ है। कितने ही गुनहगार हैं जिन्हें माफ़ किया गया! कितने ही वंचित हैं जिन्हें प्रदान किया गया! कितने ही दुर्भाग्य वाले थे जिन के लिए सुख लिख दिया गया! कितनी ही दुआएं स्वीकृत हुई! और कितने ही नेक कर्म जन्नत में दाखिल होने का कारण बने!

धन्य दिनों ने प्रस्थान का एलान कर दिया है और जल्द ही समाप्त होने वाले हैं, एक

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 29/09/1433 हिजरी को दिया गया।

मौसम को मुस्लिम अलविदा कह रहे हैं, कितने ही जीवित हैं जिनपर रमज़ान कभी वापस नहीं आएगा और जिन के नाम कब्र वालों की सूची में लिख दिए गए हैं, फिर वे अपने कर्म पर निर्भर होंगे, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ﴾

"हर प्राणी अपने कर्मों के बदले गिरवी है।" (अल-मुद्दस्सिर: 38)

बुद्धिमान है वह व्यक्ति जो अपने महीने के शेष क्षणों से लाभ उठाते हुए, उन्हें उपासना और इबादत के महान कार्यों में खपाता है और बुरे कर्मों को अच्छे कर्मों में स्थानांतरित करता है। इस्लाम के महान विद्वान इब्ने तैमिया (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "अंत की पूर्णता मायने रखती है, शुरुआत की कमी नहीं।"

जो व्यक्ति अपने महीने में पश्चाताप और सही कार्य कर रहा है; उसे चाहिए कि निर्माण को और मजबूत करे, उपहारों के लिए अल्लाह का धन्यवाद करे और:

﴿كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا﴾

उस स्त्री की भाँति जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के पश्चात टुकड़े-टुकड़े करके रख दिया। (अल-नह्ल: 92)

न बने। और जो बुरे कर्म कर रहा है उसे तौबा का द्वार बंद होने से पहले अल्लाह से तौबा कर लेनी चाहिए, क्योंकि रमज़ान अवज्ञाकारियों के लिए तौबा का मौसम है।

हे मुस्लिमो!

इस्तिग़फ़ार (क्षमा मांगना) अच्छे कर्मों का निष्कर्ष है, जिसके साथ नमाज़, हज और रात का अंत होता है। इसलिए बार-बार क्षमा मांगना, क़ुरआन का पाठ करना और दुआ करना; रमज़ान का समापन करने वाली सबसे अच्छी चीज़ों में से हैं, क्यूंकि कर्म अंत की स्थिति पर निर्भर करते हैं।

कर्म को संपूर्ण रूप से पूरा करने के बाद भी एक मुस्लिम को उसके कबूल न होने या कबूल होने के बाद बर्बाद होने का भय रहता है। अली (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: " तुम्हें कर्म करने से ज़्यादा कर्म के स्वीकार किए जाने को लेकर चिंतित रहना चाहिए।" सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ﴾

निस्संदेह अल्लाह धर्मपरायणता वालों की ओर से ही कबूल करता है। (अल-माइदह: 27)

सलमा बिन दीनार (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा है: "कर्म के स्वीकार न किए जाने का भय कर्म से अधिक कठिन है।"

व्यक्ति को हर समय और हर क्षण परम दयालु की पूजा करने का आदेश है, पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿وَٱعۡبُدۡ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأۡتِيَكَ ٱلۡيَقِينُ﴾

और अपने रब की वंदना में लगे रहो, यहाँ तक कि तुम्हें यक़ीन (मौत) आ जाए। (अल-हिज्र: 99)

जो रमज़ान में नेक काम करता है; उसे सदा नेकी करते रहना चाहिए; पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह के निकट सबसे प्यारा कर्म स्थायी कर्म है, चाहे वह थोड़ा ही हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) नववी (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "थोड़ा सा स्थायी कर्म, बहुत से आंतरायिक कर्म से उत्तम होता है; क्योंकि कम कर्म के लगातार बने रहने से आज्ञाकारिता, ज़िक्र (याद), निगरानी का आभास, इरादा, शुद्धता और अल्लाह की और ध्यान जैसी चीज़ें बनी रहती हैं, इस प्रकार स्थायी कर्म फलता-फूलता रहता है और बहुत से आंतरायिक कर्म से कई गुना बढ़ जाता है।"

अल्लाह की उदारता का एक पहलू ये भी है कि जो अच्छे कर्म रमज़ान में किए जाते हैं वो पूरे साल भी बने रहते हैं, चुनांचे शव्वाल के छह रोज़े रखना अनुमेय है; जो व्यक्ति भी ये रोज़े रखता है उसके रोज़े साल भर के रोज़ों के समान हैं, सोमवार, गुरुवार और प्रत्येक महीने के तीन रोज़े रखना भी वांछनीय है, महान क़ुरआन का पाठ लगातार निर्देशित है, रात की नमाज़ हर रात जिसमें सूर्यास्त होता है, वैध है, अल्लाह के ज़िक्र के बिना तो दिलों का जीवन ही नहीं, सदक़ा असीमित है और दुआ (प्रार्थना) के बिना तो कोई चारा ही नहीं।

जो व्यक्ति आज्ञाकारिता के कर्म करता है उसे समझ लेना चाहिए कि एक आज्ञाकारिता को दूसरी आज्ञाकारिता से जोड़ते चले जाना उसकी स्वीकृति का संकेत है, और आज्ञाकारिता के बाद अवज्ञा करना उसकी अस्वीकृति का संकेत है। कितनी अच्छी होती है बुराई के बाद की भलाई, जो बुराई को मिटा देती है! और उससे भी अच्छी है नेकी के बाद नेकी जो उसके पीछे चलती जाती है, और कितनी बुरी है नेकी के बाद की बुराई जो नेकी को मिटा देती है! इसलिए अल्लाह की महान क्षमा, विशाल दया और प्रचुर मात्रा में उपहार

की आशा के साथ, आज्ञाकारिता और उपासना में शुद्धता, और अल्लाह के प्रति सच्चा पश्चाताप करके अपने आप को शुद्ध करो।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَرَحۡمَتِي وَسِعَتۡ كُلَّ شَيۡءٖۚ فَسَأَكۡتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤۡتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِنَا يُؤۡمِنُونَ﴾

किन्तु मेरी दयालुता से हर चीज़ आच्छादित है। उसे तो मैं उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो डर रखते और ज़कात देते है और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते है। (अल-आराफ: 156)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरान के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

महीने के अंत में अल्लाह ने रोजेदार को बेकार की बातों और अश्लील भाषण से शुद्ध करने और गरीबों हेतु भोजन के रूप में ज़कातुल-फ़ित्र[1] को निर्धारित किया है, अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अनहु) फरमाते हैं: "पैग़ंबर ﷺ ने हर मुस्लिम दास, स्वतंत्र, पुरुष, महिला और छोटे बड़े पर ज़कातुल-फ़ित्र को एक साअ (लगभग: 3 किलो ग्राम) खजूर और जौ के रूप में अनिवार्य किया है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) ज़कातुल-फ़ित्र को गर्भ में पल रहे शिशु की ओर से अदा करना वांछनीय है, इस ज़कात को दूसरे देश में स्थानांतरित करने में कोई आपत्ति नहीं है, और जहाँ तुम रहते हो उसी स्थान पर निकालना उत्तम है। इसे ईद से एक या दो दिन पहले निकालने की अनुमति है और ईद की नमाज़ के लिए जाते समय निकालना वांछनीय है।

ईद बरकतों के महीने में नेकियों के स्वीकृत होने की आशा का जश्न है, इसलिए ईद की रात से ईद की नमाज़ तक अल्लाह की बड़ाई बयान करनी चाहिए, पैग़ंबर ﷺ ईद के लिए अपने सबसे खूबसूरत कपड़ों में निकलते थे, "और ईदुल-फित्र के दिन निकलने से पहले कुछ खजूरें ज़रूर खाते।" (सही बुखारी) और "आप ईद के दिन भिन्न रास्ते अपनाते, अर्थात: एक रास्ते से ईदगाह जाते और दूसरे से लौटते।" (सही बुखारी)

जिस व्यक्ति की ईद की नमाज़ छूट जाए, वह उसी पद्धति पर उसे पढ़ेगा चाहे ईदगाह में पढ़े या कहीं और, चाहे जमाअत के साथ पढ़े या अकेले, इमाम बुखारी फरमाते हैं: "ईद की नमाज़ छूट जाए तो दो रकअत पढ़ेगा।"

([1]) ज़कातुल-फ़ित्र: रमज़ान के अंत पर ईद की नमाज़ से पहले अनाज के रूप में अदा किया जाने वाला सदक़ा।

ईद खुशी और भक्तों पर अल्लाह की कृपा की वर्षा का आनंद है, अत: भक्त ईद के दिन प्रभु को ज़्यादा से ज़्यादा याद करता है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "ये दिन खाने-पीने और अल्लाह को याद करने के दिन हैं।" (सुनन अबू दाऊद)

लेकिन एक मुस्लिम को होशियार रहना चाहिए कि कहीं वह ईद के दिन अल्लाह की निर्धारित की गई सीमाओं को लांघ कर रमज़ान में तामीर किए गए अपने महल को ध्वस्त न कर बेठे, और ईद के दिन और उसके अलावा दिनों में भी, तुम्हारे मुख पर आज्ञाकारिता का प्रकाश और इबादत का चिन्ह होना चाहिए।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

रमज़ान का समापन[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो, अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

मुस्लिम इस धन्य महीने में एक गुणवत्ता वाले समय में रहे, जिसका दिन रोज़ा और जिसकी रात नमाज़ थी, जिसमें मस्जिदें आज्ञाकारिता और क़ुरआन से आबाद थीं, वे इसके क्षणों में ज़िक्र, दुआ, सदका और उपहार के बीच आवागमन करते रहे, दिल झुके हुए थे और अंग उपस्तिथ थे; ईमान वालों ने ईमान और उसकी मिठास का स्वाद चखा, अब इसके दिन अपने प्रस्थान का एलान कर चुके हैं और बस गुज़रने ही वाले हैं, सफल है वह जो इसके बचे हुए लम्हों का सदुपयोग करता है। कर्म अंत पर निर्भर होते हैं, और अंत की पूर्णता ही मायने रखती है। जो व्यक्ति अपने महीने में पश्चाताप और सही कार्य कर रहा है; उसे चाहिए कि निर्माण को और मजबूत करे, उपहारों के लिए अल्लाह का धन्यवाद करे और:

﴿كَٱلَّتِي نَقَضَتۡ غَزۡلَهَا مِنۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ أَنكَٰثٗا﴾

उस स्त्री की भाँति जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के पश्चात टुकड़े-टुकड़े करके रख दिया। (अल-नह्ल: 92)

न बने; क्योंकि आज्ञाकारिता करने से अधिक कठिन उसका संरक्षण है। नेक लोगों की

---

(1) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 26/09/1440 हिजरी को दिया गया।

एक दुआ इस प्रकार है: "हे अल्लाह, हम आपसे अच्छे कर्म करने और उनकी रक्षा करने की विनती करते हैं।"

और जो कोताही कर रहा है उसे तुरंत अल्लाह से सच्ची तौबा कर लेनी चाहिए, क्योंकि द्वार खुला हुआ है। क्योंकि पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया है: "उस व्यक्ति की नाक मटमैली हो जिसके पास रमज़ान का महीना आया फिर उसकी क्षमा प्राप्ति से पहले ही गुजर गया।" (मुस्नद अहमद)

कर्म करने से ज़्यादा कर्म के स्वीकार किए जाने को लेकर चिंतित रहो, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ ٱللَّهُ مِنَ ٱلْمُتَّقِينَ﴾

निस्संदेह अल्लाह धर्मपरायणता वालों की ओर से ही कबूल करता है। (अल-माइदह: 27)

ईमान वाला व्यक्ति नेकी और खौफ को साथ साथ लेकर चलता है, उसकी स्थिति वही होती है जो पवित्र प्रभु ने इस प्रकार बयान की है:

﴿وَٱلَّذِينَ يُؤْتُونَ مَآ ءَاتَوا۟ وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَٰجِعُونَ﴾

और जो लोग देते हैं, जो कुछ देते हैं और हाल यह होता है कि दिल उनके काँप रहे होते हैं, इसलिए कि उन्हें अपने रब की ओर पलटना है। (अल मूमिनून: 60)

आयशा (रज़ियल्लाहु अनहा) ने कहा: "हे अल्लाह के रसूल! यह वही लोग हैं जो शराब पीते और चोरी करते हैं? आपने फ़रमाया: हे सिद्दीक़ (सत्यवादी) की पुत्री! ऐसा नहीं है, लेकिन ये वो लोग हैं जो रोज़ा रखते, नमाज़ पढ़ते और दान करते हैं, और उन्हें डर भी लगा रहता है कि कहीं उनके कर्म अस्वीकृत न कर दिए जाएं।

﴿أُو۟لَٰٓئِكَ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَهُمْ لَهَا سَٰبِقُونَ﴾

यही वे लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए अग्रसर रहनेवाले हैं। (सुनन तिर्मिज़ी)

यदि रमज़ान का महीना बीत गया तो क्या हुआ कर्म का समय तो मृत्यु से ही समाप्त

होता है; सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَٱعۡبُدۡ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأۡتِيَكَ ٱلۡيَقِينُ﴾

और अपने रब की वंदना में लगे रहो, यहाँ तक कि तुम्हें यक़ीन (मौत) आ जाए। (अल-हिज्र: 99)

थोड़ा स्थाई कर्म बहुत ज़्यादा अस्थाई कर्म से उत्तम है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह के निकट सबसे प्यारा कर्म स्थायी कर्म है, चाहे वह थोड़ा ही हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) एक नेकी के बाद दूसरी नेकी करते चले जाना उसकी स्वीकृति का संकेत है, कितनी अच्छी होती है बुराई के बाद की भलाई, जो बुराई को मिटा देती है! और उससे भी अच्छी है नेकी के बाद की नेकी जो उसके पीछे चलती जाती है!

अल्लाह की मेहरबानी से रमज़ान के कर्म साल भर कायम रहते हैं, जैसे क़ुरआन का पाठ, दान, रोज़ा, उमरा, प्रार्थना, रात की नमाज़ और अन्य चीज़ें जो अल्लाह ने हर समय अपने भक्तों के लिए निर्धारित की हैं। आज्ञाकारिता की निरंतरता और इसके समय के विस्तार में अच्छे लोगों के लिए आनंद और विश्वासियों के लिए आंखों की ठंडक है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُواْ
وَلَا تَحۡزَنُواْ وَأَبۡشِرُواْ بِٱلۡجَنَّةِ ٱلَّتِي كُنتُمۡ تُوعَدُونَ﴾

जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है।" फिर इस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उनपर फ़रिश्ते उतरते हैं कि "न डरो और न शोकाकुल हो, और उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है। (फुस्सिलत: 30)

रमज़ान के अंत में रोज़े रखने वालों और रात को नमाज़ पढ़ने वालों के लिए शुभ सूचना है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति ईमान की स्थिति में और पुण्य की निय्यत से रमज़ान के रोज़े रखता है उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए जाते हैं, जो व्यक्ति भाग्य की रात को ईमान की स्थिति में और पुण्य की निय्यत से नमाज़ पढ़ता है उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं और जो व्यक्ति रमज़ान में ईमान की स्थिति में और पुण्य की निय्यत से (रात की) नमाज़ पढ़ता है उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) और "रोज़ेदार के लिए दो खुशियां हैं: एक इफ्तार के समय की खुशी और दूसरी अपने रब से

भेंट करने के समय की खुशी।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

कुछ साँसों और सीमित समय सीमा का नाम ही जीवन है, ऐसी आयु जिसे सांसो के द्वारा मापा जाता हो, वह बहुत जल्द समाप्त होकर रहेगी। रमज़ान के समापन से संसार और उसकी समस्त चीज़ों के विनाश का सबक मिलता है, यूँ समझो कि तुम समाप्त हो चुके कर्मों के साथ अंत हो चुके संसार में मौजूद हो और वहाँ हर भक्त अपने कर्म पर निर्भर है, और सफल वह है जिसने अपने प्रभु की पुकार का जवाब दिया और अच्छे कार्य करने वालों में शामिल हो गया।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।

﴿مَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो, तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएँगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अन-नह्ल: 97)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

इस महीने के अंत को अल्लाह ने रोजेदारों की पवित्रता और गरीबों के भोजन हेतु ज़कातुल-फितर के साथ विशिष्ट किया है, जिसकी मात्रा: देश के अधिकांश प्रधान भोजन का एक सा (लगभग: 3 किलो ग्राम) है, जिसे एक व्यक्ति अपने और अपने आश्रितों की ओर से निकालेगा। इसे अदा करने का अनुशंसित समय: ईद की नमाज़ से पहले है, और इसे ईद से एक या दो दिन पहले देना भी जायज़ है।

जब अंतिम दिन के सूर्यास्त के साथ रमज़ान समाप्त होता है; तो ईद की नमाज़ तक तकबीर कहना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है:

﴿وَلِتُكۡمِلُواْ ٱلۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُواْ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ﴾

ताकि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो। (अल-बक़रह: 185)

"जिसने रमज़ान के रोज़े रखे, फिर उसके बाद शव्वाल के छह रोज़े भी रखे तो मानो उसने पूरे साल के रोज़े रखे।" (सही मुस्लिम)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

हज

हज यात्रा[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

भक्तों के लिए लगातार नेकियों के मौसम आ रहे हैं, एक अनुष्ठान समाप्त नहीं होता कि दूसरा सामने आ जाता है, ये देखो हाजियों के समूह के समूह पैगंबर इब्राहीम खलील (उनपर शांति हो) के आह्वान का जवाब देते हुए अल्लाह के प्राचीन घर की ओर चले आ रहे हैं:

﴿وَأَذِّن فِي ٱلنَّاسِ بِٱلۡحَجِّ يَأۡتُوكَ رِجَالٗا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٖ يَأۡتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٖ﴾

और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि "वे प्रत्येक गहरे मार्ग से, पैदल भी और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर भी, तेरे पास आएं। (अल-हज: 27)

एक ऐसा घर जिसे अल्लाह ने लोगों के लिए एक पुण्यस्थल तथा सुरक्षा का स्थान बनाया है, जिसके पास परम उदार से दया और उपहारों की आशा की जाती है, एक धन्य हरम (अभयारण्य) जिसमें मार्गदर्शन, इनाम और प्रत्यक्ष निशानियाँ हैं:

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 03/12/1425 हिजरी को दिया गया।

﴿إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ۞ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَّقَامُ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَمَن دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۗ﴾

"निस्संदेह इबादत के लिए पहला घर जो मानव के लिए बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकतवाला और संसारवालों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन, इसमें प्रत्यक्ष संकेत और इब्राहीमी स्थान है, जो यहाँ प्रवेश करेगा वो सुरक्षित है। (आल-इमरान: 96-97)

उसका हज करना इस्लाम के स्तंभों में से एक है, पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ﴾

लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जिसको वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता) अल्लाह तो सारे संसार से निरपेक्ष है।" (आल-इमरान: 97)

शरीअत धर्म के कर्तव्य को निभाने के लिए अपनी विशालता तक पहुँचने के आदेश के साथ आई है। अंतिम पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "हे लोगो! तुम पर अल्लाह ने हज को अनिवार्य किया है; सो तुम हज करो" (सही मुस्लिम)

अल्लाह के घर का हज अल्लाह के निकट महान कर्मों में से एक है, जिसमें त्याग, उपहार, कष्ट और पुरस्कार है। अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अनहु) कहते हैं: पैग़ंबर ﷺ से प्रश्न किया गया कि कौन सा कर्म सबसे उत्तम है? तो आपने फ़रमाया: अल्लाह और उसके पैग़ंबर पर ईमान लाना, फिर पूछा गया: उसके बाद कौन सा? तो आपने फ़रमाया: अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना, फिर पूछा गया: उसके बाद कौन सा? तो आपने फ़रमाया: शुद्ध हज करना।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इस्लाम के पांचवे स्तंभ को अदा करने से पापों की क्षमा प्रार्थी होती है, त्रुटियों और अवज्ञा का गंध धुल जाता है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने हज किया और अश्लीलता तथा पाप से दूर रहा तो वह ऐसे लौटता है जैसे उसकी माँ ने आज ही उसे जन्म दिया हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

जो अपने हज के दौरान धर्मपरायणता को धारण करता है अल्लाह उसके लिए जन्नत में अतिथि सत्कार तैयार करता है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "एक उमरा दूसरे उमरे तक के

गुनाहों को क्षमा करा देता है और शुद्ध हज का पुण्य केवल और केवल जन्नत है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) नववी (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "हाजी के केवल पाप ही क्षमा नहीं किए जाएंगे; बल्कि वह जन्नत में भी अवश्य प्रवेश करेगा।"

कर्म इखलास[1] (शुद्धता) से तौले जाते हैं, यदि वे शिर्क या दिखावे से दूषित हो जाते हैं तो भ्रष्ट हो जाते हैं, महान अल्लाह ने फरमाया:

﴿وَلَقَدۡ أُوحِيَ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ لَئِنۡ أَشۡرَكۡتَ لَيَحۡبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ﴾

तुम्हारी ओर, और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी प्रकाशना की जा चुकी है कि "यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।" (अल-ज़ुमर: 65)

हज का पुण्य केवल साफ़ कमाई से परिपूर्ण होता है जो वर्जनाओं की अशुद्धियों और संदेह के गंद से पाक हो।

हज के दौरान अच्छी संगति आज्ञाकारिता और अच्छी पूजा में सहायक है, पाथेय को खर्च करना और साथियों के साथ मतभेद से बचना ही यात्रा का शिष्टाचार है, साथियों के साथ अच्छा व्यवहार पारलौकिक लाभ वाली इबादत है। मुजाहिद (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "मैं यात्रा में इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अनहु) के सेवा के लिए उनके साथ रहा; लेकिन वो स्वयं मेरी सेवा करते थे।" इब्ने रजब (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "कई पूर्ववर्ति यात्रा में पुण्य कमाने के लिए अपने साथियों के सामने उनकी सेवा करने की शर्त रखते थे।"

सबसे उत्तम पाथेय जिसे हाजी रखता है वह ईश-भय और धर्म-परायणता का पाथेय है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَتَزَوَّدُواْ فَإِنَّ خَيۡرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقۡوَىٰۖ﴾

और पाथेय ले लिया करो, निस्संदेह सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय है। (अल-बक़रह: 197)

---

[1] इखलास: कर्म को अल्लाह के लिए शुद्ध करना।

मुआज़ (रज़ियल्लाहु अनहु) को पैग़ंबर ﷺ की एक वसीयत इस प्रकार थी: "जहाँ भी रहो अल्लाह से डरते रहो, बुराई के बाद फौरन पुण्य कर लो; ये उसे मिटा देगा और लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो।" (सुनन तिर्मिज़ी)

हज के दौरान भोजन खिलाना, सलाम को फैलाना, अच्छे बौल बोलना और लोगों के साथ दया का व्यवहार करना आदि; हज की नेकियां हैं। हज में किसी भी भले कर्म को छोटा न समझो, "लोगों में उत्तम वह है जो सबसे अधिक लाभदायी हो" और सबसे सम्मानित व्यक्ति वह है जो सबसे अधिक सब्र (धैर्य) रखने वाला हो, हाजियों का सेवक, जो उनकी देखरेख में मन की शुद्धता से काम करता है, भी हाजियों के साथ पुण्य में भागीदार होगा, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह एक तीर के लिए तीन लोगों को जन्नत में प्रवेश देगा: उसे बनाने वाला -जो अपने शिल्प में अल्लाह से अच्छाई की आशा रखता है- उसे चलाने वाला और उसकी आपूर्ति में मदद करने वाला।" (सुनन तिर्मिज़ी)

काबे के दर्शन के इच्छुक व्यक्ति को तीन गुणों को धारण करने की आवश्यकता होती है: अल्लाह की अवज्ञा से दूर रखने वाली पवित्रता, क्रोध को रोकने वाली सहनशीलता और अपने साथियों के साथ अच्छी संगति।

हे मुस्लिमो!

अपने कर्मकांडों में तौहीद (एकेश्वरवाद) को प्रकट करना और अपनी इबादतों में कर्मों को शुद्ध करना ही सबसे अच्छी बात है जिसके द्वारा भक्त अपने प्रभु की निकटता प्राप्त करते हैं। जो कर्म अल्लाह के अलावा किसी अन्य के लिए होगा वह मिट जाएगा, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَأَتِمُّوا۟ ٱلْحَجَّ وَٱلْعُمْرَةَ لِلَّهِ﴾

और हज और उमरे को अल्लाह के लिए पूरा करो (अल-बकरह: 196)

"लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीका लक" (हे अल्लाह मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, तेरा कोई साझी नहीं है।) कह कर कर्मकांड पेश करने में सृष्टिकर्ता की एकता का एलान है।

अरफ़ा के दिन की सबसे उत्तम बोली तौहीद का मंत्र है: पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अरफ़ा के दिन की प्रार्थना सबसे अच्छी प्रार्थना है, मैंने और मुझ से पूर्व के नबियों ने जो सबसे अच्छे बोल कहे वो ये हें: ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीका लहू, लहूलमुल्क, वलहूलहम्द, वहुवा अल कुल्लि शय्इन क़दीर" (अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है,

वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, सारा राजत्व उसी का है, समस्त स्तुति उसी की है, वह हर चीज़ में सक्षम है।) (सुनन तिर्मिज़ी)

अल्लाह पर भरोसा रखना एक सर्वश्रेष्ठ इबादत है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَٱعۡبُدۡهُ وَتَوَكَّلۡ عَلَيۡهِۚ﴾

तो उसकी पूजा करो और उसी पर भरोसा रखो। (हूद: 123)

निराशा किसी रूप में ईश्वर के धर्म का हिस्सा नहीं है; महान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّهُۥ لَا يَاْيۡـَٔسُ مِن رَّوۡحِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡكَٰفِرُونَ﴾

अल्लाह की रहमत से केवल अविश्वासी लोग ही निराश होते हैं। (यूसुफ़: 87)

जो व्यक्ति भी अल्लाह के अधिकार को अपनी इच्छाओं और आराम पर प्राथमिकता देता है वह अवश्य दुनिया और आखिरत की खुशी देखता है, हाजर (उनपर शांति हो) दो पहाड़ों के बीच एक खाली घाटी में अपने और अपने बच्चे के लिए पानी को तलाश कर रही थीं, और उनकी स्तिथि यह थी कि प्यास ने उन्हें थका रखा था और बच्चे के प्रति प्रेम ने उन्हें लाचार कर दिया था, लेकिन अल्लाह पर विश्वास और साधन अपनाने के बाद; उन्हें अपने लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उछलते पानी का चशमा मिल गया, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "इस्माइल की माता (हाजर) पर अल्लाह की दया हो, अगर उन्होंने ज़मज़म को छोड़ दिया होता तो वह एक बहती नदी बन जाता।" (सही बुखारी)

"महामहिम सर्वोच्च प्रभु; अल्लाह के हाथ में ही लाभ और हानि है, वही संकट से छुटकारा देने वाला और मुसीबतों को दूर करने वाला है, अपने भक्तों से ऊपर है, उसके हाथ में आकाश और पृथ्वी की कुंजियाँ हैं और वह गर्व और महानता से सुशोभित है।" तवाफ, सई, जमरात को कंकर मारने तथा क़ुरबानी और तश्रीक़(1) के दिनों के दौरान एक हाजी अपने कर्मकांड में "अल्लाहु अकबर" कहकर इन्हीं बातों का ऐलान करता है, ताकि हृदय अल्लाह के लिए अमूर्त बना रहे, उससे जुड़ा रहे और सृष्टि के अधीन वस्तुओं से अलग-थलग हो जाए।

कंकर मारने में आदम पुत्रों को एक ऐसे दुश्मन को याद दिलाने का उद्देश्य है, जो उनकी घात में बैठा जहन्नम की ओर उन्हें बुला रहा है, महामहिम प्रभु ने फ़रमाया:

(1) तश्रीक़ के दिन: हज के महीने की 11, 12 और 13 तिथि।

﴿إِنَّ ٱلشَّيۡطَٰنَ لَكُمۡ عَدُوّٞ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّاۚ إِنَّمَا يَدۡعُواْ حِزۡبَهُۥ لِيَكُونُواْ مِنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ﴾

निश्चय ही शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम भी उसे शत्रु ही समझो। वह तो अपने गिरोह को केवल इसी लिए बुला रहा है कि वे दहकती आगवालों में सम्मिलित हो जाएँ। (फातिर: 6)

किसी दायित्व में कोताही करने या किसी पाप में गिरने से सावधान रहो, ये तुम्हें विनाश की ओर ले जाएगा।

जान लो कि हज के पल अनमोल और उसकी घड़ियां अत्यंत कीमती हैं, महामहिम प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡدُودَٰتٖۚ﴾

गिने चुने दिनों में तुम अल्लाह की अत्याधिक जिक्र करो (अल-बक़रह: 203)

अतः हज के दौरान ज़िक्र, इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से क्षमा मांगने), तकबीर और क़ुरआन की तिलावत जैसी सभी अच्छाइयों और सामीप्य की ओर दौड़ लगाओ। पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَإِذَآ أَفَضۡتُم مِّنۡ عَرَفَٰتٖ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ عِندَ ٱلۡمَشۡعَرِ ٱلۡحَرَامِۖ وَٱذۡكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمۡ﴾

फिर जब तुम अरफ़ात से चलो तो `मशअरे हराम` (मुज़दलिफ़ा) के निकट ठहरकर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसाकि उसने तुम्हें बताया है। (अल-बक़रह: 198)

हज के कर्मकांड की समाप्ति के बाद मार्गदर्शन पर अल्लाह की प्रशंसा करो और इबादत पर उसका धन्यवाद करो:

﴿فَإِذَا قَضَيۡتُم مَّنَٰسِكَكُمۡ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ كَذِكۡرِكُمۡ ءَابَآءَكُمۡ أَوۡ أَشَدَّ ذِكۡرٗاۗ﴾

फिर जब तुम अपनी हज सम्बन्धी रीतियों को पूरा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते रहे हो, बल्कि उससे भी बढ़कर याद करो। (अल-बक़रह: 200)

हज कर्मकांड के दौरान क्षमा प्रार्थना और अल्लाह की ओर पलटना भी होता है:

﴿ثُمَّ أَفِيضُواْ مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ وَٱسْتَغْفِرُواْ ٱللَّهَۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾

इसके पश्चात जहाँ से और सब लोग चलें, वहीं से तुम भी चलो, और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। (अल-बक़रह: 199)

इस्लाम के महान विद्वान इब्ने तैमियह (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "क्षमा प्रार्थना सबसे महान भले कर्मों में से एक है, इसका द्वार बहुत विस्तारित है, तो जो भी अपने शब्दों में, अपने कर्मों में, अपनी स्थिति में, अपनी आजीविका में, या हृदय परिवर्तन में कोताही महसूस करता है; उसे तौहीद और क्षमा प्रार्थना को धारण करना चाहिए; क्योंकि अगर ये दोनों सच्चे और शुद्ध हैं तो इनमें शिफ़ा है।"

हज में भक्त अपनी आकांक्षा अनुसार होते हैं, उनमें से कुछ तत्काल दुनिया की तलाश में होते हैं, जबकि कुछ अल्लाह की खुशी और आखिरत के घर की चाहत रखते हैं, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا وَمَا لَهُۥ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنْ خَلَٰقٍ ۞ وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ۞ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُواْۚ وَٱللَّهُ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ﴾

फिर लोगों में कोई तो ऐसा है जो कहता है: "हमारे रब! हमें दुनिया में ही दे दे।" ऐसी हालत में आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। और उनमें कोई ऐसा है जो कहता है, "हमारे रब! हमें दुनिया में भी अच्छी दशा और आख़िरत में भी अच्छी दशा प्रदान कर, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।" ऐसे ही लोग हैं कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उसकी जिन्स का हिस्सा उनके लिए नियत है। और अल्लाह जल्द ही हिसाब चुकानेवाला है। (अल-बक़रह: 200-202)

सफल वह है जिसने अच्छी व शुद्ध नीयत और पवित्र धन के साथ हज अदा किया, अपनी जीभ को अल्लाह के ज़िक्र से सुगन्धित रखा और जिसकी इबादत में प्राणियों के साथ एहसान और भलाई का योगदान रहा। तो तुम भी हज के दौरान ऐसे ही रहो, अपने दीन को अल्लाह के लिए शुद्ध करो, अच्छे कर्म करने में अत्याधिक परिश्रम करो और अपने रब के बाग़ों (जन्नतों) की ओर दौड़ लगाओ।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿ٱلْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِى ٱلْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ ٱللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا۟ فَإِنَّ خَيْرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقْوَىٰ ۚ وَٱتَّقُونِ يَٰٓأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ﴾

हज के महीने जाने-पहचाने और निश्चित हैं, तो जो इनमें हज करने का निश्चय करे, तो हज में न तो काम-वासना की बातें हो सकती हैं और न अवज्ञा और न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी तुम करोगे अल्लाह उसे जानता होगा। और पाथेय ले लो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय ईश-भय है। और ऐ बुद्धि और समझवालो! मेरा डर रखो। (अल-बक़रह: 197)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

प्रशंसा और सलाम के बाद, हे मुस्लिमो!

दस धन्य दिन आप पर अपनी छाया डाल चुके हैं, जिनमें कर्म पुण्य होते हैं, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "ऐसा कोई दिन नहीं जिसमें अच्छा कर्म करना अल्लाह के निकट उतना अधिक प्रिय हो जितना इन दिनों में होता है, अर्थात: जिलहिज्जा के दस दिनों में, लोगों ने पूछा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! अल्लाह के रास्ते का जिहाद भी नहीं? आपने फ़रमाया: हाँ, अल्लाह के रास्ते का जिहाद भी नहीं; मगर ऐसा व्यक्ति जो अपनी जान और धन को लेकर निकला फिर इनमें से किसी चीज़ को भी लेकर वापस नहीं आया, तो उसकी बात अलग है।" (सुनन अबू दाऊद) अतः इन दिनों में अधिक से अधिक अल्लाह की बड़ाई और स्तुति करो, क़ुरआन का पाठ करो, रिश्तों को जोड़ो, दान दो, माँ-बाप के साथ अच्छा व्यावहार करो, लोगों की परेशानियां दूर करो, उनकी ज़रूरतें पूरी करो और हर प्रकार की आज्ञाकारिता के काम करो। इस्लाम के महान विद्वान इब्ने तैमियह (उनपर अल्लाह की दया हो) ने फ़रमाया: "ज़ुल-हिज्जा के दस दिन रमज़ान के दस दिनों से बेहतर हैं और रमज़ान की अंतिम दस रातें ज़ुल-हिज्जा की दस रातों से बेहतर हैं।

सहाबा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) दस दिनों में तकबीर की पद्दति को लोगों के बीच जीवित रखते थे, श्री इब्ने उमर और श्री अबू हुरैरा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) दस दिनों के दौरान बाजार में बाहर जाते थे, तकबीर कहते थे और उनके साथ लोग भी तकबीर कहते थे।" (सही बुखारी)

ईद के दिन और तश्रीक़ के दिनों में क़ुर्बानी के द्वारा इन दस दिनों में परस्पर भलाई है।

पैगंबर ﷺ ने दो सींग वाले सफेद बकरों की क़ुरबानी दी, जिनको उन्होंने स्वयं अपने हाथों से ज़बह किया और बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहा।" (सही बुखारी व

सही मुस्लिम) सबसे महंगा और मालिक के मन में सबसे मूल्यवान जानवर; कुर्बानी के लिए सबसे अच्छा जानवर होता है। एक बकरी आदमी और उसके घर की ओर से पर्याप्त है। कुर्बानी करने वाले के लिए दस दिनों के बीच अपने बाल, नाखून या त्वचा में से कुछ भी काटना वर्जित है जब तक वह कुर्बानी नहीं कर लेता। इसलिए कुर्बानी के साथ मन भी पवित्र करो, खाओ, खिलाओ और दान दो, दान देने के लिए अपने आसपास गरीबों को तलाश करो, अपने उपहारों द्वारा अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों का खास खयाल रखो, अपने पर्वों को अपने निर्माता की नाराज़ी से सुरक्षित रखो और हाजियों के साथ दुआ, तहलील और तकबीर में शामिल रहो।

हाजियों के पवित्र स्थलों पर पहुँच जाने के बाद; अपने देश में रह जाने वालो के लिए अरफा के दिन का रोज़ा सुन्नत है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अरफा के दिन के रोज़े के प्रति, मुझे अल्लाह से आशा है कि वह इसके द्वारा अगले और पिछले वर्ष के पापों को क्षमा करेगा।" (सही मुस्लिम)

इसलिए इससे पहले कि इबादत के मौसम बीत जाएं उनका सदुपयोग करो; जीवन एक क़ीमती अवसर है, दिन गिने चुने हैं और आयु छोटी है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है...

हज के उद्देश्य[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है और इस्लाम के सशक्त कड़े को मज़बूती से थाम लो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह अपनी सृष्टि के लिए आज्ञाकारिता के मौसम परस्पर लाता रहता है, ताकि वे अपनी गंदगी को धो सकें और उनके दर्जे बुलंद हों। अल्लाह ने इस्लाम के एक स्तंभ के समय-सीमा की कसम खाई है, चुनांचे फ़रमाया:

﴿وَلَيَالٍ عَشْرٍ﴾

कसम है दस रातों की (अल-फज्र: 2)

और जिस जगह वह होता है उस जगह की भी अल्लाह ने कसम खाई है, चुनांचे फ़रमाया:

﴿لَآ أُقْسِمُ بِهَٰذَا ٱلْبَلَدِ﴾

कसम है इस शहर (अर्थात: मक्का) की (अल-बलद: 1)

---

(1) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 06/12/1434 हिजरी को दिया गया।

इब्ने कसीर (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "यह अल्लाह की ओर से शहरों की मां मक्का की कसम है, जबकि पर्यटक वहां हलाल अवस्था में (एहराम के बिना) हो, ताकि अल्लाह एहराम की स्थिति में उसकी प्रतिष्ठा की महानता से आवगत कराए।"

वह अल्लाह के निकट सबसे उत्तम कर्मों में से एक है, पैग़ंबर ﷺ से प्रश्न किया गया: कौन सा कर्म सबसे उत्तम है? तो आपने फ़रमाया: अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाना, पूछा गया: फिर कौन सा? आप ने फ़रमाया: अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना, पूछा गया: फिर कौन सा? आपने फ़रमाया: शुद्ध हज करना। (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इब्ने बत्ताल (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "जब इस्लाम प्रभुत्वशाली हो जाए, फैल जाए और जिहाद फर्ज़-ए-किफाया[1] हो जाए तो ऐसे समय में हज सबसे उत्तम हो जाता है।"

उसके दिनों में एक दिन ऐसा है जब अल्लाह अपने घर के हाजियों को लेकर आसमान वालों के सामने अभिमान व्यक्त करता है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह जितने भक्तों को अरफ़ा के दिन जहन्नम से रिहा करता है उतने किसी दिन नहीं करता, वह क़रीब आता है फिर उनको लेकर फरिश्तों के सामने अभिमान व्यक्त करता है और कहता है: यह लोग क्या चाहते हैं?" (सही मुस्लिम)

हज अदा करने से पाप और गुनाह धुल जाते हैं, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो इस घर का हज करता है, और उस दौरान कोई अश्लीलता और पाप नहीं करता तो ऐसे लौटता है जैसे उसकी माता ने उसे आज ही जन्म दिया हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इब्ने हजर (उनपर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "इसका प्रत्यक्ष अर्थ यह है कि छोटे बड़े और पीछे रहने वाले समस्त पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।"

हज के द्वारा पाप और अपराध ध्वस्त हो जाते हैं, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: क्या तुम्हें नहीं पता कि इस्लाम अपने पूर्व के सभी पापों को ध्वस्त कर देता है, हिजरत भी अपने पूर्व के सभी पापों को ध्वस्त कर देती है, इसी तरह हज भी अपने पूर्व के सभी पापों को ध्वस्त कर देता है?" (सही मुस्लिम) नववी कहते हैं: "अर्थात: हज पापों को गिरा देता है और उसके प्रभाव को खत्म कर देता है।"

हज इस्लाम का ऐसा स्तंभ है जो सीख और सबक से भरा हुआ है, इसमें सबसे महान उद्देश्य अल्लाह की तौहीद और केवल उसकी इबादत करना है, क्योंकि तौहीद के इक़रार

([1]) फर्ज़-ए-किफाया: वो दायित्व है जो मुस्लिमों पर सामूहिक रूप से अनिवार्य होता है, अगर कुछ लोग उसे अंजाम दे दें तो शेष लोगों से पाप हट जाता है।

और शिर्क के इनकार की घोषणा के साथ ही हज में प्रवेश किया जाता है: "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीका लक" (हे अल्लाह मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, तेरा कोई साझी नहीं है।)

एकेश्वरवाद के प्रदर्शन और बहुदेववाद के खंडन के लिए ही काबे का निर्माण किया गया है:

﴿وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ ٱلْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِى شَيْـًٔا وَطَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلْقَآئِمِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ﴾

याद करो जब कि हमने इब्राहीम के लिए अल्लाह के घर को ठिकाना बनाया, इस आदेश के साथ कि "मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करनेवालों और खड़े होने और झुकने और सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखना।" (अल-हज: 26)

अगर देशों में तौहीद प्रकट होती है तो वहाँ सुरक्षा और अमन कायम हो जाता है, महान अल्लाह ने कहा:

﴿وَإِذْ جَعَلْنَا ٱلْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا﴾

और याद करो जब हमने घर (काबा) को लोगों के लिए केंद्र और शांति-स्थल बना दिया (अल-बक़रह: 125)

हज में, रसूलों पर ईमान प्रकट होता है और उनसे प्रेम नवीनीकृत हो जाता है, कुर्बानी करना, शैतानी चिन्ह को कंकर मारना और तवाफ (परिक्रमा) करना हमारे पिता इब्राहीम (उनपर शांति हो) की सुन्नत है।

दुआ ही इबादत है, और हाजियों की दुआओं के स्वीकृत होने की आशा अधिक होती है, प्रभु के मित्र इब्राहीम (उनपर शांति हो) की दुआएं: कि कर्म स्वीकृत हो, इस्लाम में दृढ़ता हो, हज के कर्मकांड सदृश्य हों, मक्के में एक दूत (रसूल) भेजा जाए जो लोगों को ईश्वर की आयतें सुनाए, उन्हें किताब सिखाए और ज्ञान दे, मक्का एक सुरक्षित शहर हो, उसमें आजीविका चक्र हो, लोग इसकी ओर खिंचे चले आएं, वह और उनकी पीढ़ी शिर्क से बची रहे, वो और उनकी सन्तान नमाज़ पढ़ने वालों में से हों और अपनी व विश्वासियों की क्षमा के लिये दुआ; यह सब दुआएं अल्लाह के पवित्र भवन के पास की गईं थीं।

पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ की प्रार्थनाएं भी हज के भिन्न स्थानों में (जैसे अरफा के दिन और सफा व मरवा पर) भिन्न प्रकार की थीं, इसलिए हाजियों को भी नबियों के रास्ते पर चलते हुए अधिक से अधिक दुआ करके अपने हज को उपयोगी बनाना चाहिए।

अल्लाह पर निर्भरता इबादत के दो स्तंभों में से एक है, इब्राहीम (उनपर शांति हो) ने अल्लाह पर भरोसा करते हुए काबा का निर्माण किया:

﴿رَّبَّنَآ إِنِّيٓ أَسۡكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيۡرِ ذِي زَرۡعٍ عِندَ بَيۡتِكَ ٱلۡمُحَرَّمِ﴾

हमारे रब! मैंने एक ऐसी घाटी में जहाँ कृषि-योग्य भूमि नहीं अपनी सन्तान के एक हिस्से को तेरे प्रतिष्ठित घर (काबा) के निकट बसा दिया है। (इब्राहीम: 37)

लोगों ने आपके भरोसे का फल भी देख लिया:

﴿فَٱجۡعَلۡ أَفۡـِٔدَةٗ مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهۡوِيٓ إِلَيۡهِمۡ﴾

अतः तू लोगों के दिलों को उनकी ओर प्रेम के साथ मोड़ दे। (इब्राहीम: 37)

एक ही स्थान में सृष्टि का जमावड़ा इस उम्मत के गुण और उसके धर्म की महानता अनुस्मारक है।

हज में वफादारी और दुश्मनी के सिद्धांत की पुष्टि होती है, पैग़ंबर ﷺ ने अली पुत्र अबू तालिब को आदेश दिया कि: हज के मौसम एलान करदें कि: "कोई बहुदेववादी इस वर्ष के बाद हज नहीं करेगा।" (सही बुखारी)

इसमें जाहिलिय्यत वाली इबादतों में काफिरों का विरोध है- जैसे तलबिया, मुजदलिफ़ा से प्रस्थान का समय, और अनुष्ठानों के अंत के बाद अकेले अल्लाह का बार-बार स्मरण करना। इब्ने क़य्यिम (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "शरीअत बहुदेववादियों के विरोध की ईच्छा पर स्थापित हुई है विशेष रूप से हज के अनुष्ठानों में।"

हज इस्लाम में सबसे लंबी और सबसे सटीक शारीरिक इबादत है, इसमें इबादत के कार्य विविध हैं; जैसे तलबिया, तवाफ, सई, रात भर ठहरना, कंकर मारना, मुंडन कराना और वध करना, इसमें अनुष्ठानों का सम्मान और भक्ति को पूरा करना दिलों की पवित्रता का हिस्सा है। इब्ने-क़य्यिम (उनपर अल्लाह की दया हो) ने कहा: " प्रतिष्ठा और प्रेम इबादत की आत्मा हैं, अगर ये एक दूसरे को छोड़ दें तो इबादत भ्रष्ट हो जाएगी।"

हज के कर्मकांडों में आज्ञाकारिता के कार्यों पर धैर्य को स्वयं के भीतर स्थिर करने पर उभारा जाता है, आइशा (रज़यल्लाहु अन्हा) कहती हैं: "हम देख रहे हैं कि जिहाद सबसे

उत्तम कर्म है, क्या हम भी जिहाद न करें? पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: नहीं; लेकिन सबसे उत्तम जिहाद शुद्ध हज करना है।" (सही बुख़ारी)

अल्लाह के आदेशों को मानना (भले ही बंदे को उद्देश्य पता न चले) अल्लाह को आत्मसमर्पण करने का ही एक दायित्व है, अल्लाह ने इब्राहीम (उनपर शांति हो) से कहा जबकि वह एक असिंचित घाटी में थे:

﴿وَأَذِّن فِى ٱلنَّاسِ بِٱلْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا﴾

और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि वे तुम्हारे पास पैदल आएँ। (अल-हज: 27)

अत: उन्होंने अल्लाह की आज्ञा का जवाब दिया और हज का एलान कर दिया, लोग अल्लाह के पवित्र घर में इस स्तिथि में आए कि उनके मन काबा के दर्शन के लिए उत्सुक थे और हज यात्रा पर ख़ुशी ख़ुशी पैसे खर्च कर रहे थे। इब्ने कसीर (उनपर अल्लाह दया करे) ने कहा: "मुस्लिमों में कोई भी ऐसा नहीं है जो काबा के दर्शन और उसके तवाफ के लिए उत्सुक न हो, अतः उसके पास समस्त दिशाओं और समस्त स्थानों से लोग आते हैं।"

हज एक ऐसा स्तंभ है जो पैग़ंबर ﷺ के आदेशों के अनुपालन को सुनिश्चित करता है, उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अनहू) ने (काले पत्थर के बारे में) कहा: "अल्लाह की कसम! मुझे पता है कि तुम एक पत्थर हो जो नुकसान या लाभ नहीं दे सकते, अगर मैंने पैगंबर ﷺ को तुम्हें चूमते हुए ना देखा होता तो मैं भी तुम्हें नहीं चूमता। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

इबादतें पैग़ंबर ﷺ के अनुसरण पर आधारित हैं, इसमें रचनात्मकता के लिए कोई जगह नहीं है, तवाफ़ और सई के सात चक्कर हैं, जिनकी संख्या के पीछे का ज्ञान मानवीय बुद्धि से छिपा हुआ है, इसलिए पैग़ंबर ﷺ ने हाजियों से कहा था: "मुझसे अपने हज संबंधित कर्मकांड ले लो।" (सही मुस्लिम) अल्लाह ने सिर्फ काबा के चारों ओर ही तवाफ की अनुमति दी है, काबा के अलावा किसी अन्य स्थान का तवाफ़, तवाफ़ नहीं तबाही है।

एक मुस्लिम के लिए समय बहुत कीमती होता है, हज में हर दिन की इबादत दूसरे दिन की इबादत से अलग होती है, उनमें से प्रत्येक इबादत के लिए एक समय-सीमा होती है जिसकी समाप्ति के साथ ही वह इबादत भी समाप्त हो जाती है, अत: अरफ़ा से प्रस्थान सूर्यास्त के बाद शुरू होता है और (मुजदलिफ़ा में) रात गुज़ारने का समय सूर्योदय के साथ समाप्त हो जाता है, सिले हुए वस्त्र को उतारना याद दिलाता है कि मौत का कफन पहनने का समय निकट है, अल्लाह ने हज के छंदों के अंत में इसका संकेत दिया है:

﴿وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱعۡلَمُوٓا۟ أَنَّكُمۡ إِلَيۡهِ تُحۡشَرُونَ﴾

और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम उसी की तरफ इकट्ठे किए जाओगे (अल-बक़रह: 203)

लोगों के स्थान धर्मपरायणता से प्रतिष्ठित होते हैं और हज के दौरान इसे प्राप्त करना सबसे सुंदर लाभ है:

﴿وَتَزَوَّدُوا۟ فَإِنَّ خَيۡرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقۡوَىٰۖ﴾

और पाथेय ले लिया करो, क्योंकि सबसे उत्तम पाथेय धर्मपरायणता है। (अल-बक़रह: 197)

अल्लाह के ज़िक्र (याद) से दिल जीवित होते हैं, अल्लाह ने हज के समस्त दिनों में अधिक से अधिक ज़िक्र करने का आदेश दिया है:

﴿وَٱذۡكُرُوا۟ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡدُودَٰتٖۚ﴾

और गिने-चुने दिनों में अल्लाह का ज़िक्र किया करो। (अल-बक़रह: 203)

महान अल्लाह ने विशेष रूप से उन जगहों को चिन्हित भी किया है जहां अधिक से अधिक उसका ज़िक्र किया जाएगा, उसने कहा:

﴿فَإِذَآ أَفَضۡتُم مِّنۡ عَرَفَٰتٖ فَٱذۡكُرُوا۟ ٱللَّهَ عِندَ ٱلۡمَشۡعَرِ ٱلۡحَرَامِۖ
وَٱذۡكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمۡ﴾

फिर जब तुम अरफ़ात से चलो तो `मशअरे हराम` (मुज़दलिफ़ा) के निकट ठहरकर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसाकि उसने तुम्हें बताया है। (अल-बक़रह: 198)

और उसने कहा:

﴿ثُمَّ أَفِيضُوا۟ مِنۡ حَيۡثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ وَٱسۡتَغۡفِرُوا۟ ٱللَّهَۚ﴾

इसके पश्चात जहाँ से सब लोग चलें, वहीं से तुम भी चलो, और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। (अल-बक़रह: 199)

जब हाजी सारे कर्मकांड पूरे कर लेता है तब भी अल्लाह ने उसे खूब ज़िक्र करने का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا﴾

फिर जब तुम अपनी हज सम्बन्धी रीतियों को पूरा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते रहे हो, बल्कि उससे भी बढ़कर याद करो। (अल-बक़रह: 200)

पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "काबे के तवाफ, सफ़ा मरवा के बीच दौड़ और शैतानी चिन्हों को कंकर मारने का आदेश अल्लाह के जिक्र को स्थापित करने के लिए ही दिया गया है।" (मुस्नद अहमद)

हज में अच्छे गुणों और नैतिकता को स्थापित किया जाता है और हर अच्छे कार्य करने पर उत्सुकता पैदा की जाती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ﴾

तो जो इनमें हज करने का निश्चय करे, तो हज में न तो काम-वासना की बातें हो सकती है और न अवज्ञा और न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी तुम करोगे अल्लाह उसे जानता होगा। (अल-बक़रह: 197)

इसमें भाईचारे के सिद्धांत की मज़बूती और धार्मिक व सांसारिक लाभों का आदान-प्रदान है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ﴾

ताकि वह अपने लाभों को देखें (अल-हज: 28)

कुर्तुबी (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: हाजियों के लिए हज के कई लाभ हैं जैसे व्यापार, क्षमा और दुनिया व आखिरत के लाभ।"

इसके अनुष्ठानों में, समाज की अंतरंगता और सामंजस्य है; पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ﴾

फिर कुर्बानी में से तुम भी खाओ और निर्धनों एवं गरीबों को भी खिलाओ। (अल-हज: 28)

फिर हे मुस्लिमो!

हज का फल आनंद के बागों को जीतना है, पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "शुद्ध हज का इनाम स्वर्ग के सिवा कुछ नहीं है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

धन्य हैं वे लोग जो अपनी नीयत को अल्लाह के लिए शुद्ध करते हुए और हज के कर्मकांडों में पैग़ंबर ﷺ का अनुसरण करते हुए, अल्लाह के इनाम और परलोक के घर की आशा के साथ अल्लाह के पवित्र घर का हज करते हैं।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّٰتُ ٱلْفِرْدَوْسِ نُزُلًا﴾

निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके आतिथ्य के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे (अल-कहफ: 107)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद द

दूसरा खुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह अपने बंदों पर मेहरबान है, तो जो व्यक्ति अल्लाह के प्राचीन घर (काबा) का हज करने में असमर्थ है, उसके लिए इन मुबारक दस दिनों में ज़िक्र और तकबीर के माध्यम से हाजियों के साथ शामिल होना अनुमेय है, अरफ़ा के दिन का रोज़े में ग़ैर हाजी के लिए पापों की क्षमा है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "अरफ़ा के दिन के रोज़े के प्रति मुझे अल्लाह से आशा है कि इसके बदले वह अगले और पिछले साल के गुनाह क्षमा करेगा।" (सही मुस्लिम)

मुसलमानों के दिन आनंद और खुशी के दिन हैं, अल्लाह ने इस उम्मत के लिए इस्लाम के दो स्तंभों की अदायगी के बाद इबादत द्वारा खुशी मनाने का आदेश दिया है; एक ईद रमज़ान के रोज़ों के बाद है तो दूसरी ईद अरफ़ा के दिन के बाद है, अल्लाह ने इनमें खाने पीने और उसे याद करने को निर्धारित किया है, पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "तश्रीक़ के दिन खाने पीने और अल्लाह को याद करने के दिन हैं।" (सही मुस्लिम)

उस समय अल्लाह के ज़िक्र (याद) का रुतबा बुलंद हो जाता है, जब लोग अपनी ख़ुशियों या ग़मों में लग कर ग़फ़लत का शिकार हो जाते हैं, ईद के सबसे अच्छे दिन वो होते हैं जब अल्लाह का ज़िक्र खुले रूप में सदृश्य होता है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैगंबर पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

सबसे लंबी शारीरिक इबादत; हज[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा व सलाम के बाद:

अल्लाह के बन्दो, अल्लाह से वैसे ही डरो जैसा की डरने का हक़ है और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

पवित्र अल्लाह ही निस्पृह व शक्तिशाली है, उसके अलावा हर चीज़ उसकी मोहताज है, उसने बहुतायत दिखाने या अपनी महिमा को मजबूत करने के लिए सृष्टि की रचना नहीं की, बल्कि उसने उन्हें एक महान बुद्धिमत्ता हेतु बनाया है, जोकि: उसकी इबादत है, और उसकी इबादत से ही वे सुखी हो सकते हैं।

उसने अपने अनुग्रह और सृष्टि के प्रति अपनी दया के कारण ही, उनके लिए ऐसे कर्म और ऐसे वचन निर्धारित किए हैं जिनके द्वारा वे उसके निकट आते हैं, ताकि उनका प्रतिफल कई गुना हो जाए और अल्लाह के निकट उनकी ज़रूरतें पूरी हो सकें। उस पवित्र प्रभु ने इबादत के बीच गुणवत्ता में अंतर रखा है, अत: उसने तौहीद (एकेश्वरवाद) की प्राप्ति, उसके अनुसार कर्म करने तथा उसका नाश करने वाली चीजों से बचने को अपने निकट सबसे प्रिय कार्य ठहराया है और उसने इस इबादत को किसी शब्द द्वारा प्रकट करने को भी अपने यहाँ शुद्धतम शब्द बना दिया है। पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "अल्लाह के निकट चार शब्द सबसे अधिक

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 01/12/1432 हिजरी को दिया गया।

प्रिय हैं: सुबहानल्लाह (अल्लाह की हस्ती पवित्र है) अल्हम्दुलिल्लाह (समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है) ला इला ह इल्ललल्लाह (अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है) अल्लाहू अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है)" (सही मुस्लिम) बल्कि पवित्र प्रभु ने किसी भी अच्छे कर्म को स्वीकार करने के लिए तौहीद को शर्त बना दिया है, यदि इस शर्त का उल्लंघन किया जाता है तो भक्त को अपने कर्म का लाभ नहीं होगा और उसे खारिज कर दिया जाएगा, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ﴾

तुम्हारी ओर, और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी प्रकाशना की जा चुकी है कि "यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया-धरा अनिवार्यतः अकारथ जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़नेवालों में से हो जाओगे।" (अल-ज़ुमर: 65)

धर्म के आधार को प्राप्त करने और उसे भक्तों की कथनी और करनी में प्रकट करने हेतु सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आज्ञाकारिता वाले अच्छे कर्मों को विविधता दी है, ताकि हर समय प्रभु की महिमा हो; इसलिए जैसे ही एक मौसम समाप्त होता है उसके बाद तुरंत दूसरा मौसम आ जाता है, जिसमें लोग तौहीद और उसके प्रति समर्पण प्रकट करते हैं। सो पवित्र प्रभु ने एक सबसे लंबी निरंतर शारीरिक इबादत निर्धारित की है, जिसे लोग यह दिखाने के लिए अंजाम देते हैं कि केवल अल्लाह ही इबादत का हकदार है, उसे छोड़ किसी चीज़ की पूजा अमान्य है, और इसलिए भी ताकि उस इबादत के माध्यम से उनके शरीर और पैसे शुद्ध हों और उनके दिल और मुंह पवित्र हों। जो व्यक्ति इस इबादत को उसी पद्धति से अदा करता है जैसा अल्लाह ने आदेश दिया है तो उसके कर्म-पत्र गंदगी और पाप से मुक्त हो जाते हैं। पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "जो इस घर का हज करता है, और उस दौरान कोई अश्लीलता और पाप नहीं करता तो ऐसे लौटता है जैसे उसकी माता ने उसे आज ही जन्म दिया हो।" "जो भी इस घर (काबा) में आया, फिर उसने अश्लील व अनैतिक काम नहीं किया तो वह ऐसे लौटेगा जैसे आज ही उसकी माता ने उसे जन्म दिया हो।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

इबादत के इस कार्य के दौरान एक ऐसे दिन में जब गर्दनों को आग से मुक्त किया जाता है, एक महान स्थान पर हाजियों का सामना अपने प्रभु के उपहारों से होता है, पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "अल्लाह जितने भक्तों को अरफ़ा के दिन जहन्नम से रिहा करता है उतने किसी दिन नहीं करता, वह क़रीब आता है फिर उनको लेकर फरिश्तों के सामने अभिमान व्यक्त करता है

और कहता है: यह लोग क्या चाहते हैं?" (सही मुस्लिम) जो व्यक्ति अपने हज को अल्लाह की मनाही से सुरक्षित रखता है अल्लाह का उससे स्वर्ग का वादा है, पैगंबर ﷺ ने कहा: "शुद्ध हज का स्वर्ग के अलावा कोई इनाम नहीं है।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

हज धर्म के स्तंभों में से एक है, ये लाभों और सीखों से भरपूर है, इसे पवित्र प्रभु ने सबसे शुद्ध और सबसे सम्मानित स्थान पर करने का आदेश दिया है, ताकि कर्म और स्थान का सम्मान एकत्र हो जाए। इब्राहीम (उनपर शांति हो) ने यहाँ अल्लाह का घर बनाया था और धर्मपरायणता और शुद्धता पर उसकी स्थापना की थी, फिर अल्लाह ने इब्राहीम (उनपर शांति हो) के निर्माण को संरक्षित किया ताकि बंदे देख लें की अल्लाह के प्रति शुद्धता से किया गया काम ही शेष रहता है। हाजी केवल अल्लाह के लिए एकता प्रकट करके और उसके सिवा सबकी इबादत को ठुकरा कर अपनी इबादत का आरंभ करते हैं: "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीका लक" (हे अल्लाह मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, तेरा कोई साझी नहीं है।)

इस बात की गवाही कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के दूत हैं, पैगंबर ﷺ की आज्ञाकारिता और उनके पदचिन्हों के अनुसरण के बिना पूरी नहीं होती, काले पत्थर को चूमना आज्ञाकारिता व अनुसरण की ही एक विधि है, उस पत्थर को अल्लाह की उपासना में चूमा जाता है, उससे लाभ प्राप्त करने के लिए नहीं चूमा जाता, वो न लाभ दे सकता है आर न हानि ही पहुँचा सकता है। उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) पत्थर के पास आए और उसे चूमने के बाद कहा: "अल्लाह की कसम मुझे पता है कि तुम केवल एक पत्थर हो, तुम नुकसान या लाभ नहीं दे सकते, अगर मैंने अल्लाह के दूत को तुम्हें चूमते हुए ना देखा होता तो मैं भी तुम्हें नहीं चूमता।" (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

एहराम का वस्त्र धारण करने में मन को सनक की अवज्ञा करने का निमंत्रण है, अत: सिला कपड़ा निषेध है, इत्र का कोई स्पर्श नहीं, नाखून नहीं काटने हैं और मंगनी व विवाह वर्जित है।

काले पत्थर की सियाही भक्तों को निर्जीव वस्तुओं पर भी अवज्ञा के बुरे प्रभाव की याद दिलाता है, हृदय पर पाप का प्रभाव तो और अधिक गंभीर है, पैगंबर ﷺ ने फ़रमाया: "काला पत्थर जब स्वर्ग से उतरा था तो दूध से भी अधिक सफेद था; आदम पुत्रों के पापों ने उसे काला कर दिया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

हाजी; अवज्ञाकारी पर अवज्ञा के प्रभाव को देखता है, क्योंकि इबलीस (शैतान) इब्राहीम (उनपर शांति हो) को अपने बेटे इस्माईल (उनपर शांति हो) की बलि देकर प्रभु की

आज्ञा-पालन से रोकने के लिए तीन बार प्रकट हुआ, इब्राहीम (उनपर शांति हो) ने उसके अपमान में और शत्रुता के प्रदर्शन हेतु उसे पत्थर मारे। फिर इब्राहीम (उनपर शांति हो) के सामने शैतान का दुबारा प्रकट होना अल्लाह की ओर अनुस्मारक है कि शैतान आदम पुत्रों को बार-बार और भिन्न भिन्न स्थानों पर भटकाने का प्रयास करता रहेगा।

हज केवल इस्लाम के सच्चा धर्म होने की घोषणा है, चुनांचे तुम पृथ्वी के भिन्न हिस्सों से आने वाले लोगों के समूह को उनकी जातियों, देशों और वर्गों की असमानता के बावजूद एक साथ, हज के अलावा कहीं नहीं देखोगे, यह इस्लाम की महानता का हिस्सा है।

हज में रुबूबिय्यत (प्रभुसत्ता) के अर्थों में से एक अर्थ सदृश्य होता है, भक्तों के दिलों को अल्लाह अपनी इच्छा अनुसार मोड़ता है, अत: हाजी और अन्य लोग देखते हैं कि मार्गदर्शन अकेले अल्लाह के हाथों में है और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी कृपा प्रदान करता है।

इस स्तंभ की अदाएगी में एक के बाद एक नियमित इबादत है और काम और समय में सटीकता है, अत: कोई इबादत रात में है (जैसे कि मुजदलिफा में रात भर रहना) तो कोई इबादत दिन में है (जैसे अरफा में खड़े होना) कोई जीभ की इबादत है (जैसे तकबीर कहना और तल्बिया पढ़ना) तो कोई अंगों की इबादत है (जैसे कंकर मारना और तवाफ करना)। इस सब में यह संकेत है कि एक मुस्लिम का पूरा जीवन अल्लाह के लिए होता है।

कर्म अंत पर निर्भर होते हैं, इस इबादत के निष्कर्ष का प्रभाव हश्र के मैदान में देखने को मिलेगा; अत: पुनरुत्थान के दिन, दानवीर अपने दान की छाया में रहेगा, फैसले में न्याय करने वाला परम दयालू हस्ती (अल्लाह) के दाएं ओर के मंच पर होगा और जो एहराम की अवस्था में मर जाएगा उसे पुनरुत्थान के दिन तल्बिया पढ़ते हुए उठाया जाएगा।

भक्त; हर दिन भोर के समय को अपनी आयु का अंतिम क्षण समझे, पैगंबर ﷺ के शब्दों के अनुसार: "इस दुनिया में एक अजनबी या मुसाफ़िर की तरह रहो।" (सही बुखारी) जिस किसी ने अपना दिल अल्लाह और आख़िरत के घर से लगा लिया, इस दुनिया से अपनी उम्मीद कम कर ली और परहेज़गारी का पाथेय ले लिया; वह कामयाब और सफल हो गया।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَأَذِّن فِي ٱلنَّاسِ بِٱلۡحَجِّ يَأۡتُوكَ رِجَالٗا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٖ يَأۡتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٖ *

لِّيَشْهَدُواْ مَنَٰفِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُواْ ٱسْمَ ٱللَّهِ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومَٰتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ
بَهِيمَةِ ٱلْأَنْعَٰمِ ۖ فَكُلُواْ مِنْهَا وَأَطْعِمُواْ ٱلْبَآئِسَ ٱلْفَقِيرَ ﴾

और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि "वे प्रत्येक गहरे मार्ग से, पैदल भी और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर भी, तेरे पास आएँ। ताकि वे उन लाभों को देखें जो वहाँ उनके लिए रखे गए हैं, और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में उन चौपाए अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें दिए हैं, फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ।" (अल-हज: 27-28)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा खुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तौफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान कों महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, आप पर, आपके परिवार और आपके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद अधिक से अधिक बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने कुछ स्थानों को सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ विशिष्ट किया, तथा पूरे वर्ष में से कुछ समय को चुना जिसमें अच्छा कर्म शुद्ध होता है और उसका प्रतिफल कई गुना बढ़ा दिया जाता है, तो उसने महीनों में से हज और रमज़ान के महीनों को चुना तथा रातों और दिनों में से रमज़ान की अंतिम दस रातों और ज़ुल-हिज्जा के प्रथम दस दिनों को चुना और ज़ुल-हिज्जा के दस दिन रमज़ान के अंतिम दस दिनों से अधिक उत्तम हैं। पैग़ंबर ﷺ ने फ़रमाया: "ज़ुल-हिज्जा के दस दिनों के कर्म से उत्तम किसी भी अन्य दिन का कर्म नहीं," लोगों ने कहा: जिहाद भी नहीं, आपने फ़रमाया: "हाँ, जिहाद भी नहीं, सिवाय उस व्यक्ति के जो अपने प्राण और धन को जोखिम में डालते हुए (अल्लाह के रास्ते में) निकला, फिर किसी भी चीज़ को लेकर वापस नहीं आया।" (सही बुखारी)

अधिक से अधिक माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना, रिश्तेदारी जोड़ना, दान देना, रोज़ा रखना, ज़िक्र करना, क़ुरआन का पाठ करना, लोगों के संकट दूर करना और अल्लाह की बड़ाई बयान करना; इन दस दिनों के नेक काम हैं। पैगंबर ﷺ के सहाबा (रज़ियल्लाहु अनहुम) बाज़ारों में भी तकबीर कहा करते थे।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

हज के दिन[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

प्रशंसा और सलाम के बाद:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए और उसे मजबूती से थाम लो, जो उसकी आशा की रस्सी को मज़बूती से थाम लेता है अल्लाह उसे क्षमता देता है और उसका मार्गदर्शन करता है और जो उसकी शरण लेता है अल्लाह उसकी रक्षा और बचाव करता है।

हे मुस्लिमो!

सुरक्षा के घेरे में इच्छाएं पूरी होती हैं, शांतिपूर्ण शहर में अच्छे लोगों के मन बुलंद होते हैं और वे दिन और रात की पवित्रता का आनंद लेते हैं। अल्लाह के घर के चारों ओर भयभीत लोग भी सुरक्षित रहते हैं:

﴿وَمَن دَخَلَهُۥ كَانَ ءَامِنًاۗ﴾

और जो भी उसमें प्रवेश करता है वह सुरक्षित हो जाता है। (आल-इमरान: 97)

पवित्र घर की पवित्रता इससे भी अधिक महानता की ओर विस्तृत होती है, यह एक हरम (अभयारण्य) है, जिसमें पक्षियों को मारा नहीं जाता, जानवरों को भगाया नहीं जाता, पौधों को काटा नहीं जाता और गिरी चीज़ को उठाया नहीं जाता, हाँ, एलान करना हो तो

([1]) ये खुतबा मस्जिदे नबवी में जुमे के दिन 09/12/1419 हिजरी को दिया गया।

और बात है।

माननीय घर जो तौहीद पार आधारित सहिष्णु धर्म का सनातन स्मारक और अल्लाह के घर के हाजियों का गंतव्य है, जिसकी बुनियादें इखलास (शुद्धता) पर उठाई गईं , जो भय और धर्मपरायणता पर आधारित है, जो एक पैग़ंबर की हथेली से उठाया गया, और उसमें दूसरे पैग़ंबर की भी भागीदारी रही। वे सबसे सम्मानित घर को बुलंद कर रहे थे, जबकि उन्हें डर भी था कि कहीं उनका काम अस्वीकृत न हो जाए, इसलिए उन्होंने अल्लाह का सहारा लिया:

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلۡ مِنَّآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ﴾

"ऐ हमारे रब! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले, निस्संदेह तू सुनता-जानता है। (अल-बक़रह: 127)

इसके नतीजे में माननीय घर एक विशाल निर्माण और स्थिर खंभों वाली इमारत बन गया, जो अल्लाह की सुरक्षा और हिफाज़त में समय के साथ अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता आया है, जिसके हज के लिए एक के बाद एक; कई पीढ़ियां आती रहीं और मुस्लिम जिसके परिसर में पहुँचने के लिए प्रतिस्पर्धा करते रहे।

उसके आँगन में सुरक्षा और शांति है और उसके आसपास अच्छाई और फल हैं:

﴿أَوَلَمۡ نُمَكِّن لَّهُمۡ حَرَمًا ءَامِنًا يُجۡبَىٰٓ إِلَيۡهِ ثَمَرَٰتُ كُلِّ شَيۡءٖ رِّزۡقًا مِّن لَّدُنَّا
وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُونَ﴾

"क्या हमने उन्हें ख़तरों से सुरक्षित हरम में ठिकाना नहीं दिया, जिसकी ओर हमारी तरफ़ से रोज़ी के रूप में हर चीज़ की पैदावार खिंची चली आती है? किन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं। (अल-क़सस: 57)

घर के पास आत्मा शुद्ध होती है और दिल नर्म पड़ जाता है, यह वह क़िब्ला है जिसकी ओर मुस्लिम मुड़ते हैं और पंक्तियाँ उसके चारों ओर घूमती हैं, उन्हें इसके पास एक झंडा मिल जाता है जिससे वे छाया प्राप्त करते और उसी के अनुसार चलते हैं, यह ईमान का झंडा है जिसके तले नस्ल, रंग, भाषा और इलाके के मतभेद छिप जाते हैं, जहां उन्हें एकता की ताकत और एकजुटता का फल मिलता है। इस विशाल जनसैलाब का आह्वान करने वाले परम दयालू प्रभु के मित्र इब्राहीम (उनपर शांति हो) थे:

﴿وَأَذِّن فِى ٱلنَّاسِ بِٱلْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا﴾

और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो वे इसकी ओर चल कर आएंगे। (अल-हज: 27)

और इस भेंट का उद्देश्य इच्छा और कर्म को अल्लाह के लिए शुद्ध करना है।

हे मुस्लिमो!

हज इस्लाम का सबसे बड़ा जमावड़ा है, जिसमें भीड़ की भीड़ अपने पिता इब्राहीम के बुलावे पर मिलती है। और मुस्लिमों के दिल हमेशा ही पवित्र घर के लिए तड़पते रहेंगे, उसे देखने, उसकी परिक्रमा करने और उसके चारों ओर खुद को समर्पित करने के लिए उनकी उत्सुकता कभी समाप्त नहीं होगी।

उनके दिल पिछली घटनाओं को एकत्रित करते हैं; वह इब्राहीम को याद करते हैं जब वो इस्माईल और उनकी माँ को घर (काबा) के पास विदा कर रहे थे, उनके मामले सृष्टिकर्ता के हवाले कर रहे थे और दुआ एवं भरोसे के साथ प्रभु की ओर ध्यान लगा रहे थे:

﴿رَّبَّنَآ إِنِّىٓ أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِى بِوَادٍ غَيْرِ ذِى زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ ٱلْمُحَرَّمِ﴾

मेरे रब! मैंने एक ऐसी घाटी में जहाँ कृषि-योग्य भूमि नहीं अपनी सन्तान के एक हिस्से को तेरे प्रतिष्ठित घर (काबा) के निकट बसा दिया है। (इब्राहीम:-37)

एक हाजी हाजर को याद करता है जब वह घाटी में सफा-मरवा के बीच दौड़ लगाते हुए अपने और अपने बच्चे के लिए पानी तलाश कर रही थीं, जब वो प्यास के कारण कमज़ोर हो गई थीं, प्रयास करके थक गई थीं और बच्चे के प्रति प्रेम ने उन्हें बोझल कर दिया था, उस कठिन परिस्थिति में: उन्होंने किसी मूर्ति, बुत या पत्थर का सहारा नहीं लिया कि उनका माध्यम अपनाएं, इसके बजाय उन्होंने अकेले व तन्हा अल्लाह का सहारा लिया, तो अचानक शिशु के सामने पानी फूट पड़ा, यह ज़मज़म था; अल्लाह पर निर्भरता का फल, बंजरपन और संकट के रेगिस्तान में दया, अच्छाई और आशीर्वाद का फव्वारा।

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾

जो अल्लाह पर भरोसा करता है अल्लाह उसके लिए पर्याप्त हो जाता है। (अल-तलाक़: 3)

हाजर का प्रयास हमें जीवन की हर दौड़ में (चाहे वह सफा-मरवा के बीच हो, या जीवन के रास्तों और कठिनाइयों के बीच) अल्लाह की दया व कृपा की छाया तले उससे जुड़ने की राह में प्रार्थना और अल्लाह पर निर्भरता के महत्व का आभास कराता है।

फिर हाजी के विचार में एक के बाद एक परिस्थितियाँ और घटनाएँ आती रहती हैं, वह मार्गदर्शन के दूत और दया के पैगंबर (मुहम्मद ﷺ) को याद करता है, कि वह अपने बचपन और युवावस्था में मक्का के मैदानों में रहते हैं, माता-पिता से अनाथ, इस घर के आसपास भेड़ चराते हैं, फिर अचानक एक शाश्वत संदेश की बुलंदी आप के ऊपर अपनी छाया डाल देती है, जिसके कारण आपको बहुत उपहास और गाली मिलती है, फिर आप इस्लाम के लिए ताकत और सुरक्षा की खोज में मदीना चले जाते हैं, फिर आप आप अलविदाई हज में लोगों का नेतृत्व करते हुए मक्का लौटते हैं और आप के प्रतिष्ठित साथी चारों ओर से आपको घेरे में लिए होते हैं और इस प्रकार अल्लाह का अपने पैगंबरों और उनके अनुयायियों से किया गया वचन पूरा होता है:

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَيَوۡمَ يَقُومُ ٱلۡأَشۡهَٰدُ﴾

निश्चय ही हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए अवश्य सहायता करते है, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे। (ग़ाफिर: 51)

हे मुस्लिमो!

हज में, हर मस्ती और लालसा से दिल की शुद्धता और अल्लाह की भक्ति व दासता के लिए आत्म-समर्पण होता है, इसमें पापों से दूरी, उनके प्रभाव से मुक्ति और नर्क से छुटकारा और स्वर्ग की सफलता प्राप्त होती है। इसमें लिंग, भाषा और रंग के मतभेद मिट जाते हैं और धर्मपरायणता का स्थिर तराज़ू स्थापित हो जाता है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقۡنَٰكُم مِّن ذَكَرٖ وَأُنثَىٰ وَجَعَلۡنَٰكُمۡ شُعُوبٗا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓاْۚ
إِنَّ أَكۡرَمَكُمۡ عِندَ ٱللَّهِ أَتۡقَىٰكُمۡۚ﴾

ऐ लोगो! हमनें तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। बेशक अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक धर्मपरायणता रखता है। (अल-हुजुरात: 13)

हज में इबादत और तपस्या, आज्ञाकारिता और विनम्रता, प्रयास और धैर्य, कृतज्ञता

और प्रस्तुति, शांति और श्रद्धा, झुकाव और अपवर्तन है, इसमें इबादत में विविधता और प्रभु निकटता के कामों में अनेकता है। अत: अल्लाह का ज़िक्र हाजी के साथ साथ होता है:

﴿فَإِذَآ أَفَضۡتُم مِّنۡ عَرَفَٰتٖ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ عِندَ ٱلۡمَشۡعَرِ ٱلۡحَرَامِۖ وَٱذۡكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمۡ﴾

फिर जब तुम अरफ़ात से चलो तो `मशअरे हराम` (मुज़दलिफ़ा) के निकट ठहरकर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसाकि उसने तुम्हें बताया है। (अल-बक़रह: 198)

इसमें क्षमा-प्रार्थना है:

﴿ثُمَّ أَفِيضُواْ مِنۡ حَيۡثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ وَٱسۡتَغۡفِرُواْ ٱللَّهَۚ﴾

इसके पश्चात जहाँ से और सब लोग चलें, वहीं से तुम भी चलो, और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। (अल-बक़रह: 199)

जब जब वे कहीं ठहरते, प्रस्थान करते या किसी घाटी में उतरते चढ़ते हैं, अल्लाह का ज़िक्र उनके साथ साथ रहता है और हाजी की प्रतिष्ठा: "लब्बैक ला शरीका लक" (मैं तेरे दरबार में उपस्थित हूँ, तेरा कोई साझी नहीं है) होती है।

अल्लाह के बंदो!

अरफ़ा के प्रकाशमय दिन में, अरफ़ात की भूमि हाजियों की भीड़ की गवाह बनती है, जिसमें आँसू बहाए जाते हैं, ग़लतियों को माफ़ किया जाता है और बुरे कर्मों को मिटाया जाता है, अरफ़ा के दिन सबसे अधिक लोगों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है, जिसमें पापों की क्षमा होती है और वहाँ ठहरे लोगों के प्रति अल्लाह अपने फरिश्तों के सामने गोरवान्वित होता है।

लोगों का वहाँ ठहरना और प्रस्थान करना; एक मोमिन को क़यामत के क्षणों में निर्णायक फैसले के लिए हश्र के मैदान में बंदों के इकठ्ठा होने की याद दिलाता है। काश कि तुम भी उन्हें देखते जब उन्होंने मुजदलिफ़ा में रात बिताई, तो आज्ञाकारिता में रात बिताई, सुबह पवित्र मशअर के पास ज़िक्र द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त की, फिर मिना पहुंचें (इस प्रकार उनकी इच्छा पूरी होती है) जमरात को कंकर मारीं, मुंडन कराया, कुर्बानी की, अल्लाह से मार्गदर्शन और सही दिशा की विनती की, फिर प्रस्थान के तवाफ तथा सफा-मरवा के बीच

सई (दोड़ लगाने) के लिए पवित्र घर का मुख किया और इस प्रकार उन्होंने अपना हज पूरा कर लिया।

धन्य है शुद्ध कर्म! बहुत अच्छा है कृतज्ञ प्रयास! इसी पद्धति पर कर्मियों को कर्म करना चाहिए, अल्लाह की आज्ञाकारिता के परिश्रम में ही प्रतिस्पर्धा कर्ताओं को प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, कितना धन्य है वह जिसने अपने रब की पुकार सुनी और आदरणीय काबा की परिक्रमा की! उसकी सफलता का क्या कहना जिसने अरफ़ात में खड़े होकर तलबिया पुकारा और अल्लाहु अकबर कहा! सो उसके पाप क्षमा हो गए और उसे परम सौभाग्य प्राप्त हुआ!

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ طُوبَىٰ لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَـَٔابٖ﴾

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए सुख-सौभाग्य है और लौटने का अच्छा ठिकाना है। (अल-रअद: 29)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा खुतबा

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए जिसने अपने भक्तों में से जिसे चाहा अपने पवित्र घर के दर्शन के लिए सक्षम बनाया और उन महान अनुष्ठानों के प्रति उत्सुकता पैदा करके उन्हें विशेषता दी, अपार कृपा व अनुकंपा के लिए मैं पवित्र प्रभु की प्रशंसा करता हूँ।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है, जिसका कोई भागीदार नहीं, वह सर्वज्ञ राजा है।

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैगंबर मुहम्मद अल्लाह के भक्त और रसूल हैं, सबसे अच्छे शिक्षक और इमाम हैं, अल्लाह का आशीर्वाद हो उन पर और उनके सम्मानित परिवार और साथियों पर।

हे मुस्लिमो!

हज को निर्धारित करने में इस्लाम का एक उद्देश्य धर्मपरायणता के वचन और सत्य की गवाही की छत्र-छाया में इस्लामी भाईचारे के सिद्धांत को स्थापित करना है।

हज में मुसलमानों का आपसी रिश्ता मज़बूत होता है, इस्लाम की महानता और ईमान की गरिमा को महसूस किया जाता है, इसमें स्पष्ट इस्लामी समानता के अर्थ अपने सबसे स्पष्ट और शानदार रूप में सामने आते हैं तथा प्रेम और सद्भाव प्रबल होता है।

एकता और अंतरंगता तब स्पष्ट रूप से सामने आती है जब सभी मुस्लिम एक ही स्तर पर खड़े हो कर, एक ही समय में, एक ही पोशाक में, एक ही प्रभु से प्रार्थना करते हुए अल्लाह के आगे झुकते और गिड़गिड़ाते हैं, जब लिंग लिंग के बीच कोई अंतर नहीं होता, किसी के साथ भेदभाव नहीं होता, एक को दूसरे पर कोई विशेषता नहीं होती, एक रंग की दूसरे रंग पर कोई वरीयता नहीं होती। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि अल्लाह ने इसी दिन (अलविदाई हज में) इस्लाम धर्म की पूर्णता वाली आयत उतारी थी:

﴿ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ﴾

आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया है। (अल-माइदह: 3)

अल्लाह की किताब और उसके रसूल ﷺ की सुन्नत के मार्गदर्शन पर आधारित एकता का बिंदु; फलस्वरुप नेकी और धर्मपरायणता में आपसी सहयोग को जन्म देता है, और

यह सहयोग मुस्लिमों को शब्द की एकता और सही तरीके से इस्लाम को समझने और उसके अनुसार कर्म करने की ओर ले जाता है।

अल्लाह के बंदो!

किसी मजबूरी के कारण नेक कर्म से पीछे रह जाने वाला कर्मियों का साथी होता है, कभी कभी दिल से चलने वाला शरीर से चलने वालों से आगे बढ़ जाता है, कितनी ही नीयतें कर्म से आगे बढ़ गईं ! जो व्यक्ति अरफ़ा में खड़े होने से रह जाए; उसे अल्लाह के उस अधिकार को पूरा करना चाहिए जो अल्लाह ने उसे बात दिया है, जो मुजदलिफा में रात बिताने में असमर्थ हो वह अल्लाह की आज्ञाकारिता के लिए कमर कस ले, और जान ले कि उसके लिए अरफ़ा के दिन का रोज़ा धार्मिक रूप से निर्धारित किया गया है, पैग़ंबर ﷺ ने कहा: "अरफ़ा के दिन के रोज़े के प्रति मुझे अल्लाह से आशा है कि अल्लाह इसके बदले अगले पिछले वर्ष के पापों को क्षमा कर देगा।" (सही मुस्लिम)

अतः दुआ, तौहीद का मंत्र, तकबीर और अल्लाह की प्रशंसा सहित समस्त प्रकार के ज़िक्र में हाजियों के साथ शामिल हो जाओ, तुम्हारा प्रभु बड़ा उदार है, इबादत का मौसम बीतने से पहले पहले उसका लाभ उठालो; जीवन क़ीमती है, दिन गिने चुने हैं और आयु छोटी है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

विषय सूची

प्रस्तावना ____ 5

शहादतेन ____ 6

तौहीद के मंत्र के गुण() ____ 7

अपने पैग़ंबर को जानें() ____ 25

नमाज़ ____ 36

इस्लाम में नमाज़ की शान() ____ 38

इस्लाम धर्म में नमाज़ का स्थान() ____ 49

समूह के साथ नमाज़ की अनिवार्यता() ____ 63

ज़कात ____ 73

ज़कात() ____ 74

दान पुण्य (सदक़ा) के गुण() ____ 82

दान का महत्व() ____ 90

रमज़ान के रोज़े ____ 99

रमज़ान की तैयारी() ____ 100

रमज़ान का चाँद नज़र आ गया() ____ 106

क़ीमती दिन() ____ 115

रमज़ान के अंतिम दस दिनों के गुण() ____ 124

भाग्य की रात() ____ 132

रमज़ान का प्रस्थान() ____ 139

रमज़ान का समापन() ____ 145

हज ____ 150

हज यात्रा() ____ 151

हज के उद्देश्य() ____ 161

सबसे लंबी शारीरिक इबादत; हज() ____ 170

हज के दिन() ____ 176

विषय सूची ____ 190

मुअस्ससा तलिबिल-इल्म

लिन्नशर वत्तउज़ी

00966506090448

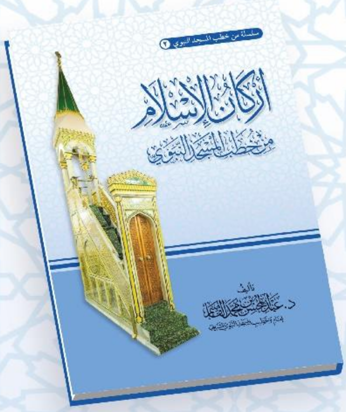

:हमारे कुछ और प्रकाशन

मस्जिद ए नबवी के उपदेशों से

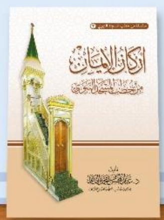

ईमान के स्तम्भ;
मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

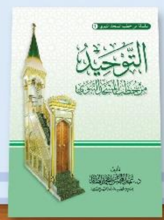

तौह़ीद

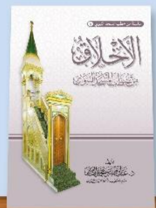

नैतिकता;
मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

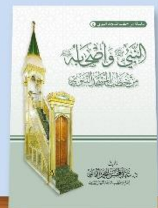

पैग़ंबर मुहम्मद और आपके सहाबा;
मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से